सीकर, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

विज्ञापन के लिऐ : 9314505000

लॉग ऑन करें: www.chamaktarajasthan.com

RNI No. RAJHIN/2011/40950

राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

चमकता राजस्थान

Email- chamaktarajasthan8789@gmail.com

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

डाक पंजीयन संख्या: RJ/JPC/D19/2022-23

जयपुर, शुक्रवार, 5 मई 2023 | वर्ष : 13 | अंक : 250 | पृष्ठ : 8 | दैनिक प्रात: कालीन | मूल्य: 1 रूपया

एनसीपी में खटपट के बीच बोले उद्धव ठाकरे

मैं पीएम मोदी का विरोधी नहीं...

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र की सियासत में बीते कुछ दिनों से काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। हाल ही में एनसीपी अध्यक्ष शरद पवार ने इस्तीफे का एलान किया और अब शिवसेना (यूबीटी) अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने बड़ा बयान दिया है। महाराष्ट्र के पूर्व सीएम उद्धव ठाकरे ने पीएम मोदी को लेकर बड़ा बयान दिया है। उद्धव ने कहा कि मैं पीएम मोदी का विरोधी नहीं हूं, लेकिन तानाशाही का विरोध करता हूं। उन्होंने ये भी स्पष्ट किया कि एनसीपी में जो कुछ भी चल रहा है, उसका असर महाविकास आघाड़ी गठबंधन पर नहीं पड़ेगा। एनसीपी प्रवक्ता महेश तापसे ने कहा कि शरद पवार द्वारा गठित समिति उनसे पार्टी प्रमुख के रूप में अपना इस्तीफा वापस लेने का आग्रह करेगी। तापसे ने संवाददाताओं से कहा कि पार्टी कार्यकर्ता नहीं चाहते कि पवार पद छोड़ें।

सामना के दावों का खंडन

एनसीपी प्रवक्ता ने सामना में छपे संपादकीय के दावों का भी खंडन किया और कहा कि पार्टी एकजुट है। तापसे ने कहा, पूरी एनसीपी एकजुट है। महाविकास आघाड़ी अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों में ज्यादा से ज्यादा सीटें जीतने के लिए भाजपा के खिलाफ उम्मीदवारों को खड़ा करना चाहिए। सामना में लिखा है कि शरद पवार द्वारा इस्तीफे का एलान करते ही कई नेताओं के आंसू छलक पड़े, रोने-धोने लगे। पवार के चरणों पर नतमस्तक हो गए, लेकिन इनमें से कइयों के एक पैर भाजपा में हैं और पार्टी को इस तरह से टूटते देखने की बजाय सम्मान से सेवानिवृत्ति ले ली जाए, ऐसा सेकुलर विचार पवार के मन में आया होगा तो उसमें गलत नहीं है।

दरगाह जियारत को जा रहे थे कार सवार; मरने वालों में मां-बेटे, भाई-बहन शामिल

कार पर पलटा टैंकर, 8 की मौत

चमकता राजस्थान, अजमेर।

जयपुर-अजमेर हाईवे पर टायर फटने से एक टैंकर अल्टो कार पर पलटा गया। हादसा इतना जबरदस्त था कि कार बुरी तरह से पिचक गई। हादसे में 8 लोगों की मौत और 1 गंभीर घायल हो गया। कार सवार लोग अजमेर दरगाह जियारत के लिए जा रहे थे। हादसा दूदू के के रामनगर इलाके में गुरुवार दोपहर करीब 12.30 बजे हुआ। एएसआई राजेंद्र सिंह ने बताया कि कार सभी मृतक फागी के रहने वाले थे। उन्होंने बताया कि टैंकर का टायर फटते ही वह डिवाइड तोड़ते हुए अल्टो पर पलट गया। इसमें सात की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं एक गंभीर घायल ने जयपुर एसएमएस हॉस्पिटल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। इस दौरान टैंकर ने एक मोटर साइकिल सवार युवक को भी चपेट में ले लिया था।

हादसे में इनकी हुई मौत

इस हादसे में फागी के जुम्मा मस्जिद के पास के रहने वाले हनीफ के परिवार के सात सदस्यों की मौत हो गई। मरने वालों में हनीफ की पत्नी हसीना (50), बेटा ईसराइल (30) और मुराद (13), बहू फरजाना (27) पत्नी ईसराइल, पोती रोहीना (8), पोता सेरान (3), दामाद शकील और रिश्ते में रहने वाला सोनू (14) शामिल है। वहीं ईसराइल के बेटे अरमान की हालत गंभीर बनी हुई है।

ड्राइवर फरार, दामाद चला रहा था कार

सामने आया कि टैंकर में सीमेंट भरा हुआ था। हादसा होते ही ड्राइवर मौके से फरार हो गया। कार को हनीफ का दामाद शकील चला रहा था। जिसे जयपुर एसएमएस हॉस्पिटल रेफर किया गया था, जहां उसकी मौत हो गई। वहीं सभी शवों को दूदू के उप जिला अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया गया है। इधर, हादसे की जानकारी मिलने के बाद सीएम के सलाहकार विधायक बाबूलाल नागर दूदू मॉर्च्युरी पहुंचे। उन्होंने बताया कि हादसा काफी दर्दनाक है और मरने वाले लोग गरीब परिवार से हैं।

वे बोले- हम मुख्यमंत्री से बात कर सभी को उचित मुआवजा दिलाने की बात करेंगे। उन्होंने कहा कि जयपुर-अजमेर हाईवे (एनएच-48) पर किशनगढ़ से जयपुर के बीच 35 किलोमीटर के दायरे में करीब 5 पुलिया बनाई जा रही है, निर्माण कार्य होने की वजह से सड़क भी खराब हो रही है और ऐसे में हादसे भी हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने प्रशासन और कंस्ट्रक्शन कंपनियों को निर्देश दिए हैं कि वे जल्दी से एक्शन लें।

नीतीश सरकार को बड़ा झटका, बिहार में जातीय जनगणना पर पटना हाईकोर्ट की रोक

पटना (एजेंसी)। पटना हाई कोर्ट ने गुरुवार को जाति आधारित जनगणना पर अगले आदेश तक के लिए रोक लगा दी है। हाई कोर्ट ने यह फैसला जाति आधारित जनगणना को चुनौती देने वाली लोकहित याचिकाओं पर सुनवाई करने के बाद सुनाया है। अगली सुनवाई 3 जुलाई को होगी। हाई कोर्ट का यह आदेश बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लिए यह बड़ा झटका माना जा रहा है।पटना हाई कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि जाति आधारित जनगणना पर अगले आदेश तक के लिए तत्काल प्रभाव से रोक लगाई जाती है। इसके साथ ही आर्थिक सर्वेक्षण पर भी रोक लगा दी गई है। इतना ही नहीं, कोर्ट ने जाति आधारित जनगणना के तहत अब तक जुटाए गए डेटा को शेयर करने और इस्तेमाल करने पर भी पाबंदी लगा दी है। पटना हाई कोर्ट का यह अंतरिम आदेश है।

जनगणना के लिए अलग से बजट

हाई कोर्ट ने इससे एक दिन पहले ही यानी बुधवार को जाति आधारित जनगणना के खिलाफ दायर सभी याचिकाओं पर सुनवाई पूरी कर फैसला सुरक्षित रख लिया था। बुधवार को सुनवाई के दौरान महाधिवक्ता पीके शाही ने अदालत को बताया था कि दोनों सदन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर जाति आधारित गणना कराने का निर्णय लिया गया था। यह राज्य सरकार का नीतिगत निर्णय है। इसके लिए बजटीय प्रावधान भी किया गया है। इसके लिए आकस्मिक निधि से पैसे की निकासी नहीं की गई है।

केवल चुनिंदा लोग रहे विरोध

महाधिवक्ता पीके शाही ने संविधान के अनुच्छेद 37 का हवाला भी दिया। उन्होंने कहा , राज्य सरकार का यह संवैधानिक दायित्व है कि वह अपने नागरिकों के बारे में डेटा इकट्ठा करे ताकि कल्याणकारी योजनाओं का लाभ विभिन्न वर्गों तक पहुंचाया जा सके। राज्य सरकार ने साफ नीयत से लोगों को उनकी हिस्सेदारी के हिसाब से लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से यह शुरू की। जातीय गणना का पहला चरण समाप्त हो चुका है और दूसरे चरण का 80 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। केवल चुनिंदा लोगों के अलावा किसी ने भी अपनी शिकायत दर्ज नहीं कराई है।

किश्तवाड़ में सेना का हेलीकॉप्टर क्रैश, इमरजेंसी लैंडिंग के दौरान हुआ हादसा; तीन घायल

जम्मू (एजेंसी)।

जम्मू कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के दूरदराज इलाके मड़वा के मचना जंगलों में सेना का हेलीकॉप्टर क्रैश हुआ है, जिसमें दो लोग घायल हुए हैं। जो हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हुआ है वो सेना का ध्रुव हेलीकॉप्टर है। तकनीकी खराबी के चलते इमरजेंसी लैंडिंग के दौरान सेना का ये हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया। जानकारी के मुताबिक, हेलीकॉप्टर के पायलट और को-पायलट ने एयर ट्रैफिक कंट्रोलर (एटीसी) को तकनीकी खराबी की सूचना दी थी और इमरजेंसी लैंडिंग के लिए आगे बढ़ गए। उन्होंने हेलीकॉप्टर को मारुआ नदी

के किनारे पर लैंड कराने की कोशिश की और इसी दौरान ये हादसा हुआ। उबड़-खाबड़ जमीन और बिना तैयारी के लैंडिंग के कारण हेलीकॉप्टर सही सलामत लैंड नहीं हो पाया और ये क्रैश हो गया। इस दौरान हेलीकॉप्टर में पायलट, को-पायलट के साथ-साथ एक टेक्नीशियन मौजूद था।

तत्काल शुरू हुआ रेस्क्यू

सेना के हेलीकॉप्टर के क्रैश होते ही तत्काल प्रभाव से सहायता के लिए लोगों को भेज भी दिया गया। तत्काल बचाव अभियान शुरू किया गया और सेना की बचाव टीमें घटनास्थल पर पहुंच गईं। नदी के किनारे से तत्काल बचाव अभियान चलाया गया।

क्रैश में तीन लोग घायल

भारतीय सेना के हेलीकॉप्टर के क्रैश में तीन लोगों को चोटें आई हैं। विमान में दो पायलट और एक टेक्नीशियन सवार थे। तीनों घायल कर्मियों को उधमपुर के कमांड अस्पताल ले जाया गया है। जहां उनका इलाज जारी है।

गूगल-कंतार रिपोर्ट : स्थानीय भाषा में खबरें पढ़ने वाले यूजर्स, सामान्य डिजिटल पाठकों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंटरनेट की दुनिया में भारतीय भाषाओं का दबदबा तेजी से बढ़ा है, यही वजह है कि अब गूगल भी भारतीय भाषाओं की समझ और उपयोग को अपनी प्राथमिकता बना चुका है। गूगल-कंतार द्वारा जारी रिपोर्ट का प्रमुख पहलु, स्थानीय भाषा में खबरें पढ़ने वाले डिजिटल यूजर्स का सामान्य पाठकों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान होना है। खास बात यह है कि इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले 75 करोड़ से अधिक एक्टिव यूजर्स में भारतीय भाषाओं के यूजर्स की संख्या सर्वाधिक है। भारत की स्थानीय भाषाओं के यूजर्स की संख्या में आए इस उछाल के कारण ऑनलाइन इकोसिस्टम भी इनके प्रति गंभीर हो गया है। रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय भाषाओं के पाठक कंटेंट या खबरों के लिए औसतन 5 से अधिक प्लेटफॉर्म्स का उपयोग कर रहे हैं। इसमें से सर्वाधिक यूजर्स ऑनलाइन न्यूज के लिए यूट्यूब का इस्तेमाल करते हैं, इसके बाद सोशल मीडिया का उपयोग किया जाता है। तीसरे स्थान पर चैटिंग एप्स हैं, जिन पर खबरें पढ़ीं और शेयर की जाती हैं। ऑनलाइन इकोसिस्टम में आए इस बदलाव को न्यूज और मीडिया इंडस्ट्री ने भी महसूस किया है।

यही वजह है कि पिछले कुछ वर्षों में स्थानीय भाषा के डिजिटल समाचार प्रकाशकों की संख्या में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है। इसी को देखते हुए गूगल ने एक अध्ययन के माध्यम से स्थानीय भाषाओं के पाठक के व्यवहार और प्राथमिकताओं को समझने के लिए शोध किया है। खबरों की बात करें तो 45 फीसदी यूजर्स मीडिया हाउस की वेबसाइट्स और मोबाइल एप्स का इस्तेमाल करते हैं। कोर न्यूज सेगमेंट में इंटरटेरमेंट और क्राइम ऐसी प्रमुख कैटेगरी हैं जिनकी खबरें सर्वाधिक पढ़ी जाती हैं। इसके अलावा हेल्थ, टेक्नोलॉजी, फैशन जैसी नॉन न्यूज कैटेगरी के आर्टिकल भी खासे पढ़े जाते हैं।अध्ययन में पता चला है कि पाठकों का रुझान उन खबरों के प्रति ज्यादा होता है जिनकी हेडिंग आकर्षक होती है। ऐसा न्यूज और नॉन न्यूज, दोनों ही कैटेगरी के आर्टिकल में पाया गया।ट्रस्ट (विश्वास), सरल भाषा और विश्वसनीय न्यूज सोर्स वह तीन कारक हैं, जिनको भारतीय न्यूज कंज्यूमर प्रमुखता देते हैं। उत्साहजनक तथ्य यह भी है कि हिंदी और गुजराती में स्थानीय खबरों के पाठकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। आंकड़ों की बात करें तो प्रति 10 ऑनलाइन यूजर्स में से 7 पाठक स्थानीय अथवा अपने शहर की खबरों को प्राथमिकता देते हैं।वहीं भाषायी रुप से कम गुणवत्ता की खबरें, बहुतायत विज्ञापन और खराब-अप्रचलित डिजाइन की वजह से भी वेबसाइट या एप के लिए पाठकों का खबरों के प्रति मोहभंग होता है।

हड़ताल से सरकारी खजाने पर असर

मंत्रालयिक कर्मचारियों के काम नहीं करने से रजिस्ट्री से रेवेन्यू आधा रह गया

चमकता राजस्थान, जयपुर। राजस्थान में चल रही मंत्रालयिक कर्मचारियों की हड़ताल का असर अब सरकार के खजाने पर पड़ने लगा है। कर्मचारियों के काम न करने के कारण पिछले 15 दिन से राज्य में मकान-दुकान समेत दूसरी अचल सम्पत्तियों की रजिस्ट्री कम होने लगी है। अप्रैल में आखिरी 15 दिन की रिपोर्ट देखे तो राज्य में रजिस्ट्रार ऑफिसों में रजिस्ट्री करवाने वालों की संख्या आधी रह गई है। इसके कारण सरकार को रेवेन्यू का नुकसान हो रहा है। राज्य में करीब पिछले 25 दिन से मंत्रालयिक कर्मचारी हड़ताल पर है। इन कर्मचरियों की हड़ताल के कारण रेवेन्यू डिपार्टमेंट में काम-काज ठप्प पड़ा है। हड़ताल का सबसे ज्यादा प्रभाव 21 अप्रैल से दिखने लगा है, जब पूरे प्रदेश में रजिस्ट्री से होने वाली इनकम गिरकर आधी रह गई। 20 अप्रैल तक प्रदेश में हर रोज औसतन 21 करोड़ रुपए का रेवेन्यू सरकार को रजिस्ट्री के जरिए मिल रहा था, लेकिन पिछले 14 दिन में ये रेवेन्यू घटकर 10 करोड़ रुपए से भी कम हो गया।

राजस्थान में लू की जगह चक्रवात 'मोचा' की एंट्री संभव

इस बार 4 गुना ज्यादा बरसात; तीन दिन की बारिश में 2 महीने का कोटा पूरा

चमकता राजस्थान, जयपुर। राजस्थान में इस बार मार्च से अब तक लगातार आ रहे वेस्टर्न डिस्टर्बेंस और दक्षिण राजस्थान में बने दो से ज्यादा साइक्लोनिक सिस्टम के कारण अच्छी बारिश हुई है। मौसम विभाग की रिपोर्ट देखें तो एक मार्च से लेकर 3 मई तक राजस्थान में सामान्य से चार गुना ज्यादा पानी बरस चुका है। इधर, मौसम विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक मई के दूसरे सप्ताह तक लू का असर नहीं रहेगा, लेकिन बंगाल की खाड़ी के दक्षिण-पूर्व में 9 मई तक चक्रवात बनने की संभावना है। मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने कहा कि 9 मई को चक्रवात आने की संभावना है और जल्द ही इसके रूट की भविष्यवाणी की जाएगी। एक्सपर्ट्स के अनुसार पिछले साल आए ताऊते चक्रवात की तरह इस साल आने वाले मोचा का असर राजस्थान के कुछ हिस्सों पर भी हो सकता है। हालांकि, इसको लेकर अभी आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। चक्रवात के उत्तर की ओर बढ़ने की संभावना है। महापात्र ने कहा- 6 मई को बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र बन रहा है। चक्रवात का नाम मोचा होगा। यह नाम यमन ने लाल सागर के एक पोर्ट सिटी के नाम पर रखा है। राजस्थान में बुधवार को सबसे ज्यादा बारिश अलवर में रिकॉर्ड हुई। जिलेभर में हुई तेज बारिश से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

एक सप्ताह से तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से नीचे

बारिश-आंधी और ओलावृष्टि के कारण ही पिछले एक सप्ताह से राजस्थान में टेम्प्रेचर 40 डिग्री सेल्सियस तक नहीं पहुंच पाया। पिछले सप्ताह 27 अप्रैल को चूरू में दिन का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस पर आया था, जिसके बाद से राज्य के किसी भी शहर में पारा 40 पर नहीं आया। कुछ शहरों में तो दो-तीन दिन से दिन का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे चला गया, जो अमूमन सर्दियों के मौसम में रहता है।

तीन दिन की बारिश में 2 महीने का कोटा पूरा

इन 64 दिन के अंदर पूरे राजस्थान में औसत बारिश 10.1एमएम बरसात होती है, लेकिन इतनी बरसात तो एक से 3 मई के दौरान ही हो गई। पूरे 64 दिन की रिपोर्ट देखें तो औसतन 43एमएम पानी गिर चुका है। बारिश-आंधी का ये सिलसिला फिलहाल दो-तीन दिन और बना रहेगा। मौसम केंद्र जयपुर ने 6 मई तक राजस्थान के कई शहरों के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। जिलेवार रिपोर्ट देखें तो राजसमंद, अलवर, नागौर, बूंदी, जयपुर समेत 10 जिलों में औसत बारिश 50एमएमसे ज्यादा हुई। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक राजस्थान में बारिश की सबसे बड़ी वजह इस बार साउथ राजस्थान पर बने दो बड़े सिस्टम रहे हैं। गुजरात, राजस्थान की सीमा पर बने साइक्लोनिक सर्कुलेशन के कारण इन सिस्टम को अरब सागर से अच्छी नमी मिली, इसके कारण दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में बरसात हुई। इसके अलावा उत्तर भारत में आए बैक टू बैक वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के साथ ही पंजाब-पाकिस्तान एरिया में भी साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन

यात्रियों के लिए बड़ी राहत, एयरलाइन को करना होगा किराये का रिफंड

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिवालिया हो चुकी गो फर्स्ट एयरलाइन्स को यात्रियों से वसूल के किए गए किराये का पूरा भुगतान करना होगा। डीजीसीए ने गो फर्स्ट से मिली प्रतिक्रिया की जांच करने के बाद ये आदेश दिया है। डीजीसीए ने एक आदेश में कहा है कि ये फैसला वर्तमान नियमों में दी गई व्यवस्था के तहत किया गया है। डीजीसीए ने विमान कंपनी को निर्देश दिया है कि वह यात्रियों को जल्द से जल्द रिफंड जारी कर दे। आपको बता दें कि कैश की कमी झेल रही इंडियन एयरलाइन गो फर्स्ट एयरवेज ने मंगलवार को नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल में स्वैच्छिक दिवालिया समाधान कार्यवाही के लिए आवेदन किया है। गो फर्स्ट एयरवेज ने मंगलवार को नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) को सूचित किया था कि 3 मई, 4 मई और 5 मई को विमानन कंपनियों की सभी उड़ानें रद्द रहेंगी।

गो फर्स्ट पर टिकट बुक कराने वाले यात्रियों का क्या होगा?

गो फर्स्ट ने कहा है कि भुगतान के ओरिजनल पेमेंट माध्यम से धनवापसी की जाएगी। इसका मतलब यह है कि अगर किसी यात्री ने किसी ट्रैवल एजेंट के माध्यम से टिकट बुक किया है तो राशि वापस ट्रैवल एजेंट को जमा कर दी जाएगी और यात्री को ट्रैवल एजेंट से इसे वापस लेने का दावा करना होगा। गो-फर्स्ट के साथ सीधी बुकिंग के मामले में राशि सीधे यात्री के खाते में जमा की जाएगी।

15 मई तक नहीं होगी बुकिंग

नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) के समक्ष स्वैच्छिक दिवालियापन के लिए आवेदन करने के कुछ दिनों बाद गो फर्स्ट ने नागरिक उड्डयन महानिदेशालय को सूचित किया है कि उसने 15 मई तक टिकटों की बिक्री को निलंबित कर दिया है। एयरलाइन ने कहा है कि उसने 9 मई तक उड़ानें निलंबित कर दी हैं।डीजीसीए ने कहा कि उसने गो फर्स्ट की प्रतिक्रिया की जांच की है और नियमों के तहत एक आदेश जारी किया है, जिसमें उन्हें निर्देश दिया गया है कि वे निर्धारित समयसीमा के अनुसार यात्रियों को रिफंड जारी करें। एनसीएलटी के समक्ष सुनवाई के दौरान, एयरलाइन ने ट्रिब्यूनल से कहा है कि एनसीएलटी याचिका को स्वीकार नहीं करता है तो मोराटोरियम के रूप में एक अंतरिम राहत प्रदान की जाए।

गोवा, मुंबई और बेंगलुरु जाने वाले यात्रियों को हुई परेशानी; 9 मई तक फ्लाइट्स बंद की घोषणा

लोकमत न्यूज, जयपुर। फाइनेंशियल क्राइसेस की वजह देशभर में बंद हुई गो फर्स्ट एयरलाइन्स की फ्लाइट्स का असर जयपुर एयरपोर्ट पर भी देखने को मिला। इस एयरलाइन्स की जयपुर एयरपोर्ट से हर रोज 3 विमान अलग-अलग शहरों के लिए उड़ान भरते है, जो आज भी नहीं गए। जयपुर एयरपोर्ट प्रशासन के मुताबिक कंपनी ने जयपुर एयरपोर्ट से फ्लाइट का संचालन 5 मई तक बंद रखने के लिए लिखित में पत्र दिया है, लेकिन कंपनी ने अपने ऑफिशियल सोशल मीडिया अकाउंट पर अब 9 मई तक सभी उड़ाने रद्द करने की घोषणा की है। कंपनी हर रोज जयपुर से गोवा, मुंबई और बेंगलुरु रूट पर विमान का संचालन करती है। एयरपोर्ट सूत्रों के मुताबिक हर रोज गो एयर से 400 से ज्यादा यात्री इन शहरों के लिए उड़ान भरते है।

रणनीति, आतंकवाद के खिलाफ सहयोग, कारोबार...

एससीओ बैठक में 15 समझौतों पर बनेगी सहमति

बेनोलिम (गोवा) (एजेंसी)। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के विदेश मंत्रियों की शुक्रवार को होने वाली बैठक में 15 महत्वपूर्ण समझौतों पर सहमति बनेगी। बैठक की अध्यक्षता विदेश मंत्री एस जयशंकर करेंगे। ये समझौते रणनीति, आतंकवाद के खिलाफ सहयोग, वाणिज्य व कारोबार, सांस्कृतिक सहयोग जैसे मुद्दों से संबंधित हैं। इन समझौतों को जुलाई, 2023 में एससीओ के प्रमुखों की बैठक में अंतिम रूप दिया जाएगा। एससीओ की स्थापना के बाद पहली बार एक साथ इतने बड़े सहयोग समझौतों को मंजूरी मिलने की संभावना है। साथ ही इस बैठक में चार नये डायलॉग पार्टनर (म्यांमार, यूएई, कुवैत, बहरीन और मालदीव) भी जोड़े जाएंगे जो बताता है कि वर्ष 2002 से चीन की तरफ से पोषित यह संगठन अब धीरे धीरे एक बड़ा वैश्विक मंच बनता जा रहा है।

ईरान और बेलारूस पर होगा विचार

एससीओ बैठक के बारे में जानकारी देते हुए विदेश मंत्रालय में सचिव (इकोनॉमिक रिलेशनशिप) दम्मु रवि ने बताया कि ईरान और बेलारूस को पूर्णकालिक सदस्य के तौर पर शामिल करने को लेकर भी विदेश मंत्रियों की बैठक में विचार होना है। विदेश मंत्रियों की सलाह पर जुलाई में शीर्षस्तरीय बैठक में अंतिम फैसला होगा। इस बैठक में शामिल होने के लिए इन दोनो देशों के राष्ट्र प्रमुखों को भी आमंत्रित किया गया है। एससीओ के पूर्णकालिक सदस्यों की संख्या बढ़ कर 10 हो जाएगी, जबकि चार नये वार्ता साझेदार जोड़े जाने के बाद इन देशों की संख्या बढ़ कर 14 हो जाएगी। बताते चलें कि एससीओ और ब्रिक्स दो ऐसे संगठन है जिसकी पहल चीन की वजह से हुई है और भारत इन दोनों का प्रमुख सदस्य है।

सम्पादकीय

क्वांटम तकनीक से बढ़ेगी भारत की ताकत, डाटा सुरक्षा होगी मजबूत

भारत सहित कई देशों के वैज्ञानिक क्वांटम तकनीक का विकास करने के लिए प्रयासरत हैं। डिजिटल युग में जिसके पास डाटा है, वही शक्तिशाली है। क्वांटम कंप्यूटर डाटा प्रोसेस करने की रफ्तार बहुत अधिक बढ़ा देगा। यह कम जगह में ज्यादा डाटा स्टोर कर सकता है और डाटा प्रोसेस व गणना की तकनीक को अधिक दक्ष बना देगा, जिससे ऊर्जा की खपत भी कम होगी। आज क्वांटम कंप्यूटर को बनाने के लिए अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां और विभिन्न देशों की सरकारें राष्ट्रीय रक्षा बजट का बड़ा हिस्सा इसके ऊपर खर्च कर रही हैं। दो हफ्ते पहले भारत सरकार ने भी नेशनल क्वांटम मिशन को मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही भारत दुनिया का सातवां ऐसा देश बन गया है, जो क्वांटम तकनीक में अनुसंधान और विकास का कार्य कर रहा है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में 19 अप्रैल, 2023 को 6,003.65 करोड़ रुपये की कुल लागत से 2023-24 से 2030-31 तक के लिए राष्ट्रीय क्वांटम मिशन को मंजूरी दी है। केंद्र सरकार के अनुसार, इससे वैज्ञानिक और औद्योगिक शोध एवं विकास कार्यों को मदद पहुंचाई जाएगी। फिलहाल, दुनिया में छह देशों के पास इससे जुड़ी तकनीक है, लेकिन ये सभी देश अनुसंधान एवं विकास चरण में हैं। उनमें से किसी ने भी क्वांटम तकनीक पर कोई अनुप्रयोग शुरू नहीं किया है। ऐसे में अब भारत भी इन देशों की बराबरी करने जा रहा है। क्वांटम तकनीक से जानकारी को तेज व सुरक्षित ढंग से उपयोग में लाया जा सकेगा। क्वांटम टेक्नोलॉजी मिशन का उद्देश्य सुपरकंडक्टिंग और फोटोनिक टेक्नोलॉजी जैसी प्लेटफॉर्म का उपयोग करके आठ वर्षों में 50-1,000 फिजिकल क्यूबिट्स के साथ इंटरमीडिएट-स्केल क्वांटम कंप्यूटर विकसित करना है। यह मिशन 2,000 किलोमीटर तक इंटर-सिटी क्वांटम के वितरण और मल्टी-नोड क्वांटम नेटवर्क स्थापित करने का लक्ष्य रखता है। यह मिशन एटॉमिक सिस्टम में उच्च संवेदनशील मैग्नीटोमीटर और अत्यंत सटीक टाइमिंग, संचार और नेविगेशन के लिए एटॉमिक क्लॉक विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित करेगा। अभी बहुत अधिक आंकड़ों के समूह में से कम समय में कुछ आवश्यक सूचनाएं प्राप्त करना एक बड़ी समस्या है, जिसे पारंपरिक कंप्यूटर की तुलना में क्वांटम कंप्यूटर बहुत ही आसानी से और जल्दी कर सकता है। बैंकिंग तथा सुरक्षा अनुप्रयोगों में उपयोग किए जाने हेतु कई एनक्रिप्शन सिस्टम का उपयोग पारंपरिक कंप्यूटरों में किया जाता है, जो गणितीय समस्याओं को सुलझाने में एक सीमा के बाद असमर्थ हैं। क्वांटम कंप्यूटर इन कमियों को दूर कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, ये वैज्ञानिक अनुसंधानों, खगोलीय अंतरिक्ष मिशनों, डाटा संरक्षण, आदि के लिए उपयोगी हो सकते हैं। क्वांटम तकनीक के विशेषज्ञों के अनुसार, क्वांटम तकनीक सूचनाओं की प्रोसेसिंग में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता रखती है। सभी सूचनाएं बाइनरी सिस्टम में एनकोड (लिखी जाती) होती है। कुछ साल पहले तक क्वांटम कंप्यूटिंग वैज्ञानिकों के लिए भी एक सैद्धांतिक कल्पना जैसी ही थी, लेकिन पिछले दो वर्षों में पूरा परिदृश्य ही बदल गया है। इस दिशा में हो रही प्रगति के रफ्तार का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पूरा क्वांटम कंप्यूटर तो नहीं, पर उसके प्रोसेसर या सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सीपीयू) को बाजार में लॉन्च किया जा चुका है। क्वांटम तकनीक भविष्य में क्रांति ला सकती है। स्वास्थ्य एवं विज्ञान, सुरक्षा, औषधि निर्माण और औद्योगिक निर्माण जैसे क्षेत्रों में हजारों नई संभावनाएं पैदा होंगी। आने वाले दिनों में इस दिशा में तीव्र प्रतिस्पर्धा भी देखने को मिल सकती है। सरकारों की सबसे ज्यादा दिलचस्पी रक्षा क्षेत्र में इनका इस्तेमाल करने में है, जैसे कि बेहद सुरक्षित संवाद स्थापित करना या दुश्मन के विमानों का पता लगाना। लेकिन क्वांटम कंप्यूटर को लेकर बड़ी चिंता इसके एनक्रिप्शन कोड को हल करने को लेकर है।

कहानी

ईमानदारी

अरे धनिया क्या बात है ? तू अबके अपने गांव नहीं गया, जी नहीं बाबूजी अब के नहीं जा पाया। क्यों क्या हुआ ? अरे क्या बताऊं बाबूजी पिछली साल बिटिया की शादी के लिए रुपए लिए थे ना उसके इंतजाम में लगा हूं। इसलिए घर की ओर नहीं गया। धनिया बाबूजी के यहां बागवानी का काम करता था। बाबूजी ठहरे सेठ आदमी दो लड़के दोनों अफसर बन गए। हर महीने बाबूजी कुछ न कुछ काम बंगले में करवाते रहते हैं ।रुपयों की कोई कमी नहीं है बाबूजी के एक फोन करते ही बेटे तुरंत वो काम करते हैं। बाबूजी भी अपनी मूछों पर ताब देते हैं। पर कोई गरीब मदद मांगने आ जाएं तो बाबू जी का चेहरा देखने लायक होता है । धनिया ने भी तो बाबूजी से मदद मांगी थी पर बाबूजी ने जवाब दे दिया था। बाबूजी ने धनिया को बोला पैसे नहीं थे तो इतना सारा तमाशा शादी में करने की क्या जरुरत थी। धनिया कुछ नहीं बाबूजी ज्यादा बडा कार्यक्रम नहीं था। आप साहूकार लोगो के जैसा नहीं, वैसे कुछ रिश्तेदारों सहित कुछ करीबी लोग थे। पर बेटी को खाली हाथ भी विदा नहीं कर सकता था। इसलिए थोड़े पैसे उधार ले लिए थे । अच्छा ठीक है। काम खत्म करके अंदर आना, देखना बरामदे में लगे पौधे सूखते ही जा रहे है । जरा इनको भी देखना, अच्छा आता हूं। बगीचे का काम खत्म होते ही धनिया बरामदे के गमलों से मिट्टी निकालने लगा ।बाबूजी हॉल से बाहर आए । अरे धनिया यह क्या तुमने तो गमलो की मिट्टी ही बाहर निकाल दी। बाबूजी, आपको नहीं पता पौधों के गलन का कारण इनमे कुछ ज्यादा ही खाद और पानी डाल दिया गया है। इसलिए कुछ तो सड़ गल गए है। ठीक है। तुम करो काम ।अच्छा धनिया तुम इतने शांत कैसे रहते हो। तुम्हारे ऊपर तो उधार भी है। कुछ नहीं बाबूजी मैंने उधार का सारा हिसाब लगा लिया है। अब तो ईमानदारी से दुगनी मेहनत करनी है। सुबह आपके यहां काम करता हूं शाम को चौराहे के पास कपड़े स्त्री करने के दुकान खोली है ।सारा हिसाब लगाकर छ: महीने में पूरा उधार वाला रुपया इकट्ठा हो जाएगा। तो हम भी बड़ी शान से अपने गांव जायेंगे। नहीं तो साहूकार बेकार में दरवाजे पर आकर बड़ बड़ाएगा। यही मेहनत करूंगा फिर घर को जाऊंगा। मुस्कराता हुआ अपने काम में लग गया। तभी फोन की घंटी बजी बाबूजी फोन उठा कर हैलो कौन बोल रहा है । पापा जी में निधि बोल रही हूं। राजवीर को घूसखोरी के मामले में पुलिस गिरफ्तार करके ले गई है । निधि रो रही थी और बाबूजी खड़े खड़े ही दीवार के सहारे रह गए।

धनिया ने देखा कि अचानक बाबूजी को क्या ? हो गया है। वह भाग कर हॉल में गया। बाबू जी आपको क्या हुआ, बाबूजी बस इतना ही बोले धनिया मैं अमीर बनने की धुन में यह भूल गया कि अपने बच्चों को ईमानदारी भी सीखानी थी। धनिया बाबूजी की तरफ एक नजर से देखता ही रहा।

डॉ.कांता मीना
शिक्षाविद् एवं साहित्यकार

एशिया का प्रकाश कहलाते हैं गौतम बुद्ध !

वैशाख पूर्णिमा इस बार 5 मई 2023 को है, इस दिन बौद्ध धर्म के संस्थापक भगवान गौतम बुद्ध का जन्मोत्सव मनाया जाता है, इसे बुद्ध पूर्णिमा और बुद्ध जयंती के नाम से भी जाना जाता है। जानकारी देना चाहूंगा कि गौतम बुद्ध को एशिया का प्रकाश (लाइट ऑफ एशिया) कहा गया है। उनका जन्म नेपाल के कपिलवस्तु के लुम्बिनी वन में वैशाख पूर्णिमा के दिन 563 ई.पूर्व हुआ था। उनके जन्मदिन को आज बुद्ध पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। उनके पिता शाक्यवंश के राजा शुद्धोधन थे और माता का नाम महामाया था। उनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। उनका पालन-पोषण एक राजकुमार के रूप में हुआ।आज के सन्दर्भ में कहें तो गौतम बुद्ध का जन्म भले ही नेपाल में हुआ हो पर उनकी कर्मभूमि भारत रही। यहीं उन्हें बोधित्व की प्राप्ति हुई और यहीं से उन्होंने पूरे विश्व को सन्देश दिया। आज भी जापान, उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, चीन, वियतनाम, ताइवान, तिब्बत, भूटान, कम्बोडिया, हांगकांग, मंगोलिया, थाईलैंड, मकाऊ, वर्मा, लागोस और श्रीलंका की गिनती बुद्धिस्ट देशों में होती है। महात्मा गौतम बुद्ध ने अपने जीवन में हमेशा लोगों को अहिंसा, शांति और करुणा, मैत्री,बंधुत्व की शिक्षा दी थी।बुद्ध के अनुसार, इंसान जैसा सोचता है, उसकी सोच जैसी होती है वह वैसा ही बन जाता है।वहीं यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों(सद्विचारों) के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे जीवन में खुशियां ही मिलती हैं। कष्ट उसके सामने कभी भी आ ही नहीं सकते हैं। खुशियां उसकी परछाई की तरह उसका साथ कभी नहीं छोड़ती है। बुरी सोच कष्ट ही लाती है। गौतम बुद्ध के अनमोल विचार हम सभी को जीवन में हमेशा सफल बनने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।गौतम बुद्ध सत्य के पक्षधर थे और उनका यह मानना था कि जीवन में तीन चीजें कभी भी छुपाकर नहीं रखा जा सकता है। वो है- सूर्य, चंद्रमा और सत्य।

गौतम बुद्ध का मानना था कि जिस तरह से एक जलता हुआ दिया हजारों लोगों को रौशनी देता है, ठीक वैसे ही खुशियां बांटने से आपस में प्यार बढ़ता है। वास्तव में, एक दीपक से हजारों दीपक जल सकते हैं, फिर भी दीपक की रोशनी कभी भी कम नहीं होती। इस तरह किसी की बुराई से मनुष्य की अच्छाई कम नहीं हो सकती है।बुद्ध के अनुसार, खुशियां बांटने से हमेशा बढ़ती हैं, बांटने से खुशियां कभी भी कम नहीं होती हैं। इसलिए मनुष्य को हमेशा जीवन में खुश रहना चाहिए और दूसरों को भी सदैव खुशियां देने का प्रयास करना चाहिए। उनका मानना था कि व्यक्ति को अपने वर्तमान में जीना चाहिए, भूतकाल और भविष्य के समय को याद करके दुखी होने का कोई अर्थ या मतलब नहीं है। आदमी अपने वर्तमान में ही खुश रह सकता है। बुराई से कभी भी बुराई को खत्म नहीं किया जा सकता है, प्रेम से दुनिया की हरेक चीज को जीता जा सकता है। उनका यह मानना था कि यदि व्यक्ति ने स्वयं पर विजय प्राप्त कर ली तो दुनिया की हरेक चीज पर विजय प्राप्त कर ली। क्रोध मनुष्य का दुश्मन है। मनुष्य को कभी भी क्रोध की सजा नहीं मिलती बल्कि क्रोध से सजा मिलती है। उनका मानना था कि-%जीवन में आप चाहें जितनी अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ लो, कितने भी अच्छे शब्द सुनो, लेकिन जब तक आप उनको अपने जीवन में नहीं अपनाते तब तक उसका कोई फायदा नहीं होगा।% वास्तव में, आज विश्व को शांति, करूणा और सहिष्णुता के मार्ग पर चलने की जरूरत है। आज रूस-यूक्रेन में आपस में काफी समय से युद्ध चल रहा है। श्रीलंका में गृह युद्ध चल रहा है। भारत हो या कोई भी देश सांप्रदायिक, जातीय टकराव किसी भी हाल में ठीक नहीं कहा जा सकता है। याद रखें हिंसा किसी भी समस्या का स्थाई समाधान नहीं है। जानकारी देना चाहूंगा कि गौतम बुद्ध ने युद्ध का हर संभव विरोध किया है। उन्होंने बार-बार कहा कि युद्ध किसी भी समस्या का हल नहीं होता। क्योंकि हर युद्ध में जन-धन की अपार हानि होती है। कोई भी युद्ध उचित या न्याय के लिए नहीं कहा जा सकता क्योंकि हर युद्ध के अपने पीछे बर्बादी और तबाही ही छोड़कर जाता है।हिंसा हमेशा क्षरण ही करती है। विश्व में जहाँ देखो वहाँ अशांति है, आतंकवाद है, नक्सलवाद है, अनैतिकता की भावना है,ऐसे में भगवान गौतम का जीवन दर्शन हमें आध्यात्मिकता के मार्ग पर प्रशस्त कर हमें समाधान का मार्ग सुझा सकता है। अहिंसा, प्रेम,भाईचारा(बंधुत्व की भावना), धैर्य, संतोष ही मानव जीवन के असली सूत्र है, जिनके सहारे मानव हमेशा आगे बढ़ सकता है, उन्नति के मार्ग पर स्वयं को और दूसरों को प्रशस्त कर सकता है। वास्तव में गौतम बुद्ध का पंचशील सिद्धांत मनुष्य के जीवन को सार्थक बना सकता है। जानकारी देना चाहूंगा कि गौतम बुद्ध के पंचशील सिद्धांतों में क्रमश: चोरी न करना, व्यभिचार न करना, झूठ न बोलना, नशा न करना आदि शामिल है। कहना गलत नहीं होगा कि बुद्ध के संदेश आज के जीवन में भी उतने ही प्रासांगिक हैं, जितने कि पहले थे और इन्हें अपनाकर जीवन में बहुत कुछ सीखा जा सकता है। बुद्ध ने मानवता की मदद, समानता का संदेश इस देश-दुनिया को दिया था। आत्मबल हमें शांति की राह दिखाता है। सच तो यह है कि बुद्ध की शिक्षाएं हमारी आत्मिक उन्नति करती हैं। वास्तव में, वह मानव को मानवता का संदेश देते हैं। उनका धर्म विज्ञान पर आधारित है तथा वैज्ञानिक सोच पैदा करता है। यह अंधविश्वास के विरुद्ध है। गौतम बुद्ध ने समाज को अंधविश्वास से हमेशा दूर करने का संदेश दिया था। आज समाज को उनके आदर्शों पर चलने की जरूरत अत्यंत महत्ती है।अगर दुनिया भगवान बुद्ध के आदर्शों, सिद्धांतों पर चले तो किसी भी समाज में भेदभाव, ऊंच- नीच की भावना, द्वेष, ईर्ष्या नहीं रहेगी। समाज में दंगा फसाद नहीं होंगे। हजारों साल पहले भगवान बुद्ध ने मानवजाति को अहिंसा का पाठ पढ़ाया था। आज आदमी, आदमी से लड़ रहा है। मनुष्य बारूद के ढ़ेर पर, हथियारों के ढ़ेर पर खड़ा है लेकिन आज मनुष्य को हथियारों की आवश्यकता नहीं है, आज मनुष्य को जरूरत है तो प्यार की, प्रेम की, अपनत्व, मानवता की भावना की। इस दुनिया को हथियार नहीं, हथियारों के स्थान पर प्रेम ही प्रेम चाहिए, नफरत की भावना नहीं, प्यार की भावना चाहिए। युद्ध की नहीं आज संसार को बुद्ध की आवश्यकता है। गौतम बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग यानी माध्यम मार्ग दिए। ये हर दृष्टि से जीवन को शांतिपूर्ण और आनंदमय बनाते हैं। ये क्रमश: हैं- सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि। उन्होंने बताया था कि मानव जीवन की मूल समस्या है राग, द्वेष, मोह, घृणा, लालच और भय के विकारों से कैसे छुटकारा पाया जाए। यही विकार आपसी लड़ाई, एक दूसरे के साथ युद्ध, आर्थिक विषमता, शोषण, अत्याचार, अन्याय, भेदभाव, हिंसा व आतंकवाद को जन्म देते हैं। आज पूरी दुनिया में हिंसा, डर, आतंक व भ्रष्टाचार का माहौल है, जीवन में हर तरफ तनाव और अवसाद है, समस्याएं हैं, समाज में व देशों के बीच लगातार तनाव, आपसी कटुता, वैमनस्यता की भावना बढ़ रही है, मानव जाति विनाश के कगार पर(बारूद के ढ़ेर पर) खड़ी है। समाज में आर्थिक विषमता दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। आज हमारे समाज में धर्म के नाम पर घोर अन्धविश्वास, धार्मिक कट्टरता, कर्मकांड व आडम्बर/आपसी दिखावे का बोलबाला लगातार बढ़ता चला जा रहा है, संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, एकल परिवार जन्म ले रहे हैं। गरीबों, शोषितों व वंचितों के प्रति उपेक्षा लगातार बढ़ रही है। ऐसे समय में भगवान् बुद्ध की शिक्षाएं पहले से और ज्यादा प्रासंगिक हो गई हैं। बुद्ध ने महिला सशक्तिकरण में भी अहम् योगदान दिया था। वे सामाजिक समानता के घोर समर्थक थे।बुद्ध ने कहा है कि मेरे शब्दों को प्रमाण न मानो। तुम्हारी बुद्धि अथवा अनुभव से जो बात जंचती हो उसे ही सत्य मानो। इस विश्व में अंतिम और अपरिवर्तनीय कुछ भी नहीं है। परिवर्तन और सतत परिवर्तन ही सत्य है। अंत में, यही कहना चाहूंगा कि बुद्ध ने संपूर्ण विश्व में शांति, सद्भावना, भाईचारा का संदेश दिया। सभी जीवों से प्रेम करने और दीनदुखियों की मदद करने के लिए प्रेरित किया। आज के समय में यदि विश्व में शांति, बंधुत्व की स्थापना करनी है तो हमें भगवान बुद्ध के विचारों को अपने जीवन में उतारना होगा, उनके बताए हुए मार्ग का अनुशरण करना होगा। बुद्ध का संदेश है कि घृणा(बुराई) को घृणा से नहीं जीता जा सकता। घृणा को प्रेम से जीता जा सकता है। बुद्ध का धम्म तर्क संगत है। बुद्ध मार्ग दाता हैं, मोक्ष दाता नहीं। बुराइयों को दूर करने के लिए अपने मन में अच्छाइयों का विकास करना आवश्यक है।आज दुनिया जिस युद्ध और अशांति, तनाव, अवसाद से पीड़ित है, उसका समाधान कहीं न कहीं बुद्ध के उपदेशों में है। हमें विश्व को सुखी बनाना है, तो हमें अपने स्व से निकलकर संसार, संकुचित सोच को त्यागकर, समग्रता पर जोर देना होगा, यह बुद्ध मंत्र ही एकमात्र रास्ता है। गौतम बुद्ध के उपदेश,संदेश और विचार मनुष्यों को नैतिक मूल?यों और संतोष पर आधारित सादा जीवन,उच्च विचार जीवन जीने की दिशा में प्रयास करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका मानना था कि स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है, वफ़ादारी सबसे बड़ा संबंध है। उन्होंने कहा था कि-%क्रोध में हजारों शब्दों को गलत बोलने से अच्छा, मौन वह एक शब्द है जो जीवन में शांति लाता है। (आर्टिकल का उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं है।)

सुनील कुमार महला,
स्वतंत्र लेखक व युवा साहित्यकार

पत्रकार

कांग्रेस शासन में विधायकों को तो खूब मिला...पत्रकारों को कुछ इंतजार अब भी

बृहस्पति शर्मा

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को पत्रकारों का करीबी माना जाता है। वहीं वे अपने जनप्रतिनिधियों के लिए भी कभी कमी नहीं छोड़ते। यही कारण है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पत्रकारों और विधायकों के लिए अपने खजाने खोल दिए। विधायकों और पूर्व विधायकों को गहलोत ने खूब सौगातें दी हैं। पत्रकारों के लिए भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जो किया है वह राजस्थान के इतिहास में किसी मुख्यमंत्री ने नहीं किया। हालांकि अब भी राजधानी जयपुर के पत्रकारों को अपने आवास का सपना पूरा करना है और पत्रकार आवास योजना यहां अटकी हुई है। ये ध्यान रहे कि लगभग पूरे राजस्थान में पत्रकारों को आवास मिल गए हैं लेकिन राजधानी जयपुर के करीब 571 चयनित पत्रकार आज भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की हरी झण्डी का इंतजार कर रहे हैं। पत्रकारों को संबंल देने का मुख्यमंत्री का कार्य पहले कार्यकाल से लेकर तीसरे कार्यकाल तक अनवरत जारी है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पत्रकारों के संसाधन और उनकी वित्तीय स्थिति से भलीभांति परिचित है। पत्रकारों को संबंल देने का उन्होंने जो बीड़ा अपने पहले कार्यकाल में उठाया था आज तीसरे कार्यकाल में भी वह बदस्तूर जारी है। प्रदेश के अधिस्वीकृत पत्रकारों के बच्चों को प्री-मैट्रिक एवं पोस्ट-मैट्रिक स्कॉलरशिप देने की मुख्यमंत्री की बजट घोषणा को अमली जामा पहना दिया गया है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इस संबंध में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा तैयार अधिसूचना को मंजूरी प्रदान की है। वहीं काफी लम्बी समय से लम्बित चल रही पत्रकार आवास योजना पर भी युद्धस्तर पर काम शुरू हो गया है। अब तक तीन बैठकें हो चुकी हैं। पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप योजना के तहत उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत अधिस्वीकृत पत्रकारों के बच्चों को स्कॉलरशिप दी जाएगी। इसमें हॉस्टलर्स को 4,000 से 13,500 रुपए तक तथा डे स्कॉलर्स को 2,500 से 7,000 रुपए तक का प्रावधान है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के प्रोफेशनल डिग्री कोर्सेज के लिए हॉस्टलर्स को 13,500 रुपए व डे स्कॉलर्स को 7,000 रुपए की स्कॉलरशिप दी जाएगी। विभिन्न प्रोफेशनल कोर्सेज जिनमें डिग्री व डिप्लोमा सर्टिफिकेट मिलता हो, में अध्ययनरत हॉस्टलर्स को 9,500 रुपए व डे स्कॉलर्स को 6,500 रुपए की स्कॉलरशिप मिलेगी। वहीं, 10वीं कक्षा के बाद किए जाने वाले विभिन्न नॉन डिग्री कोर्सेज के लिए हॉस्टलर्स को 4,000 रुपए व डे स्कॉलर्स को 2,500 रुपए की वार्षिक छात्रवृत्ति तथा अन्य स्नातक व स्नातकोत्तर कोर्सेज कर रहे हॉस्टलर्स के लिए 6,000 रुपए व डे स्कॉलर्स के लिए 3,000 रुपए की स्कॉलरशिप का प्रावधान किया गया है। प्री-मैट्रिक स्कॉलरशिप के अंर्तगत अधिस्वीकृत पत्रकारों के कक्षा 6 से 10वीं में अध्ययनरत बच्चों को स्कॉलरशिप मिलेगी। इसमें एक वर्ष में अधिकतम 10 माह लगभग 1000 रुपए (100 रुपए प्रतिमाह) की प्री-मैट्रिक स्कॉलरशिप दी जाएगी।

पहले कार्यकाल में पत्रकारों की कॉलोनी बसाई और इस बार आशा कम- मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अपने पहले कार्यकाल में धौलाई में पत्रकार कॉलोनी बसाई थी। अपने दूसरे कार्यकाल में उन्होंने दूसरी योजना बनाई जो नायला में बनी लेकिन किन्हीं कारणों से वह अटक गई। मुख्यमंत्री ने अपने पहले ही बजट में पूर्व की तरह वंचित पत्रकारों आवास सुविधा उपलब्ध कराने की घोषणा की थी। राज्य सरकार ने इसके लिए बनाई कमेटी की बैठकें भी कर ली है। लेकिन अब तक भी परिणाम सामने नहीं आए हैं।

पत्रकार सुरक्षा कानून = पत्रकार सुरक्षा कानून के लिए विभिन्न राज्यों में प्रचलित प्रावधानों का अध्ययन किया जा रहा है। जल्दी ही पत्रकारों पर हमला करने वाले तत्वों को नियंत्रित करने के लिए पत्रकार सुरक्षा कानून को अमली जामा पहना दिया जाएगा।

विधायकों और पूर्व विधायकों को भी खूब दिया

राजस्थान में विधायकों और पूर्व विधायकों के लिए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भरमार घोषणाएं और उन घोषणाओं का त्वरित क्रियान्वयन किया है। राजस्थान के पूर्व विधायक भी अब सरकारी खर्चे पर विदेश यात्रा कर सकेंगे। राजस्थान विधानसभा में राजस्थान विधानसभा अधिकारी व सदस्य परिलब्धियां विधेयक 2022 पारित कर दिया गया। इस दौरान निर्दलीय विधायक संयम लोढ़ा ने विदेश यात्रा की छूट 1 लाख रुपये से बढ़ाकर डेढ़ लाख रुपये करने की मांग की। विधानसभा में इस विधेयक पर चर्चा में भाजपा विधायक मदन दिलावर और निर्दलीय विधायक संयम लोढ़ा शामिल हुए और उन्होंने कुछ अहम सुझाव भी दिए। सदन में इस विधेयक पर चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री के सलाहकार और निर्दलीय विधायक संयम लोढ़ा ने कहा कि देश में महंगाई लगातार बढ़ रही है। चाहे रेलवे के टिकट हो या हवाई यात्रा का किराया, सब काफी महंगा हो चुका है। लोढ़ा ने कहा कि सभापति महोदय आपको यदि कृपा करनी है तो पूरी तरह करे। विदेश यात्रा पर जाने वाले सरकारी खर्चे के लिमिट बढ़ाकर डेढ़ लाख कर देनी चाहिए। राजस्थान विधानसभा (अधिकारियों, सदस्यों की परिलब्धियां और पेंशन) अधिनियम,1956 की धारा 4-घ में एक नई उपधारा 2 जोड़ने के लिए बिल सदन में रखा। राजस्थान के कांग्रेस एवं बीजेपी समेत अन्य दलों के पूर्व विधायक संघ लंबे समय से इसकी मांग कर रहे थे। पूर्व विधायक संघ की मांग के बाद गहलोत सरकार अब बिल लेकर आई है। विधायकों की तर्ज पर पूर्व विधायकों को भी अब सरकारी खर्चे पर विदेश यात्रा की सुविधा मिल सकेगी।

आपको बता दें 17 सितंबर को संबंधित संशोधन का कैबिनेट ने सकुर्लेशन के जरिए अनुमोदन कर दिया था। अब विधानसभा की कार्यवाही में संशोधन अनुमोदन हो गया है। हालांकि, सरकार ने इसके लिए शर्त भी लगाई है। विदेश यात्रा के लिए विधानसभा अध्यक्ष से अनुमोदन होना जरूरी है। स्पीकर की अनुमति के बिना सरकार पूर्व विधायकों की यात्रा का खर्च नहीं उठाएगी। आज 15वीं राजस्थान विधान सभा के सप्तम सत्र की बैठक शुरू होते ही सरकार ने बिल सदन के पटल पर रखा था।

राजस्थान के विधायक वेतन के मामले में आगे

आपको बता दें विधायकों को वेतन भत्ते दिए जाने के मामले में राजस्थान कई राज्यों से आगे हैं। हरियाणा, गोवा, पंजाब, झारखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, सिक्किम, केरल, गुजरात, उड़िया, मेघालय जैसे राज्यों के मुकाबले राजस्थान के विधायकों को ज्यादा वेतन-भत्ते मिलते हैं। वहीं तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र जैसे राज्यों में विधायकों के वेतन-भत्ते राजस्थान से ज्यादा है। 2019 में विधायकों की सैलरी 25000 रुपए हुआ करती थी जिसे बढ़ाया गया और अब राजस्थान के विधायकों को 40000 सैलरी सहित 142000 प्रति महीना दिया जाता है।

विधायक को क्या-क्या सुविधाएं मिलती है

मुख्य रूप से सदस्यों को जो सुविधाएं प्रदान की गई है वो वेतन और भत्ते, यात्रा, चिकित्सा, आवास, टेलीफोन संबंधी हैं। ये सुविधाएं राजस्थान विधानसभा (अधिकारियों तथा सदस्यों की परिलब्धियां एवं पेन्शन) अधिनियम, 1956 और इसके अध्यधीन विरचित नियमों के अंतर्गत आती हैं। प्रत्येक सदस्य 40,000/- रुपए प्रतिमाह की दर से वेतन मिलता हैं। प्रत्येक सदस्य को 70,000/- रुपये प्रतिमाह की दर से निर्वाचन क्षेत्र भत्ता पाने का मिलता है। 30,000/- रुपये प्रतिमाह गृह किराया भत्ता प्राप्त करने के हकदार हैं। प्रत्येक सदस्य को 2,500/- रुपये प्रतिमाह टेलिफोन भत्ता संदत्त किया जाएगा। प्रत्येक सदस्य अपनी पदावधि के दौरान जिस स्थान पर विधानसभा का सत्र अथवा उसकी किसी समिति की बैठक हो रही हो, वहां उपस्थित रहने की अवधि के दौरान राज्य के भीतर 2000/- रुपये प्रतिदिन की दर से तथा राज्य के बाहर 2500/- रुपये प्रतिदिन की दर से दैनिक भत्ता प्राप्त करने का हकदार है।

यात्रा सुविधाएं

सदस्य और उस सदस्य के साथ अन्य व्यक्ति, यदि कोई हो, सहित रेल, वायुयान, पोत या स्टीमर में किसी भी श्रेणी में भारत के राज्यक्षेत्र के भीतर किसी वित्तीय वर्ष में 3.0 लाख रुपये की सीमा तक किराये का पुनर्भरण प्राप्त कर सकेगा। यदि किसी वित्तीय वर्ष में प्राप्त पुनर्भरण की रकम 3.0 लाख रुपये से कम है तो शेष रकम आगामी वित्तीय वर्ष या वर्षों में अग्रनीत की जायेगी। वह सदस्य अपनी पदावधि की समाप्ति से पूर्व किसी भी समय ऐसी रकम का उपयोग कर सकेगा। सदस्य द्वारा निजी वाहन से यात्रा करने पर रुपए 10.00 प्रति कि.मी. की दर से राशि देय होगी। प्रत्येक सदस्य को एक पास दिया जाता है जिससे वह और उसके साथ जाने वाला अन्य व्यक्ति राजस्थान राज्य पथ जयपुर में सरकारी आवास अथवा निजी/किराये के आवासों में रहने वाले सदस्य निःशुल्क 80,000/- रुपये मूल्य तक का फर्नीचर का स्वप्रमाणित बीजक प्रस्तुत कर पुनर्भरण की सुविधा। जयपुर में सदस्यों की आवासीय कॉलोनी स्थित स्वागत कक्षों में (कॉमन) टेलीफोन लगाये गये हैं, जहां से माननीय प्रत्येक सदस्य को राज्य सरकार के राजस्व विभाग द्वारा सचिवालयिक सहायक के रूप में वेतन श्रृंखला 1 से 9 तक का एक कार्मिक उपलब्ध करवाया जायेगा या विकल्प के रूप में सचिवालयिक सहायक के बदले सदस्य 30,000/- रुपये प्रति माह प्राप्त कर सकेंगे। सदस्यों को उनके निर्वाचन क्षेत्र में भ्रमण हेतु जिला पूल से एक माह में अधिकतम पन्द्रह दिवस के लिए वाहन उपलब्ध करवाया जाता है या वाहन नहीं लेने पर अधिकतम 45,000/- रुपये प्रति माह जिला कलेक्टर कार्यालय से प्राप्त कर सकेंगे। प्रत्येक सदस्य अपने विधानसभा क्षेत्र में एक वर्ष में रुपये 2,25,00,000/- (रुपये दो करोड़ पच्चीस लाख) तक के जनोपयोगी परिसम्पत्तियों के निर्माण कार्य का प्रस्ताव जिला ग्रामीण विकास अभिकरण में प्रेषित कर सकता है, जो अभिकरण की स्थापित प्रक्रियानुसार कार्यान्वित किये जाते हैं। कोरोना काल में इसको बढ़कर 5 करोड़ कर दिया गया है।

जयपुर में विधायकों के लिए बन रही आवास योजना

राजधानी जयपुर में विधायकों के लिए ज्योतिनगर में आलिशान फ्लैट बनाए जा रहे हैं। ये काम शीघ्र ही पूर्ण होने जा रहा है। अशोक गहलोत सरकार का प्रयास है कि वह आने वाले वर्ष 2023 में सभी विधायकों को नए आवास आवंटित कर दें।

भारतीय बाघ के संरक्षण के लिए 1973 में एक महत्वपूर्ण परियोजना चलाई गई, जिसका नाम प्रोजेक्ट टाइगर है

प्रोजेक्ट टाइगर के 50 वर्षः जश्न में भी बनाए रखें होश

भारतीय राष्ट्रीय जीव, 'बाघ', वन्यजीव भर नहीं है, यह जिंदगी की बुनियाद, उसके आधार जल, वायु समेत समस्त जलवायु का संरक्षक भी है। एक बड़े जंगली पर्यावास की खाद्य श्रृंखला के शीर्ष पर बैठकर बाघ क्रियाशील परिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करता है, आखिर में जो हम सबको जीवनदायी जल एवं वायु प्रदान करने में मददगार होता है। भारतीय बाघ के संरक्षण के लिए 1973 में एक महत्वपूर्ण परियोजना चलाई गई, जिसका नाम प्रोजेक्ट टाइगर है। अब इसके 50 साल पूरे हो रहे हैं। इन पांच दशकों में प्रोजेक्ट टाइगर ने कई तरह के उतार-चढ़ाव देखे हैं। बाघ पाए जाने वाले 20 राज्यों में इसकी मौजूदगी कमोवेश सफलता रूपी संतोष तो देता है। फिर भी, अभी बहुत सारे कारगर उपायों पर विचार करना आवश्यक है। भारत पर ज्यादा जिम्मेदारी इसलिए भी है कि पूरी दुनिया में बाघों को बचाने के प्रयास में भारत शीर्ष पर है। विश्व भर के बाघों की 70त्न आबादी भारत में है। तभी दुनिया भारत की तरफ उम्मीद की नजरों से देख रही है। प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत 1973 में तब हुई, जब 1969 में आईयूसीएन, प्रकृति संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ की बैठक में बाघों की संख्या पर चर्चा हुई। इसमें बताया गया कि भारतीय बाघों की बहुत बड़ी संख्या की जो चर्चा की जाती है, दरअसल वह उतनी है नहीं। तकरीबन 2000 ही जंगल में विचरित कर रहे हैं । इसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री ने विशेषज्ञों की राय पर वन्यजीव अधिनियम 1972 पारित कर बाघों के शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया। पुन: 1 अप्रैल 1973 को प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत की एवं कैलाश सांखला इसके संस्थापक निदेशक बने। इसके अंतर्गत कॉर्बेट टाइगर रिजर्व प्रथम राष्ट्रीय उद्यान की तरह सम्मिलित हुआ । 2006 में फिर से कुछ ऐसी स्थिति बनी कि बाघों की संख्या प्रोजेक्ट टाइगर के प्रारंभिक दिनों की संख्या के करीब पहुंच गई। हुआ यह कि उस वक्त मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर रिजर्व एवं राजस्थान के सरिस्का से बाघों का समूल अंत हो गया। बाघ संरक्षण की इतिहास में पहली बार देश की सर्वोच्च जांच एजेंसी ने

वैज्ञानिकों की देखरेख में दोनों टाइगर रिजर्व में जांच की। बाद में, 2018 तक संख्या में सुधार हुआ और आंकड़ा बढ़कर 2,967 हुई। इस वक्त वर्तमान में 54 टाइगर रिजर्व है। यह तकरीबन 75,000 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है. प्रोजेक्ट टाइगर के 50 साल पूरे हो रहे हैं और सूत्रों से, नई गणना, 2022 के आंकड़े को बताया जाएगा एवं प्रधानमंत्री इस अवसर पर 50 का सिक्का भी जारी करेंगे । इस संदर्भ में 2018 की रिपोर्ट पर गौर करना समीचीन होगा। रिपोर्ट बताती है कि आधी के लगभग टाइगर रिजर्व की क्षमता मौजूदा बाघों की संख्या से अधिक रखने की है। 15- 20त्न टाइगर रिजर्व में बाघों का घनत्व प्रति 100 वर्ग किलोमीटर में एक से भी कम है। चार-पांच टाइगर रिजर्व में तो संख्या नगण्य है। जबकि कुछ बाघ वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि सारे टाइगर रिजर्व पारिस्थितिकी तंत्र के स्तर पर क्रियाशील हो तो बाघों की संख्या 5,000 तक पहुंच सकती है। कुछ वैज्ञानिकों ने यहां तक कहा है कि संपूर्ण भारतीय बाघ पर्यावासों की क्षमता 10,000 से 12,000 बाघों को रखने की हो सकती है । हमें वैज्ञानिक तरीके से बाघ पर्यावासों के प्रबंधन में और भी इकोलॉजिकल समृद्धि की आवश्यकता है । डॉ रघु चुंडावत, डॉक्टर उल्लास कारंथ एवं वन्यजीव संस्थान के वैज्ञानिकों के महती कोशिश एवं जसवीर सिंह चौहान, डॉ सुहास कुमार, डॉ पावला, श्रीनिवास मूर्ति सरीखे अधिकारियों का अनुभव राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के साथ मिलकर प्रोजेक्ट टाइगर को समृद्ध कर सकने में सक्षम होगा। समीपवर्ती समुदायों का योगदान सुनिश्चित करना आवश्यक है। बढ़ती इंसानी आबादी, घटते वन क्षेत्र, सिकुड़ती नदियां, सूखते जल स्रोत, बाघ संरक्षण में एक बड़ी चुनौती है। हम विकसित होने की लड़ाई में भी पीछे नहीं है। अनेक परियोजनाओं का कार्यान्वयन बाघ पर्यावासों के लिए एक बड़ी चुनौती है । ईकोटूरिज्म को भी पर्यावास के क्षमता के अनुसार देखना आवश्यक होगा ।

हाल में ही बाघों के बढ़ती संख्या से मानव- वन्यजीव द्वंद में वृद्धि हुई है । इसे भावनात्मक तरीके से देखने के बजाय वैज्ञानिक सुझाव के आधार पर प्रबंधन को समाधान ढूंढने का प्रयास करना आवश्यक होगा । बाघ पर्यावासों को जीवनदायिनी जल का स्रोत एवं जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने वाले नील- हरित संरचना के रूप में प्रभावी रूप से देखना आवश्यक है। भारतीय बड़ी जनसंख्या को पीने का पानी एवं साँस देने के लिए हवा, दोनों ही जैव विविधता आधारित है क्योंकि बाघ पानी पिलाता है! बाघ खेती कराता है! एवं बाघ स्कूल भी लगाता है! सारी समस्याओं एवं उनके समाधान के बावजूद विश्व (13 टाइगर रेंज देश) में बाघों की संख्या को बचाए एवं बनाए रखने के लिए सारी निगाहें भारतीय बाघों की ओर ही है क्योंकि आवश्यक अनुवांशिक गुणों का भंडारण में बाघों की आवश्यक संख्या भारत के पास है एवं प्रोजेक्ट टाइगर के रूप में बाघों को बचाने की सबसे बड़ी परियोजना भी भारत के पास है। प्रोजेक्ट टाइगर के 50 सालों की सीख बाघों के संरक्षण में मील का पत्थर साबित होगी ऐसी आशा से चलो बाघों के लिए जश्न मनाए जो हमारे जीवन का आधार हैं।

दो दशकों में 134 फीसदी बढ़ी प्राइवेट जेटों की संख्या

पर्यावरण और जलवायु के दृष्टिकोण से भी है खतरनाक

भले ही दुनिया भर में अमीर तबके के लिए प्राइवेट जेट शानों-शौकत और ऐश्वर्य का प्रतीक समझे जाते हैं। लेकिन साथ ही यह निजी विमान पर्यावरण और जलवायु के दृष्टिकोण से कहीं ज्यादा खतरनाक हैं। हालांकि इसके बावजूद इनकी संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस बारे में एक नई रिपोर्ट के हवाले से पता चला है कि पिछले दो दशकों में प्राइवेट जेटों की संख्या बढ़कर दोगुणी से ज्यादा हो गई है। साथ ही इनसे होने वाला उत्सर्जन भी बढ़ रहा है। आंकड़ों के मुताबिक जहां 2000 में 9,895 प्राइवेट जेट थे, जिनकी संख्या 2022 में 134 फीसदी की वृद्धि के साथ बढ़कर 23,133 पर पहुंच गई है। वहीं यदि 2022 से जुड़े आंकड़ों को देखें तो अकेले इसी वर्ष में 53 लाख से ज्यादा निजी उड़ाने भरी गई। जो जलवायु परिवर्तन के दृष्टिकोण से खतरनाक है। यह जानकारी इंस्टिट्यूट फॉर पालिसी स्टडीज द्वारा जारी नई रिपोर्ट हाई फ्लायर्स 2023 में सामने आई है। यह प्राइवेट जेट पर्यावरण पर कितना दबाव डाल रहे हैं, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यह निजी जहाज, वाणिज्यिक विमानों की तुलना में प्रति यात्री कम से कम 10 गुणा ज्यादा प्रदूषण उत्सर्जित करते हैं। देखा जाए तो दुनिया के करीब एक फीसदी लोग विमानों से होने वाले उत्सर्जन के करीब आधे हिस्से के लिए जिम्मेवार हैं। वहीं महामारी की शुरुआत के बाद से गणना करें तो निजी जेटों का उपयोग में करीब 20 फीसदी और इन निजी जहाजों से होने वाले उत्सर्जन में 23 फीसदी से ज्यादा की वृद्धि रिकॉर्ड की गई है। जो स्पष्ट तौर पर दर्शाता है कि कोरोना के बाद से इन निजी जहाजों से होने वाले उत्सर्जन में भारी वृद्धि हुई है। वहीं रिपोर्ट के कहना है कि इस साल निजी जेटों की बिक्री अब तक उच्चतम स्तर पर पहुंच सकती है। रिपोर्ट में दुनिया के कुछ साधन संपन्न लोगों का जिक्र किया गया है जो इन प्राइवेट जेटों का उपयोग कर रहे हैं। इस मामले में यदि टेस्ला के सीईओ एलन मस्क को देखें जिन्होंने 2022 में करीब-करीब हर दूसरे दिन निजी जेट की मदद से उड़ान भरी थी। इनके द्वारा की गई इन 171 उड़ानों में कुल 837,934 लीटर जेट फ्यूल खर्च हुआ था, जोकि 2,112 टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के लिए जिम्मेवार था। देखा जाए तो यह एक साथ ही यह सुहाना सफर जलवायु के दृष्टिकोण से काफी महंगा है। हाल ही में प्रकाशित एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि वैश्विक उड्डयन उद्योग हर साल औसतन करीब 100 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) उत्सर्जित कर रहा है, जो जलवायु के दृष्टिकोण से एक बड़ा खतरा है। इतना ही नहीं इस उत्सर्जन में पिछले दो दशकों से हर साल 2.5 फीसदी की दर से वृद्धि हो रही है। देखा जाए तो इंसानों ने जलवायु में आते बदलावों में जितना योगदान दिया है उसके 3.5 फीसदी के लिए वैश्विक उड्डयन जिम्मेवार है। रिपोर्ट में अमेरिका का जिक्र करते हुए जो उदाहरण दिया है वो मुद्दा काफी गंभीर है। अमेरिका में हजारो म्युनिसिपल एयरपोर्ट्स को आम जनता के पैसे से फण्ड दिया जाता है, लेकिन यह हवाई अड्डे निजी और कॉर्पोरेट जेटों की सेवा में लगे हुए हैं। ऐसे में क्या इन प्राइवेट विमानों से अलग से टैक्स नहीं लगाए जाने चाहिए। ऊपर से कुछ गिने चुने लोगों द्वारा किया जा रहे प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन में योगदान के लिए उनकी जवाबदेही तय नहीं की जानी चाहिए। ऐसे में जब पूरे विमानन उद्योग को पर्यावरण अनुकूल और कार्बन न्यूट्रल बनाने पर बल दिया जा रहा है, तो क्या इन प्राइवेट विमानों को इसके दायरे में लाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि देखा जाए तो कुछ गिने चुने लोगों की करनी का फल सारे समाज को भुगतना पड़ रहा है। क्या जलवायु परिवर्तन के असर को सीमित करने और पर्यावरण को बचाने की जिम्मेवारी उस वर्ग की नहीं है जो इसके हो रहे विनाश के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेवार है। यह ऐसा वक्त है जब हम सभी को साथ आना होगा, क्योंकि यह धरती सबकी साझा विरासत है, जिसे सबको मिलकर बचाना होगा। हमें समझना होगा कि सिर्फ टैक्स के नाम पर चंद रुपए भर देने से ही हमारी जिम्मेवारी खत्म नहीं हो जाती।

औसत अमेरिकी के कुल कार्बन फुटप्रिंट से भी 132 गुणा ज्यादा है। गौरतलब है कि एक औसत अमेरिकी का वार्षिक कार्बन फुटप्रिंट करीब 16 टन है। मतलब कि एक साल के दौरान एक औसत अमेरिकी अमेरिकी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 16 टन ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करता है। वहीं यदि एक औसत भारतीय की बात करें तो यह आंकड़ा करीब 1.9 टन ही है। हालांकि इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत में भी कई नामी-गिरामी हस्तियों के पास अपने खुद के प्राइवेट जेट हैं।

क्या सबकी नहीं है पर्यावरण को बचाने की जिम्मेवारी

इतना ही नहीं यह भी बता चला है कि निजी जेट की बिक्री में भी तेजी से इजाफा हो रहा है। जहां 2021 में इससे जुड़ा बाजार करीब 2.64 लाख करोड़ रुपए (3,230 करोड़ डॉलर) का था, जो 2022 में बढ़कर 2.78 लाख करोड़ रुपए (3,410 करोड़ डॉलर) पर पहुंच गया था। इसी तरह अनुमान है कि यह वृद्धि 2023 में भी जारी रह सकती है। यह सही है कि हवाई जहाजों ने दुनिया को बहुत छोटा कर दिया है। लेकिन

सावधान! जुलाई में लौटेगा अल नीनो, भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों को कर सकता है प्रभावित

सावधान! जुलाई में लौटेगा अल नीनो, भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों को कर सकता है प्रभावित

विश्व मौसम संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने चेताया है कि भारत सहित दुनिया के कई देशों में आने वाले महीने कहीं ज्यादा गर्म रह सकते हैं। साथ ही मानसून पर इसके असर को खारिज नहीं किया जा सकता

भारत सहित दुनिया के कई देशों में आने वाले महीने कहीं ज्यादा गर्म रह सकते हैं। आशंका है कि ऐसा अल नीनो की वजह से हो सकता है, जिसके बारे में विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने चेताया है कि वो जुलाई के अंत तक बन सकता है। गौरतलब है कि 2016 में अल नीनो और बढ़ते तापमान की वजह से वैश्विक तापमान रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया था। इस बारे में डब्ल्यूएमओ द्वारा जारी नए अपडेट के मुताबिक मई से जुलाई के बीच इस बात की 60 फीसदी आशंका है कि अल नीनो-दक्षिणी दोलन (ईएनएसओ) अल नीनो में बदल जाएगा। वहीं जून से अगस्त के बीच इसके बनने की आशंका 70 फीसदी और सितंबर में 80 फीसदी तक बढ़ जाएगी। डब्ल्यूएमओ के अनुसार लंबे समय तक चलने वाले ला नीना के बाद इस एल नीनो का आना दुनिया के कई हिस्सों में मौसम और जलवायु के पैटर्न पर विपरीत असर डालेगा।

साथ ही इसकी वजह से वैश्विक तापमान में भारी बढ़ोतरी की आशंका है। अनुमान है कि इसकी वजह से दुनिया के कई हिस्सों में गर्मी का कहर बढ़ जाएगा। गौरतलब है कि असामान्य रूप से तीन साल तक चलने के बाद अब जिद्दी ला नीना का असर समाप्त हो गया है और उष्णकटिबंधीय प्रशांत मौजूदा समय में ईएनएसओ की तटस्थ स्थिति में है। मतलब वहां न तो ला नीना और न ही एल नीनो की स्थिति है। लेकिन जलवायु वैज्ञानिकों का अनुमान है कि जल्द ही यह स्थिति बदल जाएगी। इस बारे में डब्ल्यूएमओ के महासचिव प्रोफेसर पेटेरी तालास का कहना है कि, पिछले तीन वर्षों तक ला नीना के होने के बावजूद हमने आठ सबसे गर्म वर्षों को अनुभव किया था। उनके अनुसार हालांकि ठन्डे ला नीना ने बढ़ते तापमान में एक अस्थाई ब्रेक का काम किया था। लेकिन अब एल नीनो के विकसित होने के साथ वैश्विक तापमान में एक नई वृद्धि होगी। इससे तापमान के नए रिकॉर्ड पर पहुंचने की आशंका बढ़ जाएगी।

क्या भारत में मानसून को कर सकता है प्रभावित

गौरतलब है कि कुछ दिनों पहले जारी स्टेट ऑफ द ग्लोबल क्लाइमेट रिपोर्ट ने इस बात की पुष्टि की थी कि 2015 से 2022 के बीच आठ वर्ष अब तक के सबसे गर्म वर्ष थे। जब तापमान में होती वृद्धि औद्योगिक काल से पहले की तुलना में 1.15 डिग्री सेल्सियस ज्यादा दर्ज की गई थी। वहीं 2021 में वैश्विक तापमान औसत से 1.11 डिग्री सेल्सियस ज्यादा दर्ज किया गया था। हाल ही में डाउन टू अर्थ ने अपने विश्लेषण में जानकारी दी

थी कि उभरते अल नीनो के साथ भारत में लू का प्रकोप बढ़ सकता है। देखा जाए तो यह चेतावनी विश्व मौसम विज्ञान संगठन द्वारा जारी अपडेट से मेल खाती है, जिसमें डब्ल्यूएमओ ने वैश्विक तापमान में वृद्धि की आशंका जताई है। गौरतलब है कि इस साल लू का प्रकोप पिछले साल की तुलना में जल्द शुरू हो गया था। इसका असर मार्च-अप्रैल में ही नजर आने लगा था। हालांकि उसके बाद देश के कई हिस्सों में बड़े पैमाने पर आंधी, बारिश और ओले गिरने की घटनाएं हुई, जिससे दिन के तापमान में काफी गिरावट आ गई है। इसकी वजह से कई क्षेत्र, विशेष रूप से उत्तर-पश्चिम भारत में मार्च सामान्य से अधिक ठंडा हो गया था। देखा जाए तो यह पश्चिमी विक्षोभ की एक श्रृंखला के कारण हुआ था। हालांकि आशंका है कि अल नीनो के चलते लू का प्रकोप बढ़ सकता है, जैसा कि 2015 और 2016 में हुआ था। वहीं भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्रा ने पिछले हफ्ते भारतीय मानसून पर अल नीनो के प्रभावों को लेकर कहा था कि देश में मानसून पर इसका कोई भी असर मानसून के आधा बीत जाने के बाद ही दिखाई देगा। उनके मुताबिक यह जरूरी नहीं कि हमेशा अल नीनो खराब मानसून की ओर ले जाएगा। बता दें कि 1951 से 2022 के बीच 15 साल अल नीनो का असर दर्ज किया गया था जिनमें से छह सालों में सामान्य से ज्यादा बारिश हुई थी। वहीं मैरीलैंड विश्वविद्यालय और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे से जुड़े जलवायु वैज्ञानिक रघु मुर्तुगुड्डे ने बताया है कि गर्म होते महासागरों के चलते चक्रवात भी आ सकते हैं, लेकिन अल नीनो इसकी संभावना को कम कर सकता है। उन्होंने बताया कि, वसंत के दौरान गर्म अरब सागर एक मजबूत मानसून का कारण बन सकता है जो अल नीनो के खिलाफ थोड़ी बहुत क्षतिपूर्ति कर सकता है। ऐसे में डब्ल्यूएमओ ने चेतावनी दी है कि दुनिया को अल नीनो के लिए तैयार रहना चाहिए जो अपने साथ दुनिया के कई हिस्सों में भीषण गर्मी, सूखा लेकर आएगा। इससे बारिश भी प्रभावित हो सकती है। साथ ही मौसम और जलवायु से जुड़ी चरम घटनाओं में भी चिंगारी लगा सकता है। ऐसे में डब्ल्यूएमओ ने सभी के लिए अर्ली वार्निंग पर भी जोर दिया है। डब्ल्यूएमओ के मुताबिक जहां एल नीनो की यह घटनाएं आमतौर पर दक्षिण अमेरिका, हॉर्न ऑफ अफ्रीका और मध्य एशिया के कुछ हिस्सों में होने वाली बारिश में इजाफा कर सकता है। वहीं दूसरी तरफ इसके विपरीत इसकी वजह से ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और दक्षिण एशिया के कुछ हिस्सों में गंभीर सूखा पड़ सकता है।

क्या होती हैं अल नीनो और ला नीना की घटनाएं

मौसम से जुड़ी इन घटनाओं को आमतौर पर एल नीनो-दक्षिणी दोलन (ईएनएसओ) के नाम से जाना जाता है। यह दोनों ही घटनाएं प्रशांत महासागर की सतह के तापमान में होने वाले बदलावों से जुड़ी हैं। इसमें जहां एल नीनो तापमान में होने वाली वृद्धि से जुड़ा है वहीं ला नीना तापमान में आने वाली गिरावट को दर्शाता है, जिसका प्रभाव करीब नौ महीनों तक रहता है। वैज्ञानिक रूप से देखें तो एल-नीनो प्रशांत महासागर के भूमध्यीय क्षेत्र की उस मौसमी घटना का नाम है, जिसमें पानी की सतह का तापमान सामान्य से अधिक गर्म हो जाता है और हवा पूर्व की ओर बहने लगती है। इसकी वजह से न केवल समुद्र पर बल्कि वायुमंडल पर भी प्रभाव पड़ता है। जलवायु वैज्ञानिकों के मुताबिक इस घटना के चलते समुद्र का तापमान चार से पांच डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो जाता है। वहीं इसके विपरीत ला नीना पश्चिमी प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में सामान्य से कम वायुदाब बनने की स्थिति में बनता है। इसके कारण समुद्र का तापमान सामान्य से घट जाता है। आमतौर पर इन दोनों ही घटनाओं का असर नौ से 12 महीने तक रहता है, पर कभी-कभी यह स्थिति कई वर्षों तक बनी रह सकती है। देखा जाए तो यह दोनों ही घटनाएं दुनिया भर में मौसम, बारिश, बाढ़, तूफान और सूखा जैसी घटनाओं को प्रभावित करती हैं। इनकी वजह से कहीं सामान्य से ज्यादा बारिश होती है तो कहीं सूखा पड़ता है, और कहीं तूफान आते हैं।

भारतीय वैज्ञानिकों ने सर्जरी की जटिलता को कम करने के लिए विकसित की नई तकनीक

यह तकनीक चिकित्सा उपकरणों की एक नई पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी, जिन्हें आने वाले दिनों में सर्जन नसों और कई अन्य उत्तकों का उपचार करने के लिए सर्जरी के दौरान उपयोग कर सकेंगे

भारतीय वैज्ञानिकों ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जो सर्जरी की जटिलता को कम करके नसों का तेजी से उपचार में मदद कर सकती है। यह त्रि-आयामी (थ्री डी) प्रिंटिंग तकनीक के उपयोग से बनाई गई नई स्मार्ट जेल-आधारित शीट है। इसका उपयोग सर्जरी के दौरान नसों या तंत्रिका नलिका बनाने के लिए किया जा सकता है जो ट्यूब में स्वयं-घूम सकती है।सबसे बाहरी या परिधीय नसों के उपचार के लिए अभी भी ऑटोग्राफ्ट तकनीक सबसे अच्छी मानी जाती है। नैदानिक उपयोग के लिए विकल्प के रूप में दोबारा अवशोषित करने योग्य (बायोरसोर्बेबल) पॉलिमर आधारित नलिका का पता लगाया जा रहा है। लेकिन यह उपचार नीतियां भी कई तरह की बाधाओं से ग्रस्त है जैसे कि ऑटोग्राफ्ट के मामले में डोनरसाइट बीमारियां और टांके की आवश्यकता जिसमें अत्यधिक कुशल माइक्रोसर्जरी की जरूरत पड़ती है और इसमें टांके से उत्पन्न होने वाली अन्य जटिलताएं भी शामिल है।

उपचार के इन कमियों को दूर करने के लिए बेंगलुरु में भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) के शोधकर्ताओं ने त्रिआयामी (थ्री डी प्रिंटिंग) तकनीक का उपयोग करके एक स्मार्ट जेल आधारित शीट डिजाइन की। यह तंत्रिका नलिका बनाने के लिए सर्जरी के दौरान एक ट्यूब के रूप में स्वयं उसमें घूम सकती है। थ्री डी प्रिंटिंग में उस भाग का एक आभासी मॉडल के मदद से सामग्री के परत दर परत जमाव द्वारा, डिजाइन-सॉफ्टवेयर का उपयोग करके

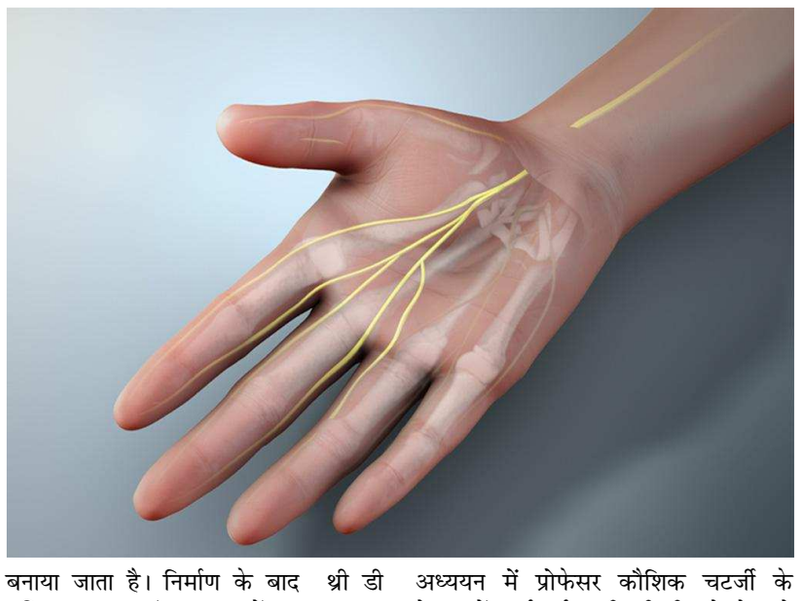

बनाया जाता है। निर्माण के बाद थ्री डी मुद्रित भाग स्वयं आकार में बदलाव ला सकता है। ऐसी तकनीक को अब व्यापक रूप से चार आयामी (फोर डी प्रिंटिंग) के रूप में जाना जाता है। हाल ही के एक अध्ययन में प्रोफेसर कौशिक चटर्जी के नेतृत्व में आईआईएससी की टीम ने जेल से पूर्व निर्धारित पैटर्न में थ्री डी प्रिंटिंग द्वारा एक दो सतहों वाली जैल शीट तैयार की। जेल के फॉर्मूले को पानी से अलग तरह से प्रतिक्रिया करने के लिए चुना गया था। जब सूखे जेल शीट को पानी में डुबाया गया तो यह तेजी से फूल गया और एक नलिका के रूप में बदल गया। जेल के इस व्यवहार और मन चाहे आकार के ट्यूब उत्पन्न करने के लिए कंप्यूटर से प्रोग्राम किया जा सकता है। इसका अनुमान कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग द्वारा लगाया जा सकता है।

इसके बाद जेल शीट को बहुत पतली नैनोमीटर स्केल के तंत्रिका तंतुओं से लपेटा जाता है ताकि शरीर की कोशिकाओं को जेल शीट पर चिपकने में सक्षम बनाया जा सके। आईआईएससी की टीम ने रुड़की स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और महर्षि मार्कण्डेश्वर विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के साथ मिलकर चूहों की साइटिका की नस में दो मिलीमीटर के गहरे भाग का उपचार और फिर से उत्पन्न करने के लिए फोरडी नली का परीक्षण किया। इसके लिए तंत्रिका में जहां समस्या थी उसके नीचे शेप मोरफिंगशीट को रखा गया और समस्या-ग्रस्त तंत्रिका के चारों ओर एक नली बनाने के लिए शीट को प्रेरित किया गया। प्रत्यारोपित नलिका की सहायता से तंत्रिका के सिरे को बढ़ाया जा सकता है। जब फोर डी मुद्रित तंत्रिका नली का उपयोग किया गया तो चूहों में 45 दिन तक मापे गए तंत्रिका फिर से उत्पन्न होने में भारी सुधार देखा गया। यह शोध एडवांस्ड हेल्थकेयर मटेरियल्स नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। शोधकर्ताओं के इस काम को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के एक वैधानिक निकाय विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड (एसईआरबी) द्वारा थ्री डी बायोप्रिंटिंग पर उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में गहन अनुसंधान (आईआरएचपीए) में भी समर्थन दिया गया। इस तरह के फोर डी मुद्रित भागों का उपयोग अभी तक उपचार में नहीं किया गया है। लेकिन इस तरह की उभरती तकनीकें चिकित्सा उपकरणों की एक नई पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी, जिन्हें आने वाले दिनों में सर्जन नसों और कई अन्य उत्तकों का उपचार करने के लिए सर्जरी के दौरान उपयोग कर सकेंगे। ये सर्जरी की जटिलता को कम करने के साथ, कम से कम चीर-फाड़ द्वारा और तेजी से ठीक होने की प्रक्रिया जैसे फायदे प्रदान कर सकते हैं।

यूक्रेन विवाद और अफगानिस्तान के मुद्दे पर केंद्रित रहेगी एससीओ के विदेश मंत्रियों की बैठक

समूह से जुड़े अन्य जरूरी मामलों के साथ जुलाई महीने में होने वाले एससीओ शिखर सम्मेलन के मुद्दे पर भी मंथन करेंगे समूह देशों के विदेश मंत्री।

⏭ नई दिल्ली

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के विदेश मंत्रियों के दो दिवसीय सम्मेलन की गुरुवार से गोवा में शुरुआत हो गई है। इसी के तहत शुक्रवार 5 मई को एससीओ के विदेश मंत्रियों की बैठक होगी। जिसमें समूह से जुड़े तमाम जरूरी मामलों के अलावा यूक्रेन विवाद और अफगानिस्तान के मौजूदा हालात पर विस्तृत आधार पर चर्चा की जाएगी। इसके अलावा इस बैठक में जुलाई-2023 में नई दिल्ली में होने वाले एससीओ शिखर सम्मेलन का एजेंडा भी तय किया जाएगा। जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे। उनके अलावा इसमें चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और समूह के अन्य भागीदार देशों के प्रमुख भी शिरकत करेंगे। सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि जुलाई में एससीओ शिखर सम्मेलन के दौरान मौटे तौर पर 15 निर्णय लिए जा सकते हैं। इन पर एससीओ के विदेश मंत्रियों की बैठक में विस्तृत रूप से चर्चा की जाएगी। उक्त निर्णयों में वाणिज्य-व्यापार से लेकर सुरक्षा और समूह से जुड़े हुए सामाजिक, सांस्कृतिक मामलों में एससीओ सदस्य देशों के बीच सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की जाएगी। बताते चलें कि एससीओ की स्थापना वर्ष 2001 में शंघाई में की गई थी। भारत और पाकिस्तान वर्ष 2017 में इसके स्थायी सदस्य बने हैं।

बैठक से दूर रहेंगे भारत-पाक के मुद्दे

उधर शुक्रवार को गोवा में होने वाली समूह के विदेश मंत्रियों की बैठक में यूक्रेन में जारी मौजूदा विवाद और अफगानिस्तान के मुद्दे पर चर्चा की जा सकती है। भारत और पाकिस्तान के संबंधों पर एससीओ की बैठक में चर्चा किए जाने की किसी तरह की कोई संभावना नहीं है। क्योंकि यह मुद्दा एससीओ के चार्टर से दूर-दूर तक जुड़ा हुआ नहीं है। विदेश मंत्रालय में सचिव (आर्थिक संबंध) दामू रवि ने बताया कि विदेश मंत्रियों की बैठक के पूर्व में सबसे महत्वपूर्ण कार्य उन निर्णयों की स्थिति की विश्लेषण करना है। जिन्हें एससीओ शिखर सम्मेलन में मंजूरी प्रदान की जाएगी। यह बैठक एससीओ के अंदर बहुआयामी सहयोग के मुद्दे पर भी विचार-विमर्श करने का अवसर प्रदान करती है। समूह में सुधार और आधुनिकीकरण, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा के अलावा ईरान और बेलारूस को एससीओ का स्थायी सदस्य के रूप में स्वीकारना भी प्रक्रिया में है। जुलाई में एससीओ शिखर सम्मेलन में कुवैत, म्यांमार, मालदीव और यूएई को संवाद भागीदार यानी डायलॉग पार्टनर के रूप में मंजूरी दिए जाने को लेकर भी अंतिम निर्णय लिया जा सकता है। बेलारूस, ईरान और मंगोलिया वर्तमान में एससीओ में पर्यवेक्षक की भूमिका में है। इसके अलावा एससीओ में 9 संवाद भागीदार हैं। जिनमें मिस्र, नेपाल, श्रीलंका और तुर्किये भी शामिल हैं।

भारत ने रखी 'सिक्योर' की थीम

विदेश मंत्रालय में सचिव दामू रवि ने कहा कि भारत की एससीओ की अध्यक्षता को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिक्योर थीम को भारत की प्राथमिकताओं में शामिल किया है। विस्तार में इसे सिक्योरिटी, इकोनॉमिक डेवलपमेंट, कनेक्टिविटी, यूनिटी, रिस्पेक्ट फॉर सावरेंटी एंड टेरिटोरियल इंटीग्रिटी एंड इकोनॉमिक प्रोटेक्शन के रूप में परिभाषित किया गया है। गौरतलब है कि भारत की एससीओ की अध्यक्षता में कुल 100 बैठकों का आयोजन किया गया है। इसमें 15 मंत्रिस्तरीय बैठकें भी शामिल हैं।

अब ऑल इंडिया रेडियो नहीं केवल 'आकाशवाणी'

प्रसार भारती ने लिया बड़ा फैसला, आदेश जारी

⏭ नई दिल्ली

सार्वजनिक प्रसारक प्रसार भारती ने अपनी रेडियो सेवा के संदर्भ में 'ऑल इंडिया रेडियो' (एआईआर) नाम का इस्तेमाल नहीं करने और इसे 'आकाशवाणी' करने का फैसला किया है, जैसा कि कानून में उल्लेख किया गया है। 'आकाशवाणी' की महानिदेशक वसुधा गुप्ता द्वारा बुधवार को जारी एक आंतरिक आदेश में इस वैधानिक प्रावधान को 'तत्काल प्रभाव से लागू' करने का अनुरोध किया गया है, जिसके जरिए एआईआर (ऑल इंडिया रेडियो) का नाम बदलकर 'आकाशवाणी' कर दिया गया था। प्रसार भारती के मुख्य कार्यकारी अधिकारी गौरव द्विवेदी ने कहा, यह सरकार का बहुत पुराना फैसला है जो पहले लागू नहीं किया गया था। अब हम इसे लागू कर रहे हैं। प्रसार भारती (भारतीय प्रसारण निगम) अधिनियम, 1990 में उल्लेख किया गया है कि 'आकाशवाणी' का अर्थ कार्यालयों, स्टेशनों और अन्य प्रतिष्ठानों से है, चाहे उन्हें किसी भी नाम से पुकारा जाए।

खबर संक्षेप

काहिरा जा रही बस ट्रक से टकराई 14 यात्रियों की मौत, 25 घायल

काहिरा। दक्षिण पश्चिम मिस्र में 45 यात्रियों को लेकर काहिरा जा रही बस राजमार्ग पर ट्रक से टकरा गई। इस हादसे में 14 लोगों की मौत हो गई तथा 25 अन्य घायल हो गए। न्यू वैली प्रांत के गवर्नर मोहम्मद अल जमौत ने बताया कि यह दुर्घटना बुधवार देर रात हुई। उन्होंने कहा कि घायलों को पास के अस्पतालों में भर्ती करवाने तथा मृतकों के शवों को ले जाने के लिए मौके पर एंबुलेंस की 17 गाड़ियां भेजी गईं। हालांकि दुर्घटना किस वजह से हुई है यह नहीं बताया गया।

पाकिस्तान में कत्लेआमः 2 स्कूलों में गोलीबारी, 8 टीचरों की हत्या

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में एक बार फिर से बड़ा हादसा हुआ है। खैबर पख्तूनख्वा के ऊपरी कुर्रम तहसील के स्कूल में हथियारबंद बंदूकधारी ने गोली मारकर सात शिक्षकों की हत्या कर दी है। कुर्रम एजेंसी में एक दिन में फायरिंग की यह दूसरी घटना है। कुर्रम में मरने वालों की कुल संख्या आठ हो गई है। बंदूकधारी स्कूल में घुसा और सीधे तहसील के स्कूल के स्टाफ रूम में जाकर अंधाधुंध फायरिंग कर दी। घटना उस समय हुई जब शिक्षक परीक्षा संबंधी कार्य कर रहे थे।

भारतीय मूल के हरजिंदर दक्षिण एशिया के व्यापार आयुक्त बने

लंदन। भारतीय मूल के लोगों का लगातार विदेशों में डंका बज रहा है। अजय बंगा के विश्व बैंक प्रमुख नियुक्त होने के बाद ब्रिटेन ने भारतीय मूल के हरजिंदर कांग को दक्षिण एशिया का व्यापार आयुक्त और पश्चिमी भारत का उप उच्चायुक्त नियुक्त किया है। वह इस क्षेत्र के साथ ब्रिटेन का व्यापार और निवेश बढ़ाने का प्रयास करेंगे। यूके-भारत मुक्त व्यापार समझौते के मुख्य वार्ताकार रहे कांग समझौते के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, व्यापार के अवसर पैदा करेंगे।

मदर डेयरी ने खाद्य तेलों के दाम 15 से 20 रुपए लीटर घटाए

नई दिल्ली। मदर डेयरी की ओर से खाद्य तेलों का अधिकतम खुदरा मूल्य (एमआरपी) 15 से 20 रुपए प्रति लीटर घटा दिया गया है। वैश्विक स्तर पर खाद्य तेल कीमतों में आई गिरावट से यह कदम उठाया है। मूल्य कटौती तत्काल प्रभाव से लागू हो गई है। नए एमआरपी के साथ तेल अगले सप्ताह बाजार में आने की उम्मीद है। खाद्य मंत्रालय ने खाद्य तेल उद्योग निकाय सॉल्वेंट एक्ट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) को खाद्य तेल के दाम घटाने का निर्देश दिया था।

'लाइन' पर आए इमरान, सुनवाई के लिए कोर्ट में पेश होंगे

इस्लामाबाद। पूर्व पीएम इमरान खान ने गुरुवार को कहा कि वह पैर में दर्द और सूजन होने के बावजूद इस्लामाबाद हाईकोर्ट में पेश होंगे। इमरान ने कहा कि वे अदालत का सम्मान करते हैं। इससे पहले अदालत ने इमरान को कड़ी चेतावनी देते हुए अदालत में पेश होने का आदेश दिया था। अदालत ने पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान को एक दिन की मोहलत देते हुए उन्हें व्यक्तिगत रूप से पेश होने को कहा था। इससे वे तैयार हो गए।

जिन लोगों का मजहब बदलवाया उन्हें चार महीने तक एक जगह रखा

पाकिस्तान में 50 हिंदुओं का धर्मांतरण एक साल की बच्ची भी इनमें शामिल

एजेंसी ⏭ इस्लामाबाद

इन सभी लोगों को एक खास सेंटर में चार महीने तक रखा गया था। यह सेंटर 2018 में उन लोगों के लिए बनाया गया था जो दूसरे मजहबों को छोड़कर इस्लाम अपनाते हैं। इसे आम बोलचाल में इस्लामी ट्रेनिंग सेंटर कह सकते हैं। उन्हें मजहबी ट्रेनिंग दी गई और उनकी हर जरूरत पूरी की गई।

पाकिस्तान के मीरपुरखास में 10 परिवारों के 50 हिंदुओं को मुसलमान बनाया गया है। इनमें 1 साल की बच्ची भी शामिल है। इस मौके पर मजहबी मामलों के मंत्री मोहम्मद ताल्हा महमूद के बेटे मोहम्मद शमरोज खान भी मौजूद रहे। वो खुद भी सांसद हैं। हिंदुओं का सामूहिक धर्मांतरण कराने के लिए एक स्पेशल सेरेमनी ऑर्गेनाइज की गई। जिन लोगों का मजहब बदलवाया गया है, उन्हें चार महीने तक एक जगह रखा गया इसे आम बोलचाल में इस्लामी ट्रेनिंग सेंटर कह सकते हैं। करीब एक महीने पहले हिंदू सांसद दानिश कुमार ने सदन में यह कहकर सबको चौंका दिया था कि उनके सहयोगी सांसद उन्हें इस्लाम अपनाने के लिए लालच देते हैं या दबाव डालते हैं। अब हिंदुओं के सामूहिक धर्मांतरण का मामला सामने आया है। हिंदुओं को मुस्लिम बनाने की इस घटना का खुलासा पाकिस्तान के ही अखबार ने स्पेशल रिपोर्ट में किया है। इसके मुताबिक यह प्रोग्राम बैतुल इमान न्यू मुस्लिम कॉलोनी के एक मदरसे में किया गया। जिस संगठन ने यह धर्मांतरण कार्यक्रम आयोजित किया उसके केयरटेकर कारी तैमूर राजपूत ने कहा, कुल 10 परिवारों को इस्लाम में शामिल किया गया है। वो मर्जी से मुस्लिम बनने को राजी हुए। हमने कोई दबाव नहीं डाला।

खास बातें

- एक महीने पहले हिंदू सांसद दानिश ने सदन में धर्मांतरण का मामला उठाया था
- पाक हिंदू एक्टिविस्ट फाकिर शिवा ने इस सामूहिक धर्मांतरण का विरोध किया है

बच्ची भी अब मुस्लिम

कारी ने कहा, 10 परिवारों के कुल 50 लोगों ने इस्लाम कबूल किया है। इनमें 23 महिलाओं के अलावा एक साल की बच्ची भी शामिल है। इन सभी लोगों को एक खास सेंटर में रखा गया था। यह सेंटर 2018 में उन लोगों के लिए बनाया गया था जो दूसरे मजहबों को छोड़कर इस्लाम अपनाते हैं। कारी ने बताया कि सभी लोगों को इस सेंटर में चार महीने रखा गया। इस दौरान उन्हें मजहबी ट्रेनिंग दी गई और उनकी हर जरूरत पूरी की गई। सेंटर में उन्हें भोजन, कपड़े और दवाइयां भी मुहैया कराई गईं।

हिंदू नेता बोले हम मजबूर हैं

पाकिस्तान के हिंदू एक्टिविस्ट फाकिर शिवा ने इस सामूहिक धर्मांतरण का विरोध किया है। शिवा ने कहा, बिलकुल साफ नजर आ रहा है कि अब सरकार ही दूसरे मजहब के लोगों का इस्लाम में धर्मांतरण करा रही है। माइनॉरिटीज के लोग कई साल से मांग कर रहे हैं कि इस तरह के कन्वर्जन के खिलाफ सख्त कानून बनाया जाए, लेकिन हमारी बात सुनेगा कौन? सिंध में तो यह बहुत बड़ा मसला बन चुका है। अब तो कैबिनेट मिनिस्टर का सांसद बेटा भी इस तरह के प्रोग्राम में शामिल हो रहा है। लेकिन क्या करें? हम मजबूर हैं।

हिंदू सांसद ने साथियों पर लगाया था धर्म परिवर्तन का आरोप

करीब एक महीने पहले पाकिस्तान के एक हिंदू सांसद ने अपने साथी सांसदों पर धर्म परिवर्तन करने के लिए दबाव बनाने का आरोप लगाया था। बलूचिस्तान के नेता दानिश कुमार ने संसद में कहा था, मुझे इस्लाम के उपदेश न दिए जाएं। पहले अपराधी मुसलमानों को इस्लाम सिखाओ, फिर मुझसे मेरा धर्म बदलने के लिए कहना। उन्होंने कहा, यहां पर मेरे दोस्त हैं जो मुझसे कहते हैं कि दानिश कुमार कलमा पढ़ लो, मुसलमान हो जाओ। दानिश कुमार 2018 में बलूचिस्तान अवामी पार्टी से अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित सीट पर सांसद चुने गए थे। इससे पहले वो बलूचिस्तान की विधानसभा के भी सदस्य रह चुके हैं।

बारामूला में एनकाउंटर

दो आतंकवादी मारे गए लश्कर से था कनेक्शन

एजेंसी ⏭ श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में सुरक्षाबलों ने लश्कर के दो आतंकियों को एनकाउंटर में मार गिराया। मारे गए दोनों आतंकियों के शवों को कब्जे में लिया गया। उनके पास से हथियारों को बरामद किया गया है। दोनों आतंकवादी शोपिया जिले के रहने वाले थे। पुलिस ने सूचना पर कार्रवाई करते हुए टीमों की तरफ से इलाके में सर्च आपरेशन शुरू किया था। इस आपरेशन में सेना और एसएसबी के जवानों को भी लगाया गया। सर्च के दौरान जब टीम वानीगाम इलाके में पहुंची तो छिपे हुए आतंकियों ने टीम पर फायरिंग शुरू कर दी। इसके बाद सुरक्षाबलों की तरफ से भी जवाब दिया गया। दोनों तरफ से काफी देर तक मुठभेड़ चली। इसमें दोनों आतंकियों को मार गिराया गया। उनकी पहचान शाकिर मजीद नजर और हानन अहमद के रूप में हुई है। दोनों आतंकी संगठन लश्कर के साथ जुड़े हुए थे।

सेना का हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त तीन घायल

जम्मू संभाग के किश्तवाड़ के दूर-दराज इलाके में सेना का ध्रुव हेलीकॉप्टर दुर्घटना का शिकार हुआ। इसमें तीन लोग सवार थे। तीनों को जख्मी हुए हैं। उन्हें इलाज के लिए उधमपुर के सैन्य

अस्पताल ले जाया गया है। मामले को लेकर सेना की तरफ से कहा गया है कि गुरुवार को करीब सवा ग्यारह बजे ऑपरेशनल मिशन पर रवाना हुआ ध्रुव हेलीकॉप्टर किश्तवाड़ की मरुआ नदी के तट पर लैंडिंग के दौरान हादसे की चपेट में आया। पायलटों ने एयर ट्रैफिक कंट्रोलर (एटीसी) को तकनीकी खराबी की सूचना दी थी। मामले में कोर्ट ऑफ इंक्वायरी के आदेश दे दिए गए हैं।

आतंकी हमले की धमकी के बाद तलाशी अभियान जारी

पुंछ जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर सैन्य वाहन पर हुए आतंकी हमले के बाद खुफिया एजेंसियों को फिर बड़ी वारदात की साजिश रचने का इनपुट मिला है। इस पर भारत और पाकिस्तान नियंत्रण रेखा से सटे जिले सुरक्षाबलों ने बड़े स्तर में तलाशी अभियान शुरू किया है। सुरक्षाबल जिले के विभिन्न क्षेत्रों में दिन रात तलाशी अभियान चला रहे हैं। इसके अलावा गश्त बढ़ाई गई है। कई स्थानों पर राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ साथ भीतरी सड़कों एवं संपर्क मार्गों पर विशेष नाके लगाए हैं।

पद संभालने के बाद अब ओडिशा पहुंची

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का लोगों ने किया भव्य स्वागत

भुवनेश्वर। राष्ट्रपति के आगमन पर ओडिशा के राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल और केंद्रीय राज्य मंत्री बिश्वेश्वर टुडू ने उनका स्वागत किया। राष्ट्रपति अपने गृह राज्य ओडिशा के तीन दिवसीय दौरे पर हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का गुरुवार को मयूरभंज जिले के बदामपहाड़ में लोगों द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया, क्योंकि वह भारत के राष्ट्रपति के रूप में अपने चुनाव के लगभग एक साल बाद घर आई थीं। अपनी यात्रा के दौरान मुर्मू मयूरभंज जिले के रायरंगपुर, पहाड़पुर और बारीपदा का दौरा करेंगी। राष्ट्रपति सचिवालय के मुताबिक वह ब्रह्मा कुमारिस सेंटर, हाटबद्रा जाएंगी, जहां वह ब्रह्मा कुमारिस सेंटर के व्यसन मुक्त ओडिशा अभियान की शुरुआत करेंगी। उसी शाम रैरंगपुर स्टेडियम में नागरिक अभिनंदन में भाग लेंगी।

रामबन जिले में होटल में हादसा

होटल में आग लगने से दो लोगों की मौत और 5 घायल

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले में गुरुवार सुबह होटल में आग लगने से दो लोगों की मौत हो गई और पांच घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि सनासर पर्यटन स्थल स्थित होटल मां शांति में आग लग गई और उसने तेजी से पूरे इलाके को अपनी चपेट में ले लिया। उन्होंने बताया कि आग पर काबू पाने के लिए दमकल वाहनों को भेजा गया और स्थानीय लोगों तथा पुलिस ने भी आग बुझाने की कोशिश की। उन्होंने बताया कि आग पर काबू पा लिया गया। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अधिकारियों के अनुसार घटना के संबंध में मजिस्ट्रेटी जांच का आदेश दिया गया है। बताया जा रहा है कि घटना की जांच कराने के बाद ही होटल में आग लगने का कारण सामने आ सकेगा। घायलों का इलाज जारी है।

उत्तराखंड, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर में बर्फबारी

केदारनाथ के रास्ते में भैरव ग्लेशियर टूटने से यात्रा रोकी

एजेंसी ⏭ देहरादून

केदारनाथ के रास्ते में गुरुवार को ग्लेशियर टूट जाने से यात्रा को रोक देना पड़ा। यात्रा के पैदल मार्ग पर भैरव ग्लेशियर टूटा, इससे भैरव गदेरा और कुबेर गदेरा के बीच रास्ता बंद हो गया। इधर, प्रशासन ने चार धाम के तीर्थ यात्रियों को रुकने के लिए कहा है। केदारनाथ के अलावा उत्तराखंड, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर में बारिश के साथ ही कुछ स्थानों पर बर्फबारी हुई है। मौसम विभाग ने बंगाल की खाड़ी के दक्षिण-पूर्व में 9 मई तक चक्रवात बनने की आशंका जताई है। केंद्रीय मौसम विभाग के डीजी मृत्युंजय महापात्र ने कहा कि 6 मई को बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र बन रहा है। इसके बाद चक्रवात बनने के संकेत हैं।

चुनौती देने वाली याचिकाओं की सुनवाई अगस्त में होगी

5 साल में 548 गिरफ्तार, सिर्फ 12 दोषी, 153 साल बाद राजद्रोह कानून को खत्म करेगी सरकार?

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

आईपीसी की धारा 124ए की समीक्षा पर अंतिम चरण की चर्चा जारी

सुप्रीम कोर्ट ने राजद्रोह कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं की सुनवाई अगस्त तक के लिए टाल दी है। केंद्र सरकार के अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमानी ने सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट को बताया कि राजद्रोह को अपराध बनाने वाली आईपीसी की धारा 124ए की समीक्षा पर अंतिम चरण की चर्चा जारी है। सुनवाई इसलिए टाली गई ताकि अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमानी का पक्ष भी जाना जा सके। दरअसल पिछले पांच साल में यानी 2015 से 2020 के बीच देश में राजद्रोह की धाराओं के 356 मामले दर्ज किए गए थे। 548 लोगों को गिरफ्तारी भी हुई थी जबकि सिर्फ 12 लोग ऐसे थे जिन्हें दोषी साबित किया जा सका। सुप्रीम कोर्ट ने इसी के खिलाफ सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार को निर्देश दिया था।

इन लोगों ने दायर की थी याचिका

इस कानून के खिलाफ एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया, मेजर जनरल (रिटायर्ड) एसजी वोमबटकेरे, पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण शौरी और पीयूसीएल ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। दायर याचिका में कहा गया कि असहमति की आवाज को रोकने या दबाने के लिए केंद्र सरकार राजद्रोह कानून का इस्तेमाल कर रही है और उसे अपना हथियार बनाते हुए लोगों को जेल में डाल रही थी।

सुप्रीम कोर्ट ने लगाई थी रोक

इस याचिका पर सुनवाई करते हुए 2022 के 11 मई को राजद्रोह कानून पर रोक लगाई गई थी, जिसे 31 अक्टूबर 2022 को बढ़ा दिया गया था। उस वक्त के चीफ जस्टिस एनवी रमना की अध्यक्षता वाली पीठ ने अपने आदेश में कहा था कि राजद्रोह कानून के इस्तेमाल पर रोक लगा दी जाए और पुनर्विचार तक राजद्रोह कानून यानी 124ए के तहत कोई नया मामला दर्ज न किया जाए।

पुतिन पर जानलेवा हमले के बाद

यूक्रेन पर कर दी बारूद की बारिश, 21 की मौत

एजेंसी ⏭ मास्को

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर जानलेवा हमले के बाद भड़के रूस ने यूक्रेन पर खतरनाक पलटवार किया है। बारूदी ड्रोन की बारिश करके यूक्रेन को दहला दिया है। रूस के इस जवाबी हमले में यूक्रेन के 21 लोगों की मौत हो चुकी है। रूस ने यह हमला पुतिन पर हुए जानलेवा ड्रोन हमले के जवाब में किया है। दरअसल रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के राष्ट्रपति भवन क्रेमलिन पर बुधवार को ड्रोन से जानलेवा हमला हुआ था। हालांकि उस वक्त पुतिन क्रेमलिन में नहीं थे। लेकिन, हमले से रूस भड़क गया।

रूस ने हमले की चेतावनी दी थी

रूस ने बुधवार को ही चेतावनी देते हुए कहा था कि पुतिन पर जानलेवा ड्रोन हमले के बाद रूस भी जवाबी कार्रवाई का अधिकार रखता है। रूस ने गुरुवार को यूक्रेन की राजधानी कीव और देश के कई बड़े शहरों पर जोरदार हमले किए हैं। कीव, ओडेशा समेत कई शहरों में भीषण ब्लास्ट हुए हैं। यूक्रेन ने कहा है कि रूस की से ओर दर्जनों बारूदी ड्रोन हमले किए गए हैं।

भगवान नरसिंह की शोभायात्रा निकाली गई

चमकता राजस्थान

सुनेल। (धीरज गुप्ता)। राठौर तेली समाज सुनेल के तत्वावधान में गुरूवार को नरसिंह जयंती के अवसर पर पिड़ावा मार्ग से शोभायात्रा एवं कलशयात्रा बैण्डबाजे व ढोल नगारों के साथ शुरू हुई जो कस्बे के मुरलीधर मंदिर, छत्री चौक, होली खूंट, सदर बाजार, राममंदिर चौक, रंजा चौक होती हुई शिवमंदिर चौक में स्थित समाज के नेहरे में पंहुची। यंहा सामूहिक महाआरती व प्रसाद वितरण किया गया। शोभायात्रा में महिलाएं सिर पर कलश लेकर चल रही थी। वही नवयुवक ढोल की ताप पर नाचते हुए चल रहे थे।

मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजनान्तर्गत वर्ष 2023-24 हेतु अस्थाई मैरिट सूची जारी

चमकता राजस्थान, बीकानेर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली ने आज सचिवालय स्थित अपने कक्ष में विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना के तहत वर्ष 2023-24 के लिए प्रथम चरण में परीक्षावार एवं वर्गवार निर्धारित लक्ष्य 30000 सीटों के विरूद्ध 19315 अभ्यर्थियों की अस्थाई मैरिट सूची जारी की। उन्होंने बताया कि प्रथम चरण में आवेदन की अंतिम तिथि तक कुल 41512 ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्त हुए थे। विभाग द्वारा पात्र अभ्यर्थियों की एक सूची जारी कर दी गई है और शेष रही सीटों के लिए भी मैरिट सूची दूसरे चरण में जारी की जाएगी। जूली ने बताया कि जिन अभ्यर्थियों द्वारा ऑनलाइन आवेदन में किसी भी दस्तावेज को अपलोड किया गया है, उनका संबंधित जिलाधिकारियों द्वारा सत्यापन कर अनुमोदन किए जाने के पश्चात ही कोचिंग संस्थान पर उपस्थिति दी जाने का विकल्प प्रदर्शित होगा। जिला अधिकारियों द्वारा ऐसे आवेदन पत्रों का मेरिट सूची जारी होने के सात दिवस में सत्यापन किया जाना अनिवार्य होगा। उन्होंने बताया कि संबंधित कोचिंग संस्थानों द्वारा बायोमेट्रिक डिवाइस स्थापित कर चयनित अभ्यर्थियों की बायोमेट्रिक उपस्थिति दर्ज करवाया जाना अनिवार्य होगा।

सार समाचार

पालतू कुत्तों ने किया अटैक

मां-बेटे ने भागकर बचाई जान, शिकायत पर डॉग ऑनर ने दी धमकी

चमकता राजस्थान, जयपुर। जयपुर में पालतू कुत्तों के मां-बेटे पर अटैक करने का मामला सामने आया है। कुत्तों के हमला करने पर मां-बेटे ने भागकर अपनी जान बचाई। शिकायत करने पर डॉग ऑनर ने उल्टा धमकी दी। विश्वकर्मा थाने में पीड़िता ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। मामले की जांच स्ढ्ढ राजकुमार कर रहे है। पुलिस ने बताया कि मलहोत्रा नगर विश्वकर्मा निवासी आकांक्षा अग्रवाल (32) ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। वह पति संतोष कुमार अग्रवाल और 10 साल के बेटे के साथ मोजिका अपार्टमेंट में रहती है। आकांक्षा ने बताया कि अपार्टमेंट के फ्लैट में एक पड़ोसी ने अवैध तरीके से खतरनाक प्रवृति वाले दो कुत्ते पाल रखे है। अपार्टमेंट के लोगों को वह रेस्क्यू डॉग होना बताते है। 2 मई की रात करीब 9:15 बजे वह अपने बेटे के साथ सोसाइटी में टहल रही थी। टहलने के दौरान एक तरफ रेस्क्यू दोनों डॉग खुले हुए घूम रहे थे। दोनों कुत्तों ने उन्हें देखकर अचानक अटैक कर दिया। कुत्तों के हमले को देखकर दोनों मां-बेटे ने वहां से भागकर अपनी जान बचाई। चिल्लाने की आवाज सुनकर डॉग ऑनर ने दोनों कुत्तों को कंट्रोल करने की कोशिश की। कंट्रोल करने पर डॉग ऑनर को शिकायत की तो वह उल्टे धमकाने लगे। पीड़िता का कहना है कि रेस्क्यू दोनों कुत्ते पहले भी घर पर काम-काज करने वाली दो महिलाओं को काट चुका है। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

महंगाई राहत कैंपों का उठाएं लाभ

आमजन से मिले ऊर्जा मंत्री, सुनी समस्याएं

चमकता राजस्थान, बीकानेर। ऊर्जा मंत्री भंवर सिंह भाटी ने गुरुवार प्रात: अपने आवास पर आमजन से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने श्रीकोलायत सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए ग्रामीणों से महंगाई राहत शिविरों का लाभ उठाने का आह्वान किया। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री के गरीब और जरूरतमंद परिवारों पर महंगाई की मार नहीं पड़े, इसके मद्देनजर गांव-गांव और ढाणी-ढाणी में महंगाई राहत शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन शिविरों में आमजन को 10 योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है, जो कि उनके परिवार के बजट को बिगड़ने से बचाएंगी। उन्होंने कहा कि अनेक परिवारों को 8 से 9 योजनाओं तक के लाभ की गारंटी मिली है, जिससे ग्रामीणों ने राहत की सांस ली है। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों की समस्याएं सुनी तथा अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही के लिए निर्देशित किया। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार नेआम जनों के हितों का ध्यान रखते हुए योजना लागू की हैं। प्रत्येक वर्ग के लोगों को इनका लाभ मिल रहा है।

आई स्टार्ट इंस्पायर वर्कशॉप 6 को

स्टार्टअप को मिलेंगे सफलता के गुर

चमकता राजस्थान, बीकानेर। बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय में संचालित आई स्टार्ट नेस्ट इनक्यूबेशन सेंटर के आई स्टार्ट इंस्पायर वर्कशॉप 6 मई को प्रात: 11 से दोपहर 2 बजे तक आयोजित होगी। सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के संयुक्त निदेशक सत्येंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि बीकानेर के स्टार्टअप को भी अब बड़े शहरों की भांति स्टार्टअप इकोसिस्टम से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों से जुड़ने का मौका मिल रहा है। इसी श्रंखला में 6 मई को इनक्यूबेशन सेंटर में आई स्टार्ट की ओर से आयोजित कार्यशाला आयोजित होगी। स्टार्टअप को योरस्टोरी के स्पीकर्स व स्टार्टअप मेंटर से रूबरू होने का अवसर मिलेगा। उन्होंने बताया कि योरस्टोरी देश के अग्रणी ऑनलाइन मीडिया प्लेटफॉर्म में से एक है। जो भारत और दुनिया भर में उद्यमिता, स्टार्टअप कंपनियों और उभरती नवीन प्रौद्योगिकी से संबंधित कहानियों और समाचारों को कवर करता है। कार्यशाला में स्टार्टअप को स्पीकर्स और फाउंडर्स यह जानने का मौका मिलेगा कि किस प्रकार बेहतर प्रबंधन और सकारात्मक सोच से स्टार्टअप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आई स्टार्ट के मेंटर जयवीर सिंह शेखावत ने बताया कि स्टार्टअप्स के लिए यह कार्यशाला एक अच्छा अवसर है। इसमें उनको अपने स्टार्टअप के लिए फंडरेजिंग, मार्केटिंग रणनीति व स्टार्टअप शुरू करने से पहले की मौलिक तैयारी के बारे में जानने का मौका मिलेगा।

आज यहां लगेंगे शिविर

चमकता राजस्थान

भरतपुर, (राजवीर सिंह)। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की पहल पर आमजन को महंगाई से राहत देने के लिए आयोजित किए जा रहे महंगाई राहत कैंपों को लेकर आमजन में भारी उत्साह है। महंगाई राहत कैम्पों के अन्तर्गत 5 मई को उपखण्ड भरतपुर के ग्राम पंचायत झारौली, उपखण्ड कुम्हेर की ग्राम पंचायत बोरई एवं बावैन, उपखण्ड डीग की ग्राम पंचायत बरई एवं बंधाचौथ, उपखण्ड कामां की ग्राम पंचायत गढ़ी झीलपट्टी, उपखण्ड नगर की ग्राम पंचायत खखावली, उपखण्ड पहाडी की ग्राम पंचायत कठौल, उपखण्ड नदबई की ग्राम पंचायत करीली, उपखण्ड भुसावर की ग्राम पंचायत निठार, उपखण्ड वैर की ग्राम पंचायत चक धरसौनी, उपखण्ड बयाना की ग्राम पंचायत ब्रह्मवाद, उपखण्ड रूपवास की ग्राम पंचायत डुमरिया, उच्चैन की ग्राम पंचायत कुरका, उपखण्ड सीकरी की ग्राम पंचायत खोरी में प्रशासन गांवो के संग अभियान शिविरों का आयोजन किया जायेगा।

प्रशासन शहरों के संग अभियान

जिला कलक्टर आलोक रंजन ने बताया कि नगरपालिका कुम्हेर में 5 मई को वार्ड नम्बर 5 गुदडी मौहल्ला, डीग में वार्ड नम्बर 6 दारूकूटा मौहल्ला, नगर में वार्ड संख्या 14 एवं 15 अम्बेडकर भवन, सीकरी में वार्ड नम्बर 7 पंजाबी धर्मशाला, बयाना में वार्ड नम्बर 8 पक्की अथाई कोली पाडा, वैर में वार्ड नम्बर 5 अग्रवाल धर्मशाला, भुसावर वार्ड नम्बर 5 रणधीरगढ़ रोड अम्बेडकर भवन में प्रशासन शहरों के संग अभियान के शिविरों का आयोजन किया जायेगा।

वैर पोस्ट ऑफिस में नेटवर्क सर्वर नहीं आने से पोस्ट ऑफिस के उपभोक्ता परेशान

चमकता राजस्थान

वैर (राजवीर सिंह)। कस्बा वैर में भारतीय डाकघर उप पोस्ट ऑफिस नया बस स्टैंड पर नेटवर्क सर्वर नहीं आने के कारण जनता हो रही परेशान उप डाकघर मैं आम जनता के एक घंटे खड़े होने के बाद भी पोस्ट ऑफिस में कार्य एवं आम नागरिक के लेनदेन जमा राशि भी नहीं हो सकी नेटवर्क कम आने के कारण जिसमें जनता में काफी आक्रोश देखने को मिला नागरिकों को बैरिंग लौटना पड़ा जनता काफी परेशान रही डाकघर के कर्मचारियों द्वारा बताया गया कि यह सुविधा कई दिनों से परेशानी आ रही हैं काफी बार हमने प्रशासन को इस परेशानी के लिए भी अवगत करा दिया गया था लेकिन फिर भी नेटवर्क सही नहीं आने के कारण जनता को परेशानी हो रही है। किसी भी आम नागरिक का कोई भी कार्य बिना इंटरनेट सर्वर के नहीं हो सका है आम जनता को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। राजस्थान सरकार के आदेश अनुसार आज इंटरनेट सर्विस के माध्यम से सभी कारणों में कार्य होते हैं यह कार्य कार्यालय में इंटरनेट सर्वर का 24 घंटे उपलब्ध होने चाहिए जिससे की आम जनता को गर्मी के मौसम में बरसात के मौसम में परेशानी का सामना करना पड़े। दूर गांव से आने जाने वाले अधिक उम्र के बुजुर्ग लोगों के लिए परेशानी का कारण ना बने इस लिए सुविधाएं इंटरनेट सर्वर सही में होने चाहिए।

मनुष्य को भगवान की प्राप्ति हो सकती है, ऐसा शास्त्रों में लेख है

चमकता राजस्थान

धौलपुर (डॉ. रामदास तरुण ब्यूरो चीफ) आचार्य गोविंद सिंह मीणा ने कहा है कि मनुष्य को भगवान् की प्राप्ति हो सकती है ऐसा शास्त्रों में है?। निश्चय ही स्थूल आचार से उत्तरोत्तर सिद्धि प्राप्त कर हम सूक्ष्म आत्म- पश्रदेश में प्रवेश करते हैं। इस प्रक्रिया में हम चित्त हमारे पास एक सबसे बड़ा साधन हे जो हमको परमात्मा की ओर ले जा सकता है। विचार सागर ग्रंथ का पाठ करते हुए उन्होंने कहा कि चित्त का एक सिरा जगत् या शरीर से लगा है और दूसरा सूक्ष्म तत्त्व या आत्मा से लगा है। जगत् ज्यों-ज्यों हमारी दृष्टि से हटता जायगा आत्मा के मुकाबले में जगत् की स्थिति ज्यों-ज्यों गोण होती जायगी त्यों-त्यों चित्त का ढलाव आत्मा की ओर होता जायगा, और शुद्ध चित्त की अवस्था को ही हम आत्मप्रदेश में प्रवेश की अवस्था कहें तो हानि नहीं। जब ज्ञान और आचार की रगड़ से चित्त शुद्ध और बलिष्ठ होता है। आन्तरिक संघर्ष खत्म हो जाता है, तब मनुष्य चिरशांति का अनुभव करता है। इसका दूसरा नाम मोक्ष या परमात्मा- प्राप्ति है।परमात्म-प्राप्ति ओर आत्मा-प्राप्ति और आत्म-निष्ठा दोनों एक नहीं हैं । परमात्म-प्राप्ति प्रारम्भिक अवस्था है और उसमें निष्ठता अन्तिम या पूर्ण अवस्था है, जहांतक मनुष्य को पहुंचाना वेदान्तशा का मुख्य लक्ष्य है। इस अवसर पर बच्चूसिंह भगत,? रामदास मीणा टीचर, रामनिरंजन गर्ग, रामनिवास जारगा, सत्यप्रकाश सारस्वत उमेश सिंघल, रामनिवास शर्मा वरिष्ठ पत्रकार एसकेमंगल भीकमचंद बंसल आदि मौजूद थे।

विद्युत लाइनों की मरम्मत के चलते आज बजरंगगढ़ व जलवाड़ा क्षेत्र में बंद रहेगी विद्युत सप्लाई

चमकता राजस्थान

किशनगंज 4 मई उपखंड क्षेत्र के बजरंगगढ़ एवं जलवाडा मैं स्थित जीएसएस से निकलने वाले सभी फीडरों की विद्युत लाइनों की मरम्मत एवं रखरखाव के चलते आज शुक्रवार को विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी। विद्युत विभाग के सहायक अभियंता सुमित कुमार चौधरी ने बताया कि आज शुक्रवार को क्षेत्र के बजरंगगढ़ जीएसएस पर मरम्मत एवं रखरखाव के चलते यहां से निकलने वाले सभी 11 केवी फीडरों पर प्रात: 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी।वहीं क्षेत्र के जलवाडा स्थित जीएसएस पर विद्युत लाइनों की मरम्मत एवं रखरखाव के चलते जलवाड़ा जीएसएस से निकलने वाले सभी 11 केवी फीडरों की आज प्रात: 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी।

अखिल भारतीय बड़वाजी (राव) किक्रेट लीग 2023-24 का किशनगढ़ (अजमेर) में किया जा रहा है आयोजन : पूर्व छात्र संघ महासचिव लोकेश राव

चमकता राजस्थान

अराई/ शंकर लाल शमा..राजकीय महाविद्यालय किशनगढ़ की छात्र संघ के पूर्व महासचिव लोकेश राव ने जानकारी दी कि अराई उपखंड के ग्राम चौसला निवासी स्वर्गीय श्री उम्मेद सिंह जी रोड की पुण्य स्मृति पर क्रिकेट लीग प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है यह प्रतियोगिता मेरे सर के दादाजी को समर्पित करते हुए मुझे हर्ष है की मेरे सर के दादाजी ने भी अपने जीवन काल में सामाजिक सेवा करते हुए बालकों के हित में अनेक शुभ कार्य करके नाम कमाया था तथा मुझे भी इस योग्य बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा वह हमेशा मुझे शिक्षा एवं खेल के प्रति प्रेरित करते रहते थे तथा विद्यालय स्तरीय कॉलेज तर में जहां भी प्रतियोगिताएं होती वहां मुझे खेलने कूदने के लिए पूरा अवसर प्रदान करते हैं उन्हीं की स्मृति मेंकिशनगढ़ (जिला-अजमेर) राजस्थान सहित अन्य प्रदेशों केसमाज के सभी सम्मानित नागरिकों से करबद्ध अनुरोध है कि युवा इकाई द्वारा आयोजित इस क्रिकेट लीग में आप सादर आमंत्रण है। जिसमें भविष्य भाग लेकर इस को सफल बनाने में आपका अमूल्य योगदान प्रदान करावे कार्यक्रम में प्रथम दिन आगंतुकों का परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा एवंदिनांक शनिवार, 6 मई 2023 को अखिल भारतीय क्रिकेट लीग की जानकारी कराते हुए इसलिए काउद्घाटन दिनांक- रविवार, 7 मई 2023 स्थान किशनगढ़, (जिला-अजमेर) राज स्थान मैं किया जाएगा इस संबंध में समस्त समाज बंधुओं से अनुरोध है कि किसी भी प्रकार की कठिनाई हो तोआयोजकलोकेश राव (पूर्व छात्र संघ महासचिव) से जानकारी प्राप्त कर समस्या का निदान करें सभी समाज बंधुओं को सादर निमंत्रण कार्ड प्रेषित किए जा रहे हैं जिसमें पूरा विवरण है।

जेईई मेंस में किशनगढ़ निवासी हिमांशु को मिली 4106वीं रैंक जेईई मेंस मे प्राप्त कर अपने परिवार एवं विद्यालय का नाम रोशन किया प्रधानाचार्य-पवन कुमावत

चमकता राजस्थान किशनगढ़/ शंकर लाल शर्मा. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय किशनगढ़ जिला अजमेर के होनहार छात्र हिमांशु दाधीच ने जेईई मेंस परीक्षा में 99.65 परसेंटाइल अर्जित कर 4106वीं रैंक प्राप्त कर विद्यालय एवं परिवार को गौरवान्वित किया। प्रधानाचार्य पवन कुमावत एवं समस्त विद्यालय परिवार ने छात्र की उपलब्धि पर प्रसंता प्रगट की। छात्र हिमांशु ने सफलता का श्रेय दादा भंवरलाल शर्मा दादी रामेश्वरी देवी शर्मा, पिता कवि दामोदर दाधीच एवं माता गुड्डी शर्मा सहित प्रधानाचार्य पवन कुमावत एवं विषयाध्यापक लोकेन्द्र शर्मा, नरेन्द्र पुरोहित विमलेश सोमानी, राजेश बडोलिया, डॉ. शिखा एन्थोनी, कन्हैयालाल भूतड़ा सहित शाला स्टाफ को दिया। छात्र हिमांशु को कविता पाठ, अभिनय एवं क्रिकेट खेलने में रूचि है। हिमांशु की परिणाम यह सिद्ध कर दिया कि प्रतिभा किसी की गुलाम नहीं होती है जो मेहनत करते हैं वह निश्चित रूप से मंजिल प्राप्त करते हैं परिश्रम करने वालों के लिए अपनी मंजिल प्राप्त करना कोई बड़ी बाधा नहीं होती है।

महाराज का विहार, जैन समाज के लोगों की विदाई के समय भर आई आंखे

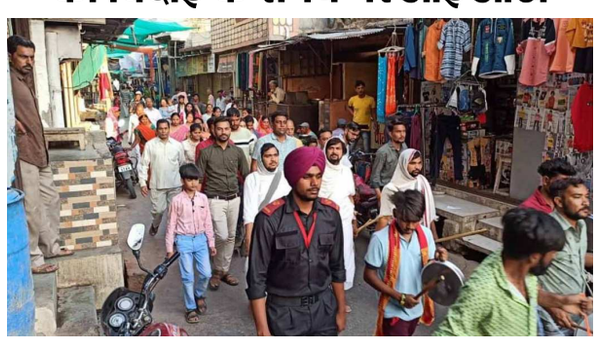

चमकता राजस्थान

सुनेल। (धीरज गुप्ता)। कस्बे में गुरूवार शाम को संत बंधु त्रिपुटी अगमरत्न सागर महाराज, प्रशमरत्न सागर, वज्ररत्न सागर महाराज का विहार हुआ। वह कस्बे के छत्री चौक में स्थित 500 वर्षो पुराना चंद्रप्रभू जैन श्वेताम्बरमंदिर की पांच दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम को लेकर यहां पांच दिन से थे। महाराज श्री ने भवानीमंडी के लिए विहार किया इस समय जैन अनुयाई की आंखें भर आई।

शादी के लिए धर्म बदला, लड़की ने किया इनकार, आहत युवक ने किया सुसाइड

चमकता राजस्थान, राजसमंद। राजसमंद में प्रेम जाल में फंसाकर शादी के लिए जबरन धर्म परिवर्तन कराने और ठगने के बाद युवक के सुसाइड करने का मामला सामने आया है। राजसमंद के मोही निवासी युवक के पिता ने बुधवार को उदयपुर में डीआईजी को शिकायत पत्र लिखकर कार्रवाई करने की मांग की है। जानकारी के मुताबिक राजसमंद के कांकरोली थाना इलाके के माही गांव के युवक हर्षित (23) पुत्र कैलाश चंद्र आचार्य ने 7 अप्रैल को जहर पी लिया था। हर्षित को उदयपुर के जिला हॉस्पिटल रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी 13 अप्रैल को मौत हो गई थी। हर्षित के पिता कैलाश चंद्र बुधवार को उदयपुर में डीआईजी ऑफिस पहुंचे और 10-12 लोगों के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने की शिकायत देकर कठोर कार्रवाई की मांग की है। कैलाश चंद्र ने बताया कि हर्षित को एक लड़की ने अपने प्रेम जाल में फंसा लिया था। लड़की की मां को भी इस प्रेम प्रकरण के बारे में जानकारी थी। शादी का झांसा देकर लड़की और उसके परिजनों ने हर्षित से स्कूटी, मोबाइल और रकम ऐंठ लिए। इसके बाद हर्षित से जबरन धर्म परिवर्तन करा लिया। धर्म परिवर्तन के बाद युवती ने शादी से इनकार कर दिया। इससे हर्षित टेंशन में आ गया और उसने जहर पीकर जान दे दी। युवक के माता-पिता ने प्रेम जाल में फंसाने, जबरन धर्म परिवर्तन कराने, ठगने और सुसाइड के लिए मजबूर करने का मामला दर्ज कराया है। युवक के पिता ने बताया कि हर्षित की मौत के बाद उसके मोबाइल से कुछ रिकॉर्डिंग्स मिली तो पूरे मामले का पता चला। हर्षित की मां लाड़ कंवर ने राजसमंद पुलिस अधीक्षक के नाम कांकरोली पुलिस थाने में परिवाद पेश किया जिसमें बताया कि उनके बेटे हर्षित से लड़की ने पैसों की भी डिमांड की। उन्होंने बताया कि हर्षित उर्फ बंटी से 6 से 7 लाख रुपए तक ऐंठे गए। युवती के भाई मुस्तफा को हर्षित ने 32 हजार रुपए का मोबाइल भी दिलाया था। आरोपी परिवार ने परिवार समेत हर्षित के मर्डर की धमकी दी। बहन पूजा ने बताया कि भाई की मौत के 5 दिन बाद 18 अप्रैल को उसका फोन चेक किया। फोन पर लॉक लगा हुआ था।

शहीद सेवड़ा की प्रतिमा के समक्ष ऊर्जा मंत्री ने अर्पित की पुष्पांजलि

चमकता राजस्थान, बीकानेर। ऊर्जा मंत्री भंवर सिंह भाटी ने सेवड़ा में शहीद तेजमल सिंह सेवड़ा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि देश की सेवा में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वालों के प्रति हमें कृतज्ञ रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि शहीद तेजमाल सिंह सेवड़ा की शहादत को आने वाली पीढ़ियां याद रखेगी। उनकी प्रतिमा स्थल पर आने वाले लोगों को इनसे प्रेरणा मिलेगी।

राजस्थान आवासन मण्डल
हमारा प्रयास- सबको आवास
STATE SERVICES RESIDENCY PHASE-II
स्ववित्त पोषित योजना
सेक्टर-19, प्रताप नगर योजना, जयपुर
बहुमंजिला (2B+G+12) फ्लैट्स के पंजीकरण

आवासीय योजना की प्रमुख स्थलों से दूरी
- एन.आर.आई. कॉलोनी 0.5 कि.मी.
- जगतपुरा रेलवे स्टेशन 3.0 कि.मी.
- ए.आई.एस. रेजीडेन्सी 0.5 कि.मी.
- जवाहर सर्किल 5.0 कि.मी.
- अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा 2.5 कि.मी.

आय वर्ग	फ्लैट्स संख्या	अनुमानित निर्मित क्षेत्रफल (वर्गफीट)	अनुमानित लागत (रुपये लाख)
उच्च आय वर्ग-प्रथम	3 (3 BHK)	3335.00	110.82
उच्च आय वर्ग-द्वितीय	6 (3 BHK)	2405.00	80.32
उच्च आय वर्ग-तृतीय	41 (3 BHK)	1870.00	59.99

ऑनलाइन आवेदन अवधि: 02.05.2023 से 25.05.2023 तक
RERA Reg. No. RAJ/P/2022/1996 https://rera.rajasthan.gov.in
विस्तृत जानकारी हेतु मण्डल की वेबसाइट देखें।
www.urban.rajasthan.gov.in/rhb
सम्पर्क सूत्र
आवासीय अभियंता, खण्ड- XII, फोन नं. 0141-2790270, मो. नं.: 9829180301
परियोजना अभियंता (व.) खण्ड-XII, फोन नं. 0141-2790270, मो. नं.: 9983993925
प्रभारी अधिकारी- विपणन, फोन नं. 0141-2741950, मो. नं.: 7665022444
आवेदन पत्र मण्डल की वेबसाइट www.urban.rajasthan.gov.in/rhb पर ऑनलाइन भरे जाएंगे। इस हेतु आवेदन पत्र की कीमत रुपये 354/- पंजीकृत राशि में सम्मिलित कर सीधे ही अपने बैंक के माध्यम से /क्रेडिट/डेबिट कार्ड के माध्यम से जमा करवाया जा सकता है या चालान प्रिन्ट कर AU Small Finance बैंक के खाता संख्या 1000000000000177 IFSC Code: AUBL0002207 में किसी भी बैंक से जमा करवा सकते हैं।
राज.संवाद/सी/000/2023-24
आवास भवन, जनपथ, ज्योति नगर, जयपुर-302005

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए किरण प्रिंटर्स, किरण प्रिंटर्स के लिऐ एमबी प्रिंटर्स, सी- 74 सुदर्शनपुरा, जयपुर से मुद्रित एवं 141 ए, कटेवा नगर, न्यू सांगानेर रोड, राधा गोविन्द पथ, श्याम नगर, सोडाला, जिला-जयपुर (राजस्थान)-302019 से प्रकाशित। सम्पादक: अभय सिंह चौहान, मोबाइल: 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)

प्रेस दिवस पर गौवंश को खिलाया गुड़, पत्रकारों का किया बहुमान

चमकता राजस्थान

बाप (कविकांत खत्री)। विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर बाप नगरपालिका मुख्यालय पर पत्रकार समूह ने ऋषि गोपाल गोशाला में गौवंश को गुड़ खिलाकर आशीर्वाद लिया। इस मौके वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार अखेराज खत्री ने कहा कि पत्रकार समाज की आँखे है। ये हर सुख दुख

में समाज के साथ रहता है। बदलते परिवेश में प्रिंट मीडिया का प्रभाव कुछ कम अवश्य हुआ, मगर पत्रकारिता पर कोई असर नही हुआ। प्रेस की आजादी पर बोलते हुए खत्री ने कहा कि हमे निडर होकर समाज के सामने आ रही बाधाओं को प्रेस के माध्यम से उसके सही समाधान के लिए सतत प्रयास करने चाहिए। देश में पत्रकारों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार पर कहा कि कानून बन गए, पर अमल में नही आये। आये दिन पत्रकारों पर हमले हो रहे है। सरकार पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। कस्बो व गावो में चौथे स्तम्भ के रूप में काम करने वाले पत्रकार को शहरी पत्रकार की तरह सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए। पत्रकार बिना पक्षपात खबरों के लिए काम करें। सभी पत्रकारों का गोशाला प्रबंधन समिति ने बहुमान किया। वही पूर्व उप प्रधान जगदीश पालीवाल ने शाल ओढा व मिष्ठान पैकेट देकर पत्रकारो के उज्जवल भविष्य की कामना की।नगरपालिका अध्यक्ष लीला देवी जगदीश पालीवाल ने स्नेह भोज भी दिया। इस मौके पूर्व सरपंच जगदीश पालीवाल, माहेश्वरी समाज अध्यक्ष अशोक चाण्डक, गो शाला अध्यक्ष धूड़चन्द, गिरधारी हुडडा, मास्टर तोलाराम, समाज सेवी विजय कुमावत, शिक्षक नेता मांगीलाल कुमावत, सीताराम, गो भक्त मनोज लोहिया आदि उपस्थित थे।

शिविर का जायजा लेकर कार्ड किए वितरित

चमकता राजस्थान

बाप (कविकांत खत्री)। राज्य सरकार के निर्देशानुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बाप में आयोजित हो रहे स्थाई महंगाई राहत शिविर का गुरुवार को नगरपालिका बाप के उपाध्यक्ष गोपाल भट्टड़ ने जायजा लिया।

भट्टड़ ने लाभार्थियों को मुख्यमंत्री गारंटी कार्ड का भी वितरण किया। इस दौरान राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी आमजन को दी गई। इस मौके वरिष्ठ कांग्रेस नेता मोजदीन तेली, नंदकिशोर तंवर, देवीलाल पालीवाल, हबीब मैहर, शुभम रामावत आदि उपस्थित थे।

जांबा में शिविर आयोजित

चमकता राजस्थान

बाप (कविकांत खत्री)। राज्य सरकार के निर्देशानुसार शुक्रवार को ग्राम पंचायत जांबा मुख्यालय पर प्रशासन गांवों के संग अभियान व महंगाई राहत कैंप का आयोजन हुआ। कैंप में ब्लॉक स्तरीय विभागीय

अधिकारियों ने उपस्थित रहकर आमजन के कार्य संपादित किए। इस दौरान प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य महेश व्यास, विकास अधिकारी प्रवीण सिंह राठौड़, तहसीलदार रमजान खान सहित जनप्रतिनिधि व ग्रामीण उपस्थित थे।

कुम्हेर गेट से निकाली जाएगी तथागत बुद्ध की शोभायात्रा

चमकता राजस्थान

भरतपुर (राजवीर सिंह)। 2567 वी बुद्ध जयंती 5 मई 2023 को भरतपुर शहर में बुद्धिस्ट समाज बुद्ध जयंती समारोह का आयोजन कर रहा है इसमें प्रात: सुबह दो बुद्ध प्रतिमा की स्थापना की जा रही है एक प्रतिमा पुष्प वाटिका चांदमारी नगला पर रमेश चंद वर्मा के फार्म हाउस

में तथा दूसरी प्रतिमा विजय नगर में अतर सिंह फॉरेस्टर निवास पर स्थापित की जा रही है दोनों ही प्रतिमा की स्थापना बुद्धरीति से की जाएगी प्रतिमा स्थापना के बाद धम्माचारी शरणवीर एवं भिक्कू संघ द्वारा धम्म देशना एवं बुध प्रवचन होंगे अंत में पायस वितरण होगा सायकालीन सत्र मे 4.00 से कुम्हेर चौराए से तथागत बुद्ध की झांकी निकाली जाएगी जिसमें सभी बुद्धिस्ट लोग महिलाएं एवं बच्चे सफेद पोशाक में सम्मिलित होंगे यह झांकी कुम्हेर चौराए से प्रारंभ होकर लक्ष्मण मंदिर, गंगा मंदिर से मथुरा गेट होती हुई अंबेडकर भवन पटपरा मोहल्ला के सामने समापन होगी इसके बाद आम सभा के रूप में त्रिशरण पंचशील बुद्ध प्रवचन एवं संगीत संध्या की जाएगी इसके पश्चात प्राइस वितरण किया जाएगा इस मौके पर धम्माचारी श्रवण वीर, सतीश स्टोन, शिवचरण लाल मधुकर,राम खिलाड़ी, पूरन सिंह, विजय सिंह, अमर सिंह, अमर सिंह रामकुमार, विजय सिंह हथेनी, शिशुपाल सिंह, भवर सिंह, ज्ञान सिंह मौजूद थे।

मंडल रेल प्रबंधक आनन्द स्वरूप ने आगरा मंडल के आगरा छावनी-महवा मंडावर खंड का निरीक्षण किया

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण)। उत्तर मध्य रेलवे आगरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक आनंद स्वरूप द्वारा आगरा छावनी-महवा मंडावर खंड का निरीक्षण किया गया। जिसमें आगरा मंडल के अछनेरा स्टेशन, खेड़ली स्टेशन तथा महवा मंडावर स्टेशन का निरीक्षण किया। नरीक्षण के दौरान आनन्द स्वरुप ने स्टेशन पर उपलब्ध यात्री सुविधाओं, सर्कुलेटिंग एरिया, प्लेटफार्म, पैदल पुल, स्टेशन रिकॉर्ड एवं दस्तावेजों, बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने स्टेशन बिल्डिंग को सौन्दर्यकरण पर नए डिजाईन सहित हरित बनाने के लिए ग्रीन पैच तैयार करने पर समीक्षा की। सर्कुलेटिंग क्षेत्र का निरीक्षण करते हुए सफाई व्यवस्था

के स्तर को बढाए जाने पर जोर दिया इसी क्रम में पपरेरा-नदबई खंड के पैंथरा मेजर ब्रिज का निरीक्षण किया।

महवा मंडावर स्टेशन,खेरली स्टेशन तथा अछनेरा रेलवे स्टेशन के निरीक्षण का उद्देश्य उक्त स्टेशन के अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत शामिल किये जाने के उपरान्त उच्चीकरण तथा उत्तरोत्तर विकास हेतु क्रमबद्ध योजना तैयार किया जा रहा है। ज्ञात हो की आगरा मंडल में अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत 15 स्टेशनों का उच्चीकरण तथा विकास किया जाना है जिसमें अछनेरा स्टेशन, महवा मंडावर और खेरली रेलवे स्टेशन को भी सम्मिलित किया गया है। इस विषय में अधिकारियों से मास्टर प्लान पर चर्चा की, और आवश्यक दिशा निर्देश दिए इस अवसर पर मुख्य प्रोजेक्ट प्रबंधक गति शक्ति श्री कमलेश कुमार, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अमन वर्मा,वरि. मंडल इंजीनियर द्वितीय/ विपिन कुमार, वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता सामान्य/ पी पी शर्मा, वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता टीआरडी/ प्रवीण कुमार, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक (समन्वय) हृषिकेश मौर्या, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक (जीएसयू) कुलदीप मीना, उप मुख्य अभियंता (जीएसयू) होतम सिंह,वरिष्ठ मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियंता (संकेत) प्रदीप सोनी,मण्डल संरक्षा अधिकारी एस एस मीना, उप मुख्य संकेत एवं दूरसंचार अभियंता (जीएसयू) सुबोध राजपूत एवं अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के राजाखेड़ा विधानसभा क्षेत्र के मरैना में आगामी 7 रविवार को होने वाली विशाल जनसभा

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण)। जिले के राजाखेडा उपखंड में कार्यक्रम को देखते हुए आयोजन के लिए चयनित स्थल इंद्रावली मोड़ मरैना पर की जा रही तैयारियों का निरीक्षण क्षेत्रीय राजाखेड़ा विधायक रोहित बोहरा द्वारा सहित विभागीय अधिकारियों और कांग्रेस नेताओं ने किया। विधायक रोहित बोहरा ने सभी अधिकारियों को सौंपे गए दायित्वों का निर्वहन करने और समारोह के दौरान किसी भी तरह की अव्यवस्था न हो, इस पर ध्यान देने के निर्देश दिए अधिकारियों को जिस सेक्टर के लिए तैनात किया गया है, वहां की संपूर्ण व्यवस्था की जिम्मेदारी उन्हीं

की होगी और साथ ही उन्होंने तैयार किए जा रहे हेलीपेड, सभा स्थल, पार्किंग आदि का भी निरीक्षण किया और उचित समय पर कार्य संम्पूर्ण करने के भी निर्देश दिये साथ ही विधायक बोहरा ने कहा कि कार्यक्रम में प्रदेश प्रभारी सुखविंदर रंधावा, प्रदेश अध्यक्ष कांग्रेस गोविंद डोटासरा, राज्य सरकार के कैबिनेट मंत्री चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीना, ऊर्जा मंत्री महेंद्रजीत मालवीय, जलसंसाधन मंत्री महेश जोशी, पीडब्लूडी मंत्री भजनलाल जाटव, खेल मंत्री अशोक चांदना, सिचाई मंत्री भवरसिंह भाटी, सचिव कांग्रेस अमृता धवन, डीडवाना विधायक चेतन डूडी, सवाईमाधोपुर विधायक दानिश अबरार सहित कई प्रदेश पदाधिकारी कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे। और राजाखेड़ा की जनता जनार्दन के लिए कई महत्वपूर्ण जनकल्याणकारी योजनाओं का शुभारंभ करेंगे। और साथ ही बताया कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये कांग्रेस कार्यकर्ताओं को अलग अलग ज़िम्मेदारी सौपीं गई है। इस मौक़े पर ब्लॉक महासचिव जैकी बंसल, संगठन महामंत्री संतोष सिंघल, ब्लॉक प्रभारी मुनेश सिंघल, मूलसिंह तोमर,युवा नेता वैभव गोयल, रवि सिकरवार, गजेंद्र मुद्गल, मोहन बघेल सहित कई कांग्रेस कार्यकर्ता एवं अधिकारी मौजूद रहे।

बोर बेल के गहरे खड्डे में भरे पानी में डूबने से दो बच्चों की मृत्यु, पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंपा

चमकता राजस्थान

भुसावर (राजवीर सिंह)। थाना इलाके के गांव बारौली में गुरुवार को दोपहर बाद गांव के पास एक बौरवेल के गहरे खड्डे में दलदल भरे पानी मे डूब जाने से दो किशोरों की मौत हो गई। ग्रामीण जनों ने घटना की सूचना तुरंत भुसावर पुलिस को दी। सूचना पाकर भुसावर थानाधिकारी मदन लाल मीणा मय पुलिस बल के घटना स्थल गए घटना की जानकारी दी गई।

भुसावर थानाधिकारी मदन लाल मीणा ने ग्रामीण जनों के सहयोग से बोरबेल के गहरे खड्डे में डूबे दोनो किशोरों को बाहर

निकलवाया और दोनो मृत बच्चों को भुसावर अस्पताल की मोर्चरी में पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

गांव के पूर्व सरपंच देशराज जाटव ने बताया कि गांव बारोली निवासी 5 बालक खेत में बकरी चराने गए थे जिनमे से दो चचेरे भाई, अतुल और मोहित बोरवेल के खड्डे में भरे हुए पानी में नहाने उतर गए और दलदल भरे पानी में फसने से उनकी मौत हो गई। अन्य बच्चो के आवाज लगाने से गांव के लोग वहा पहुंचे और बच्चो को पानी से बाहर निकाला। अतुल 16 साल पुत्र छोटेलाल 6वीं कक्षा में पढ़ता था और मोहित 15 साल पुत्र महिंद्र कक्षा 9 वीं का विधार्थी था। मोहित के पिता महिंद्र मजदूरी करता है जबकि अतुल के पिता भिवाड़ी में एक प्राइवेट कंपनी में काम करते है जो गांव में मौजूद नहीं थे। अचानक पैर फिसल जाने के कारण दोनो बच्चे गहरे पानी में डूब गए और दोनो की डूब जाने से घटना स्थल पर मृत्यु हो गई। इस घटना के बाद गांव बारौली में शोक की लहर छा गई है। इस घटना के बाद गांव बारौली में माहौल गमगीन हो गया। इधर भुसावर पुलिस ने मृतक दोनो नाबालिक बच्चों का पोस्टमार्टम करा कर शव परिजनों को सौंप दिया।

श्रीमद् भागवत कथा के उपलक्ष्य में निकाली गई कलश यात्रा

चमकता राजस्थान

भुसावर (राजवीर सिंह)। कस्बे के राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल के खेल मैदान पर आज गुरुवार को कलश यात्रा के साथ संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान का शुभारंभ धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ हुआ। कथा से पूर्व पार वाले हनुमान जी मंदिर से कलश यात्रा का पूजन जगदीश जी श्री धाम गोवर्धन वालों ने मंत्रोच्चारण से किया गया। कलश यात्रा पारवाले हनुमान जी परिसर से वैण्ड वाजों के साथ मंदिर से प्रारंभ होकर हिंडौन रोड, चौर का मंदिर, पहाड़िया मोहल्ला, कानूनगो मौहल्ला, पुरानी अनाज मंडी, मैन बाजार, बस स्टैंड होते हुए कथा स्थल राजकीय सीनियर सेकेंडरी

के खेल मैदान मैं स्थित विशेष रथ में थियेटर पर पहुंची। कलश यात्रा में शामिल महिलाएं रंग-बिरंगे परिधान पहनकर सिर पर मंगल कलश धारण कर श्री राधे राधे कृष्णा कृष्णा राधे राधे के गीत गाते हुए चल रही थी।

वहीं कलश यात्रा का कस्बा वासियों ने पुष्प वर्षा, आरती उतार कर, जलपान करा कर स्वागत किया। कलश यात्रा में परीक्षित बने श्रीराम गौशाला के संचालक देवेंद्र कुमार पाण्डेय ने जानकारी देते हुए बताया कि श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ को जीवना कार्यशाला कहा जाता है। भागवत में संसार के सभी प्रकार के भव रोगो की औषधियों का खजाना छुपा हुआ है यह एक ऐसा कार्यक्रम है कि जो किसी जाति विशेष, वर्ग विशेष, धर्म विशेष, यह संप्रदाय विशेष का कार्यक्रम नहीं है। यहां विश्व के सभी धर्मों, संप्रदायों के लोगों का स्वागत है। और यह एक ऐसी कार्यशाला है जिसमें श्रीमद् भागवत के सूत्रों की शिक्षा के साथ उन्हें जीवन में उतारने का आसान उपाय थिएटर में एक ऐसी जगह धरा है जिससे सुनते समय व्यक्ति उठना भूल जाता है।

बसेड़ी उपखंड की ग्राम पंचायत बरई में संजय पुरी मंदिर के पास

25 करोड़ की लागत से बन रहे एनिकट का एससी आयोग अध्यक्ष बसेड़ी विधायक खिलाड़ी लाल बैरवा द्वारा बुधवार को शिलान्यास

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण)। जिले के बसेडी उपखंड में 25 करोड़ रुपये की लागत से वन रहे। बसेडी विधायक द्वारा शिलान्यास इस कार्यक्रम में अशोक सेंगर द्वारा विधायक खिलाड़ी लाल बेरवा, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष रामखिलाड़ी शर्मा, बद्रीसिंह परमार, ब्राह्मण समाज अध्यक्ष मायाराम शर्मा, पूर्व प्रधान उदयभान सिंह, पूर्व जिला परिषद सदस्य दीनदयाल पाठक सहित उपस्थित अतिथियों का माला एवं साफा पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया गया। ग्रामीणों ने बताया

कि यह ग्रामवासियों की बहुत लंबे समय से मांग थी, इस विषय को लेकर कई बार आवाज उठाई गयी और सरकार को अवगत करवाया था।

जिसके बाद विधायक बैरवा ने लोगो की समस्या को देखते हुए यह ऐतिहासिक निर्णय लिया। विधायक खिलाड़ी लाल बैरवा ने ग्रामीणों से कहां के विकास के कार्यों के बीच कोई वाधा आपके सामने नहीं आने दी जाएगी. राज. सरकार लगातार आम जनों के हितों को ध्यान रखते हुए विकास के कई काम विधानसभा क्षेत्र में कराए जा रहे हैं. विकास कार्य में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी।पूर्व प्रधान उदय भान सिंह ने कहा कि बसेड़ी विधानसभा में बसेड़ी विधायक द्वारा अब तक सबसे ज्यादा विकास कार्य कराए गए हैं विधायक के अथक प्रयासों से ही बसेड़ी रीको इंडस्ट्रीज एरिया, महाविद्यालय, अस्पताल सहित अन्य कई महत्वपूर्ण विकास कार्य कराए हैं।

रणजीत सिंह सोडाला ने पदक विजेताओं को पहनाया मेडल

चमकता राजस्थान

जयपुर। जयपुर जिला बॉक्सिंग संघ की ओर से आयोजित तीन दिवसीय जिला स्तरीय सब जूनियर,जूनियर एवं यूथ बालक बालिका बॉक्सिंग प्रतियोगिता के दूसरे दिन बॉक्सिंग खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। जिला बॉक्सिंग संघ के अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह

चौहान एवं सचिव नाथूलाल निर्वाण ने बताया आज जिन खिलाड़ियों के फाइनल मुकाबले हुए उनमें समस्त पदक विजेता खिलाड़ियों को ओलंपियन राम सिंह, रणजीत सिंह सोडाला, भानु प्रताप सिंह, मान सिंह, डॉ यशपाल भाटी, गोविंद सिंह, उषा देवी, पुनीत कर्णावत, तेज सिंह, सुरेंद्र सिंह, मदन देगड़ा, राजेश चौधरी, महेंद्र लूणीवाल ने मेडल पहनाया एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

पं. दीनदयाल उपाध्याय विचार संघ के प्रदेश अध्यक्ष पालीवाल एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सम्मानीय सदस्य राजेंद्र बाहेती का किया स्वागत अभिनंदन

चमकता राजस्थान

किशनगढ़ (शंकरलाल शर्मा)। अजमेर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार संघ भारत की नगर कार्यकारिणी ने एक सादा समारोह का आयोजन किया गया जिसमें संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य राजेन्द्र बाहेती और प्रदेश अध्यक्ष अनिल पालिवाल का दुपट्टा ओढा कर

माल्यार्पण के साथ बड़े हर्षोल्लास के साथ स्वागत-अभिनंदन किया गया। स्वागत एवं अभिनंदन समारोह में नगर अध्यक्ष धर्मेन्द्र पाटनी,नगर मंत्री नंद किशौर सैनी व प्रदेश महामंत्री महेन्द्र नैय्यर के साथ प्रबुद्ध नागरिक गण एवं अन्य कार्य कर्ता समारोह में उपस्थित रहेसभी ने अनिल पालीवाल व राजेन्द्र बाहेती को अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनायें दी तथा उज्जवल भविष्य की कामना की।

जिला कलक्टर ने ढीकवानी एवं खैराली में किया निरीक्षण

चमकता राजस्थान

बारां (सुमरन सिंह)। जिला कलक्टर नरेन्द्र गुप्ता ने गुरूवार को जिले के उपखंड शाहबाद की ग्राम पंचायत ढीकवानी एवं उपखंड बारां की ग्राम पंचायत खैराली में महंगाई राहत शिविरों का निरीक्षण करते हुए कहा कि राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप शिविर में आने वाला कोई

भी पात्र व्यक्ति लोक कल्याण की योजनाओं के लाभ से वंचित नही रहना चाहिए। उन्होंने महंगाई राहत कैंप में विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई स्टॉल्स, आमजन को दी जा रही सेवाओं, रजिस्ट्रेशन आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी ली। इस मौके पर उन्होंने ढीकवानी में दिव्यांग लाभार्थी को ट्राईसाईकल एवं गारंटी कार्ड प्रदान कर लाभान्वित किया। शिविर में अन्य लाभार्थियों को भी गारंटी कार्ड प्रदान कर लाभान्वित किया गया।

वैर एसएचओ प्रेम सिंह भास्कर की बड़ी कार्यवाही : पीएनबी बैंक के मास्टर माइंड को किया गिरफ्तार

चमकता राजस्थान

वैर (राजवीर सिंह)। गत दिनों वैर में पीएनबी बैंक के लुटेरों को लेकर वैर थाना पुलिस ने एसएचओ प्रेम सिंह भास्कर के नेतृत्व में बड़ी कार्यवाही की है। वैर में पीएनबी बैंक के लुटेरों को पहले वैर पुलिस ने

गिरफ्तार कर थाना प्रभारी प्रेम सिंह भास्कर ने आमजन में एक विश्वाश के प्रति भरोसा कायम किया है। थाना प्रभारी प्रेम सिंह भास्कर ने बताया कि हमारी टीम हमेशा अपराधियों के प्रति अंकुश लगाना है। में चाहता हूं कि पूरा वैर क्षेत्र अपराध भय मुक्त हो।

महंगाई राहत कैंप में लालाराम बलेसरा के नेतृत्व में अधिकारियों का स्वागत किया

चौमूं (दीपचंद शर्मा) चमकता राजस्थान। कुशलपुरा, बांसा में महंगाई राहत कैंप में लालाराम बलेसरा ने शिवर प्रभारी एवं उपखण्ड अधिकारी चोमू का व पूजा यादव तहसीलदार का व विकास अधिकारी पंचायत समिति गोविंदगढ़ मीणा का माला व साफा पहनाकर स्वागत किया इस मौके पर लालाराम बलेसरा ब्लांक कांग्रेस अध्यक्ष चौमूं, प्रभात पंचोली, रामेश्वर बराला पुर्व सरपंच, मांगी लाल पंचोली, महादेव बराला, घनश्यामशर्मा, छीतर मल पंचोली व ग्राम वासियों दुवारा शिवर का लाभ लिया और ग्राम वासियों दुवारा स्वागत किया गया।

मुस्लिम समाज बाड़ी द्वारा आज रखी जायेगी ईदगाह की नींव

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण)। धौलपुर जिले के बाड़ी शहर में शुक्रवार को बाद नमाजें जुमा 2 बजकर 15 मिनट ईदगाह की नीव रखी जाएगी जानकारी देते हुए मुस्लिम समाज बाड़ी के अध्यक्ष सैफ सईद खान द्वारा बताया गया की बाड़ी उपखंड अधिकारी के नाम तहसीलदार

पुरुषोत्तम जी को पत्र के माध्यम से आगवत कराया की मुस्लिम समाज बाड़ी के लिए ईदगाह का शिलान्यास कार्यक्रम शुक्रबार को रखा गया है। इस प्रोग्राम में बड़ी संख्या में समाज के लोग एकत्रित होंगे। समाज के अध्यक्ष सैफ सईद खान द्वारा समाज के लोगों से अपील की जाती है कि ज्यादा से ज्यादा तादाद में इस कार्यक्रम में शामिल हो। कार्यक्रम का आयोजन बसेड़ी रोड के पास होगा इस दौरान मुस्लिम समाज अध्यक्ष सैफ सईद खान पूर्व नगर पालिका चेयरमैन इरफ़ान अहमद, अध्यापक अयूब खान, अंसार खान, अध्यापक जिया उल हक, यूसुफ सरदार खान।

विधिक साक्षरता एवं जागरूकता का दिया संदेश

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण)। जिले में चलाए जा रहे। भारत सरकार के न्याय विभाग एवं ज़िला विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से सरमथुरा ब्लॉक् की पंचायत पाबैनी के गांव सुरारी कला में सिकोइडिकोंन संस्था द्वारा विधिक साक्षरता एवं जागरूकता कैम्प् का

आयोजन किया गया जिसमें बच्चों महिलाओं और वृद्धजनों के कानूनी अधिकारों व इनके लिए चल रही सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में युवा दीपूराज ने बालविवाह, बाल श्रम एवं महिला हिंसा से संबंधित कानूनों के बारे में बताया तथा संस्था के कार्यक्रम समन्वयक गोपाल राम वर्मा ने पालनहार, प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना, विधवा पुनर्विवाह योजना एवं पॉक्सो एक्ट के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर 34 महिला व पुरुष मौजूद रहे।

विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा ने किया महंगाई राहत कैंप का निरीक्षण

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण)। बाड़ी राज्य सरकार द्वारा 24 अप्रैल से चलाये जा रहे महंगाई राहत कैंप का गुरूवार को क्षेत्रीय विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा ने पंचायत समिति परिसर में लगाये गये महंगाई राहत कैंप का निरीक्षण किया और लोगों से सरकार द्वारा चलाये जा

रहे महंगाई राहत कैंप का फीडबैक लिया लोगों ने राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे कैंप की भूरि भूरि प्रशंसा की इस दौरान बाड़ी विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा ने कहा कि पंजीकरण कराने हेतु किसी भी प्रकार की जल्दबाजी न करें। सावधानी पूर्वक सही जानकारी देते हुए अपना रजिस्ट्रेशन कराएं और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ उठाएं और लोगों द्वारा योजनाओं के गांरटी कार्ड पाकर विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा और राज्य सरकार का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा, चैयरमेन प्रतिनिधि होतम सिंह जाटव ने, वाइस चेयरमैन अहमद जमा खां, अधिशाषी अधिकारी रामजीत सिंह, कनिष्ठ अभियंता योगेन्द्र सिंह, मुस्ताक अहमद वरिष्ठ पार्षद ओमवीर सिंह चौधरी, जसवंत सिंह, प्रवीण सिंघल, रोहित मंगल, विनोद शर्मा, हरेश भंडारी, डीईओ सुमित तिवारी, डीईओ तपेश बिधूडी, धर्मेन्द्र शिवहरे सहित अन्य गणमान्य नागरिक व लाभार्थी मौजूद रहे।

सोलहवां जाटव, बैरवा सामूहिक विवाह सम्मेलन करौली में आज

चमकता राजस्थान

करौली (रामदास तरूण)। जिला करौली के सुभाष नगर में 16वां जाटव, बैरवा सामूहिक विवाह सम्मेलन सम्मेलन 5 मई, 2023 शुक्रवार, बुद्ध पूर्णिमा पीपल पूर्णिमा को होगा आयोजित। आयोजन समिति से जुड़े अमृत लाल छाबड़ा ने बताया कि जाटव बेरवा, सामूहिक विवाह सम्मेलन में 13 जोड़ें परिणय सूत्र में बंधेंगे। सम्मेलन

के मुख्य अतिथि लाखन सिंह कटकट अध्यक्ष डांग विकास बोर्ड एवं विधायक करौली होंगे सम्मेलन के मुख्य संरक्षक भामाशाह हरिराम ठेकेदार होंगे संचालन कर्ता जाटव बेरवा सामूहिक विवाह सम्मेलन के मुख्य संरक्षक एवं संचालन कर्ता भामाशाह हट्टीराम ठेकेदार बखतपुरा बाले फरीदाबाद एवं विशिष्ट अतिथि शिमला देवी जिला प्रमुख, रशीदा खातून सभापति, रुखसार हाजी, समाजसेवी भामाशाह, रामनिवास मीणा, सूरज लाल जाटव रेल्वे ड्राइवर, उदय सिंह कला फिलिंग स्टेशन, दिनेश ठेकेदार भेरेट, हरि सिंह सरपंच काशीपुरा, रक्खी लाल बैरवा जिला प्रमुख प्रतिनिधि, राजाराम गुर्जर पूर्व सभापति, अशोक सिंह धावाई, अजय सिंह जाटव, मांगीलाल बैरवा, ओमप्रकाश चौधरी, शेर सिंह गुर्जर सरपंच गुडला, कल्लू मीना सरपंच बीजलपुर रहेगें।

शिक्षा के क्षेत्र में विकास की गंगा बहा रही हैं

चमकता राजस्थान

सावर। केकड़ी विधायक डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार शिक्षा के क्षेत्र में कोई कमी नहीं रख रही हैं। शिक्षा के साथ-साथ प्रत्येक क्षेत्र में बिना कोई राजनीतिक व बिना कोई पक्षपात के क्षेत्र में प्रत्येक वर्ग के लोगों को समान समझ कर विकास के कार्य करवाए जा रहे हैं। विधायक शर्मा क्षेत्र के ग्राम नयागांव मालियान के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रमसा के तहत नवनिर्मित कक्षा-कक्षों व सदारी में अन्य विकास कार्यों के लोकार्पण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि केकड़ी विधानसभा क्षेत्र में शिक्षा के क्षेत्र में विकास की गंगा बह रही हैं। सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए बालिकाओं सहित अन्य सभी छात्र छात्राओं के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चला रखी हैं। क्षेत्र के प्रत्येक गावों में सरकारी स्कूलों में अध्ययन के लिए छात्र-छात्राओं के बैठने की व्यवस्था को लेकर कमरों सहित हॉल का निर्माण कार्य तेज गति से करवाए जा रहे हैं। स्कूलों में प्रयोगशाला लैब, कम्प्यूटर लैब व विज्ञान लैब स्थापित की जा रही हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कांग्रेस नेता राजेन्द्र भट्ट ने कहा कि केकड़ी विधायक डॉ. शर्मा के प्रयासों से क्षेत्र में शिक्षा के साथ-साथ हर वर्ग में विकास के कार्य करवाकर जनता को राहत पहुंचाई जा रही हैं।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद पूर्व कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष शैलेंद्र सिंह शक्तावत ने कहा कि कांग्रेस सरकार शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, आवागमन सहित सभी क्षेत्र में सही काम कर रही हैं। विकास कार्यों के लोकार्पण समारोह में पहुंचने पर विधायक शर्मा का सरपंच रेखा देवी मीणा, कांग्रेस नेता आशाराम मीणा, महावीर गुर्जर सदारी सहित ग्रामीणों ने साफा बंधवा व माल्यार्पण कर अभिनंदन किया। विधायक शर्मा ने फीता काटकर विकास कार्यों का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में ग्रामीणों ने स्कूल में रिक्त पदों को भरने, स्कूल में नए कमरे बनाने सहित अनेक समस्याओं से अवगत कराया। जिस पर विधायक शर्मा ने कार्रवाई का भरोसा दिया। कार्यक्रम में उपखंड अधिकारी विकास पंचोली, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सावर, विकास अधिकारी सीताराम मीणा, तहसीलदार रामराय मीणा सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

निर्यात गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सीरी के साथ अनुबंध किया जाएगा : राजीव अरोड़ा

चमकता राजस्थान

जयपुर। राज्य में इलेक्ट्रॉनिक्स, जैम्स एण्ड ज्वैलरी, आई.टी. एवं सॉफ्टवेयर टैक्नोलॉजी, दुग्ध उत्पाद एवं शहद के निर्यात संवर्द्धन हेतु गुणवत्ता सुधार के क्षेत्र में आज दिनांक 01-05-2023 को Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI) के प्रमुख वैज्ञानिक श्री सांई कृष्णा एवं डॉ विजय चटर्जी वरिष्ठ वैज्ञानिक ने राजस्थान लघु उद्योग निगम एवं राजस्थान निर्यात संवर्द्धन परिषद् (REPC) के अध्यक्ष श्री राजीव अरोड़ा से मुलाकात की।

सीरी के वैज्ञानिकों ने अवगत कराया कि उनके पास देश की सर्वश्रेष्ठ तकनीकी उपलब्ध है जिसका लाभ राज्य सरकार वि यहाँ के निर्यातक उठा सकते हैं और सीरी के साथ समन्वय स्थापित करते हुए राज्य में निर्यात प्रोत्साहन में योगदान किया जा सकता है। विचार विमर्श के दौरान यह जानकारी प्राप्त हुई कि जयपुर में लैब ग्रोन डायमण्ड के निर्माण की अपार सम्भावनाऐं है। वर्तमान में सोने के साथ-साथ लोग चॉदी में भी डायमण्ड का उपयोग करने लगे हैं। सीरी के प्रमुख वैज्ञानिकों द्वारा डायमण्ड के अन्य औद्योगिक उपयोगों के बारे में भी विचार विमर्श किया। प्रमुख वैज्ञानिक श्री सांई कृष्णा द्वारा इस क्रम में राजीव अरोड़ा से मुलाकात करते हुए इस क्रम में CEERI एवं REPC के मध्य एक एम.ओ.यू. करने की इच्छा जाहिर की।

राजीव अरोड़ा चेयरमैन REPC द्वारा इस मुकालात को अत्यन्त लाभकारी बनाने हेतु CEERI एवं REPC के साथ MoU हस्ताक्षर करने एवं CEERI को भी राज्य में गुणवत्ता वृद्धि हेतु आवश्यक आधारभूत सुविधांए सम्बन्धित कलस्टर्स में ही उपलब्ध कराने हेतु आश्वासन दिया। अरोड़ा द्वारा CEERI को इस सम्बन्ध में शीघ्र उनका प्रस्तावित एम ओ यू एवं भावी कार्ययोजना तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये।

अजमेर में महावीर द्वारा गर्मियों में पक्षियों के पानी हेतु परिंडों का वितरण आना सागर लिंक रोड चौपाटी पर किया गया

चमकता राजस्थान

अजमेर। के संरक्षक कमल गंगवाल ने बताया कि इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल के तीन केंद्र अजयमेरु पद्मावती व स्पर्श के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहे। इस हेतु काफी संख्या मे लोगो ने परिंडे ले कर संकल्प लिया की इस गर्मी मैं पक्षियों को इन परिंडों के माध्यम से जल की व्यवस्था करेंगे। आज दो पहिया व चार पहिया वाहन चालकों ने रुक रुक कर परिंडे लिए और सभी ने इस धार्मिक व सामाजिक कार्य की प्रसंशा व अनुमोदना की।

इस अवसर पर चैयरपर्सन पद्मावती की मीना शर्मा व स्पर्श की उषा जैन ने बताया कि पूरी गर्मियों मैं अलग अलग स्थानों पर समय समय पर परिंडे वितरित किये जायेंगे। आज इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अजमेर नगर निगम के उप महापौर नीरज जैन ने इस अवसर पर कहा कि जीव सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है। उन्होंने कहा कि महावीर इंटरनॅशनल द्वारा अहिंसा व जीव सेवा का सबसे बड़ा कार्य किया जा रहा है आगे भी यह संस्था कार्य करती रहे इसी हेतु सभी को बधाई दी

अजयमेरु केन्द्र के संरक्षक अशोक छाजेड़ व पद्मावती चैयरपर्सन मीना शर्मा ने बताया कि आगामी दिनों मैं जयपुर के एक अस्पताल की विशेषज्ञ टीम अजमेर आएगी इनके माध्यम से एक विशाल मेडिकल जांच व चिकित्सा कैम्प का आयोजन होने जा रहा है इस हेतु डॉक्टर की टीम से सम्पर्क कर इसकी रूप रेखा तैयार की जा रही है।

निक्की जैन ने जानकारी देते हुए कहा कि संस्था द्वारा आगे भी सामाजिक सरोकार के तहत कई सेवा कार्य आयोजित किये जायेंगे। आज इस मौके पर मुख्य अतिथि उप महापौर नीरज जैन लायंस क्लब पृथ्वीराज के राजेन्द्र गांधी व आभा गांधी, संरक्षक अशोक छाजेड़ कमल गंगवाल, चेयर पर्सन मीना शर्मा -उषा जैन, उपाध्यक्ष राजकुमार गर्ग, सेक्रेटरी विजय पांड्या- निकिता पंचोली-निकिता जैन, निक्की जैन, लता माथुर, मोना जैन समस्त पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित थे।

अग्रवाल समाज की तीन दिवसीय महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर आदि स्थानों की धार्मिक यात्रा आज से

चमकता राजस्थान

अजमेर। अग्रवाल समाज अजमेर की और से श्री महाकालेश्वर, ओँकारेश्वर ज्योतिर्लिंग आदि धार्मिक व दर्शनीय स्थलों की यात्रा का कार्यक्रम 3 मई बुधवार से 5 मई शुक्रवार तक रखा गया है इस यात्रा में अग्रवाल समाज के 100 यात्री 2 बस व 1 कार के माध्यम से मंगलवार रात्रि को अजमेर से उज्जैन के लिए रवाना हो गये। अग्रवाल समाज अजमेर के अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल व महासचिव सतीश बंसल ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इस यात्रा को लेकर समाज बंधुओं में काफी उत्साह का माहौल है तथा अनेक समाज बंधु व मातृशक्ति इस यात्रा में शामिल होना चाहते थे परंतु व्यवस्था की दृष्टि से सिर्फ 100 समाज बंधुओं व महिलाओं को ही इस यात्रा में सम्मिलित किया गया है, अग्रवाल व बंसल ने बताया कि इस यात्रा के सफल आयोजन के लिये संस्था के निवर्तमान अध्यक्ष शैलेंद्र अग्रवाल को इस यात्रा का मुख्य संयोजक व जंवरीलाल बंसल, कैलाशचंद अग्रवाल, दिनेश जैन गोयल तथा अगम प्रसाद मित्तल को यात्रा संयोजक बनाय गया है, इसी प्रकार शिव शंकर अग्रवाल, चंद्रनारायण अग्रवाल, एस के मित्तल व विनोद अग्रवाल को बस प्रभारी की जिम्मेदारी दी गयी है। यात्रा के मुख्य संयोजक शैलेंद्र अग्रवाल ने यात्रा कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इस यात्रा के लिये दो 2*2 एसी बस की व्यवस्था की गयी है जो मंगलवार रात्रि को अग्रवाल पाठशाला भवन से उज्जैन के लिए रवाना हो गयी, सभी यात्री 3 मई बुधवार को प्रात: उज्जैन पंहुच जायेंगे जहाँ महाकालेश्वर भक्त निवास में सभी के आवास की व्यवस्था की गयी है इस दिन दिन भर महाकालेश्वर व उज्जैन के प्रमुख स्थानों के दर्शन व भ्रमण करेंगे तथा रात्रि विश्राम यहीं कर 4 मई गुरुवार को प्रात: ओंकारेश्वर के लिए प्रस्थान करेंगे जहाँ ओँकारेश्वर व अन्य स्थानों के दर्शन कर रात्रि में पुन: उज्जैन आ जायेंगे। संस्था अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल, महासचिव सतीश बंसल व यात्रा मुख्य शैलेंद्र अग्रवाल ने बताया कि 5 मई शुक्रवार को प्रात: उज्जैन से पशुपतिनाथ मन्दिर (मंदसौर) के लिए प्रस्थान करेंगे तथा पशुपतिनाथ के दर्शन करने के बाद सांवरिया सेठ (चित्तौड़) आदि स्थानों के दर्शन करते हुए 5 मई शुक्रवार की रात्रि में पुन: अजमेर आ जायेंगे। इस यात्रा को सफल बनाने में संस्था अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल, महासचिव सतीश बंसल, कोषाध्यक्ष दिनेश प्रणामी, यात्रा मुख्य संयोजक शैलेंद्र अग्रवाल, संयोजक गण जंवरीलाल बंसल, कैलाशचंद अग्रवाल, दिनेश जैन गोयल, अगम प्रसाद मित्तल सहित अन्य पदाधिकारी सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

भारतीय मानक क्लब की कार्यशाला एवं क्विज प्रतियोगिता सम्पन्न

अजमेर। दौसा जिले के ब्लाक सिकराय के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में भारतीय मानक ब्यूरो के परिचय कार्य क्षेत्र जनचेतना एवं उपभोक्ता अधिकारों के संरक्षण इत्यादि की जानकारी विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया कार्यशाला में प्रधानाचार्य सोहन लाल बेरवा उप प्रधानाचार्य बाबूलाल मीणा मुख्य तकनीकी संदर्भ व्यक्ति प्रियव्रत शर्मा, यदुनाथ शर्मा, बृजेश गौतम समेत सभी शिक्षक एवं विज्ञान के प्रतिभागी विद्यार्थियों ने भाग लिया।

यार्ड रिमॉडलिंग कार्य के कारण रेल यातायात प्रभावित, रेल सेवाएं मार्ग परिवर्तित रहेगी

चमकता राजस्थान

अजमेर। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा रायपुर मण्डल के रायपुर स्टेषन पर दोहरीकरण कार्य हेतु यार्ड रिमॉडलिंग कार्य किया जा रहा है। इस कार्य हेतु रेल यातायात प्रभावित रहेगा। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार उपरोक्त कार्य के कारण उत्तर पश्चिम रेलवे पर संचालित निम्न रेलसेवाएं मार्ग परिवर्तित रहेगी :-

1. गाडी संख्या 18214, अजमेर-दुर्ग रेलसेवा जो दिनांक 08.05.23 को अजमेर से प्रस्थान करेगी वह रेलसेवा रायपुर स्टेशन के स्थान पर परिवर्तित मार्ग उरकुरा-सरोना बाईपास होकर संचालित होगी।
2. गाडी संख्या 20823, पुरी-अजमेर रेलसेवा जो दिनांक 08.05.23 को पुरी से प्रस्थान करेगी वह रेलसेवा रायपुर स्टेशन के स्थान पर परिवर्तित मार्ग सम्बलपुर- झारसुगुडा रोड-बिलासपुर एवं उरकुरा-सरोना बाईपास होकर संचालित होगी।

वार्षिक हिंदी कैलेंडर का विमोचन

चमकता राजस्थान

जोधपुर। विद्या भारती एवं प्रबंध समिति आदर्श विद्या मंदिर द्वारा संचालित आदर्श विद्या मंदिर सूरसागर में आज वार्षिक हिंदी कैलेंडर का विमोचन हुआ विद्यालय का नव पंचांग 2023 विमोचन में सचिव मिश्रीलाल प्रजापति कोषाध्यक्ष अशोक गहलोत व्यवस्थापक हरीश

लोहिया विद्यालय समिति के अध्यक्ष राकेश परिहार एवं समस्त स्थानीय उप समिति के सदस्य आचार्य उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य तेन सिंह सांखला ने बताया कि इस पंचांग में समस्त उत्सव जयंतिया एवं विद्यालय के कार्यक्रम स्थानीय दिवस अंकित है। वर्षभर इसी पंचांग के अनुसार विद्यालय में कार्यक्रम बनाए जाते हैं।

गगलिया जिला नागौर में निर्मम हत्या के खिलाफ ज्ञापन

चमकता राजस्थान

जोधपुर। भृगुवंशी ब्राह्मण महासभा एवं भृगुवंशीय ब्राह्मण कर्मचारी अधिकारी कल्याणकारी संस्था राजस्थान जोधपुर के सयुक्त तत्वाधान में श्रीमान मुख्य मंत्री महोदय के नाम अतिरिक्त जिला कलेक्टर महोदय को नटवर भार्गव एवं संदीप जोशी, नृसिंह भार्गव के

नेतृत्व में एक ज्ञापन दिया गया। डेह जिला नागौर निवासी सुमित कुमार भार्गव पुत्र ओम प्रकाश भार्गव की गिंगालिया गांव में अपराधिक तत्वों द्वारा निर्मम हत्या कर दी गई थी। जिसका संगठन कड़े शब्दो में निंदा एवं भर्त्सना करता हैं। साथ ही संगठन मांग करता हैं कि हत्यारों को फांसी की सजा हो। मृतक की पत्नी को सरकारी नौकरी। मृतक की पत्नी को उचित आर्थिक मुवाजादा दिलाए। प्रतिनिधि मंडल में नटवर भार्गव, नृसिंह भार्गव,संदीप जोशी गंगाराम जोशी, रानीदान भार्गव, नरेंद्र जोशी, अमन जोशी,अनील, आदि उपस्थित थे।

नावां नगरपालिका व श्यामगढ़ में मंहगाई राहत कैम्प का उपमुख्य सचेतक ने किया अवलोकन

उपमुख्य सचेतक महेंद्र चौधरी ने वितरित किए मुख्यमंत्री गारंटी कार्ड, गारंटी कार्ड पाकर खिले ग्रामीणों के चेहरे

चमकता राजस्थान

नावांसिटी (कानाराम प्रजापति)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की पहल पर आमजन को महंगाई से राहत देने के लिए आयोजित किए जा रहे महंगाई राहत कैम्पों को लेकर आमजन में 2 मई को भी भारी उत्साह रहा। इस दौरान नावां नगरपालिका व ग्राम पंचायत श्यामगढ़ सहित जिले के सभी कैम्पों में भारी भीड़ रही। महंगाई राहत

कैम्पों के अंतर्गत 2 मई को जिले में 10 जन कल्याणकारी योजनाओं के संबंधित गारंटी कार्ड वितरित किए गए। वही नावां विधायक व उपमुख्य सचेतक महेंद्र चौधरी ने आज मंगलवार को नावां नगरपालिका व ग्राम पंचायत श्यामगढ़ में मंहगाई राहत कैम्पों का अवलोकन किया। भारी संख्या में शहरवासियों सहित ग्रामीणों ने अपना पंजीकरण करवाया। वही जिला कलक्टर पीयूष समारिया ने बताया कि मंगलवार को जिले में महंगाई राहत कैम्पों का आयोजन किया गया। जिसमें 100 स्थाई राहत कैम्पों के साथ-साथ ग्राम पंचायतों एवं नगरीय वार्डो में राहत शिविर आयोजित किए गए। उन्होंने बताया कि जिले में 100 स्थाई महंगाई राहत कैम्प जिला प्रशासन द्वारा राजकीय कार्यालयों और सार्वजनिक स्थलों पर लगाए जा रहे हैं। प्रत्येक ग्राम पंचायत में प्रशासन गांवों के संग अभियान तथा प्रत्येक नगरीय वार्ड में प्रशासन शहरों के संग अभियान के साथ 2 दिवसीय महंगाई राहत कैम्प का आयोजन हो रहा है। इस प्रकार जिले की कुल 494 ग्राम पंचायतों एवं 523 वार्डों में कैलेण्डर के अनुसार 2 दिवसीय कैम्पों का आयोजन होगा। इन कैम्पों में रजिस्ट्रेशन एवं मुख्यमंत्री गारंटी कार्ड वितरण के लिए पर्याप्त काउंटर लगाए गए हैं। गौरतलब है कि इन कैम्पों का आयोजन 30 जून तक किया जाएगा।

उदयपुर में हिस्ट्रीशीटर के हाईवे स्थित होटल पर चला बुलडोजर

चमकता राजस्थान

उदयपुर 4 मई। जिले में थाना सुखेर के हिस्ट्रीशीटर किशन मेनारिया के हाईवे नंबर 8 स्थित रेस्टोरेंट के अवैध हिस्से पर थाना पुलिस और एनएचएआई की टीम ने अवैध अतिक्रमण वाले हिस्से को जेसीबी से ध्वस्त कर दिया।

एसपी विकास शर्मा ने बताया कि हिस्ट्रीशीटर किशन मेनारिया व उसके साथी हिस्ट्रीशीटर दीपक मेनारिया को कुछ समय पहले सुखेर थाना पुलिस द्वारा राजसमंद जिले के केलवा थाना क्षेत्र में अपहरण के मामले में अवैध हथियार समेत गिरफ्तार किया था। इस कार्रवाई के दौरान बदमाशों और सुखेर पुलिस टीम के बीच फायरिंग हुई। बदमाशों और सुखेर पुलिस की गाड़ी के आमने-सामने हुई टक्कर में दोनों के चोटे भी आई थी। फिलहाल दोनों हिस्ट्रीशीटर अभी राजसमंद जेल में बंद है।

एसपी शर्मा ने बताया कि जिले में हिस्ट्रीशीटर, हार्डकोर व बदमाशों की अवैध प्रोपर्टी व अतिक्रमण को ध्वस्त करने के निर्देश पर थानाधिकारी सुखेर संजय शर्मा को बीट कॉस्टेबल से सुचना मिली कि हिस्ट्रीशीटर किशन मेनारिया व उसके परिजनों ने राजमार्ग संख्या 8 के कुछ हिस्से पर अतिक्रमण करके कृष्णा रेस्टोरेंट नाम से ढाबा बना रखा है। इस पर एनएचएआई से इस जमीन रेस्टोरेंट का मार्गाधिकार सीमाज्ञान करने हेतु थाने से पत्राचार किया गया। एनएचएआई की टीम को साथ लेकर नाप करवाने पर राजमार्ग पर अतिक्रमण होने से एसपी विकास शर्मा के निर्देशन में एसएचओ संजय शर्मा मय टीम ने एनएचएआई की टीम को साथ लेकर हिस्ट्रीशीटर किशन मेनारिया के रेस्टोरेंट के अवैध अतिक्रमण वाले हिस्से को जेसीबी से ध्वस्त करवाया। एसपी शर्मा ने बताया कि उदयपुर पुलिस इस तरह के मामलों में ऐसी कार्यवाही अभियान के रूप मे निरंतर जारी रखेगी।

ज्योतिषों को समाज में व्याप्त रूढ़िवाद व अंधविश्वासों से भी मुक्ति का प्रयास करना चाहिये -राजीव अरोड़ा

चमकता राजस्थान

एस्ट्रोलाइट स्पिचुअल राजस्थान एकडेमी जयपुर (आसरा) द्वारा तृतीय अखिल भारतीय ज्योतिष महासेमिनार का आयोजन जयपुर में 3 से 4 मई को सम्पन्न हुआ। राजस्थान लघु उद्योग निगम के अध्यक्ष और कांग्रेस नेता राजीव अरोड़ा इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर सम्पूर्ण देश और प्रदेश से ज्योतिष विद्या के विद्वत जनों ने अपना सम्बोधन दिया।

राजीव अरोड़ा ने कहा कि भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत प्राचीन और गूढ़ क्षेत्र हस्तरेखा शास्त्र महत्वपूर्ण एक महत्वपूर्ण विषय है। ज्योतिष शास्त्र ने भारत के प्राचीन विज्ञान को समृद्ध बनाया है। यह आवश्यक है कि आज देश की वर्तमान पीढ़ी को हम अपने स्वर्णिम इतिहास के बारे में बताएं। हजारों वर्ष पहले के हमारे नक्षत्र विज्ञान और खगोल विज्ञान का महत्व आज भी बहुत प्रासंगिक है। फसलों की बुवाई का सही समय पता लगाने के लिए, ज्योतिष, सूर्य ग्रहण-चंद्र ग्रहण सहित अनेक घटनाओं की सही सही जानकारी हमें हमारे प्राचीन ग्रंथों से मिलती है। हमारे वेदों में अनेक प्राकृतिक घटनाओं जैसे कि सितारों और ग्रहों की गति, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी के बारे में सटीक जानकारी मिलती है।

वेद और भारतीय संस्कृति को प्रामाणिक बताते हुए राजीव अरोड़ा ने कहा कि हमें अपने वेद, अपनी संस्कृति, शास्त्र और विज्ञान को गहराई से समझकर इनका सम्मान करना चाहिए, लेकिन इसी के साथ समाज में जो भ्रांतियाँ और कुप्रथाएं हैं, उनका विरोध भी करना चाहिए। आसरा के संस्थापक रमेश गुरु कुमावत ने पधारे समस्त ज्योतिषशास्त्रियों, अतिथियों एवं नागरिकों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

नगरीय विकास मंत्री से अल्पसंख्यक बालक छात्रावास भवन के निशुल्क भूमि आवंटन के लिए मिला प्रतिनिधि मंडल

चमकता राजस्थान

जयपुर, 4 मई। नगरीय विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल से गुरुवार को अल्पसंख्यक छात्रावास के लिए निशुल्क भूमि आवंटन के लिए एक प्रतिनिधिमंडल आवासन आयुक्त श्री पवन अरोड़ा, विधायक अमीन कागजी की उपस्थिति में मिला और आवंटन के लिए ज्ञापन सौंपा।

नगरीय मंत्री के राजकीय आवास पर मुलाकात के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने नगरीय विकास मंत्री से बजट घोषणा के अनुसार निशुल्क भूमि आवंटन के लिए आग्रह किया। नगरीय विकास मंत्री ने कहा कि जल्द ही आवंटन पत्र प्रतिनिधिमंडल को सौंप दिया जाएगा।

प्रतिनिधिमंडल की मांग थी कि छात्रावास के भवन निर्माण का कार्य राजस्थान आवासन मंडल द्वारा करवाया जाए। इस पर मंत्री ने आश्वस्त करते हुए कहा कि यदि अल्पसंख्यक विभाग मंडल को निर्धारित राशि स्थानांतरित कर प्रस्ताव भेजता है तो मंडल निर्माण कार्य करवा देगा।

गौरतलब है कि अल्पसंख्यक मामलात एवं वक्फ विभाग अल्पसंख्यक बालक छात्रावास भवन के लिए प्रताप नगर, आवासीय योजना जयपुर के सेक्टर-3 विस्तार स्थित 5 हजार वर्ग मीटर भूमि निशुल्क आवंटन करने की मांग कर रहा है।

इस अवसर पर अल्पसंख्यक मामलात विभाग के निदेशक श्री जमील कुरैशी, अब्दुल सलाम जौहर, श्री हाफिज मंजूर खान, श्री नजीमुद्दीन, श्री शब्बीर खान कारपेंट, श्री अनवर शाह, श्री शौकत कुरैशी सहित कई गणमान्य उपस्थित रहे।

इंश्योरेंस क्लेम के लिए ट्रक को बेच थाने जाकर चोरी की दी रिपोर्ट, परिवादी समेत तीन गिरफ्तार, इंजन-चेचिस व अन्य पुर्जे बरामद

चमकता राजस्थान

दौसा 4 मई। थाना सलेमपुर निवासी एक व्यक्ति ने पहले तो खुद ही अपना ट्रक कबाड़ी को बेच दिया, बाद में इंश्योरेंस क्लेम पाने के लिए थाने में झूठी रिपोर्ट दर्ज कराई। जांच में खुलासा होने पर पुलिस ने शिकायत कर्ता समेत साजिश में सहयोग करने वाले और ट्रक को काटकर खुर्द बुर्द करने वाले हिण्डौन निवासी दो और अभियुक्तों को गिरफ्तार कर ट्रक के इंजन, चेचिस, टायर, केबिन व अन्य कटे हुए पार्ट्स बरामद किए हैं।

एसपी संजीव नैन ने बताया कि पावटा थाना सलेमपुर निवासी पवन गुर्जर द्वारा थाने में दर्ज कराई गई शिकायत के अनुसार उसने अपने रिश्तेदार छोटू राम गुर्जर के घर के सामने 24 अप्रैल की रात ट्रक खड़ा किया था। अगले दिन सुबह जाकर देखा तो ट्रक वहां नहीं था। अज्ञात चोर ट्रक चोरी कर ले गए, जिसमें गाड़ी के सभी ओरिजिनल कागजात भी रखे थे। रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज किया गया।

ट्रक चोरी की वारदात के खुलासे के लिए एचपी लालचंद कायल वह सो बृजेश सिंह के सुपरविजन एवं एसएचओ अजीत सिंह के नेतृत्व में थाना सलेमपुर से विशेष टीम गठित की गई टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण कर सीसीटीवी फुटेज चेक किए। एफआईआर से भिन्नता पाए जाने पर परिवादी से पूछताछ की तो उसने बैंक से लिया लोन चुकाने के लिए इंश्योरेंस क्लेम पानी साथी रफीक, पिंटू और गनी से मिल झूंठी रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

इस पर पुलिस ने परिवादी पवन गुर्जर (33) निवासी पावटा थाना सलेमपुर समेत साजिश रचने और ट्रक को खुर्दबुर्द करने के आरोपी के पिंटू खान (44) निवासी थाना नई मंडी हिंडौन तथा गनी खान (45) निवासी थाना कोतवाली हिंडौन जिला करौली को गिरफ्तार कर लिया, एक अन्य मुलजिम रफीक की तलाश जारी है।

नेक्सस सेलेक्ट ट्रस्ट का आईपीओ मंगलवार, 9 मई, 2023 को खुलेगा

प्राइस बैंड ₹95 प्रति यूनिट से ₹100 प्रति यूनिट के बीच तय

चमकता राजस्थान

राष्ट्रीय, 5 मई, 2023: 17 सर्वोत्तम कोटि के ग्रेड ए अर्बन कंजप्शन सेंटर, 2पूरक होटल परिसंपत्तियों और तीन कार्यालयीय परिसंपत्तियों सहित भारत के कंजप्शन सेंटर्स के सबसे बड़े पोर्टफोलियो (स्रोत: सीबीआरई रिपोर्ट, पूरे किए गए क्षेत्र के अनुसार) पर मालिकाना हक रखने वाले, नेक्सस सेलेक्ट ट्रस्ट ने कुल 32,000.00 मिलियन रुपये तक प्रति यूनिट के नकद मूल्य पर यूनिट्स का आईपीओ मंगलवार, 9मई, 2023 खोलने का प्रस्ताव दिया है। विम्फोर्ड इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड (ब्लैकस्टोन फंड्स की पोर्टफोलियो कंपनी), नेक्सस सेलेक्ट ट्रस्ट का स्पॉन्सर है और नेक्सस सेलेक्ट मॉल मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड, मैनेजर है। एक्सिस ट्रस्टी सर्विसेज लिमिटेड, नेक्सस सेलेक्ट ट्रस्ट का ट्रस्टी अर्थात न्यासी है।

इस आईपीओ में कुल 14,000.00 मिलियन रुपये तक की यूनिट्स का नया इश्यू ("फ्रेश इश्यू") और विक्रेता यूनिटधारकों के कुल 18,000.00 मिलियन रुपये तक की यूनिट्स का ऑफर फॉर सेल ("ऑफर फॉर सेल" और नए इश्यू को मिलाकर "ऑफर") शामिल है।

ऑफर का प्राइस बैंड 95 रुपये प्रति यूनिट से 100 रुपये प्रति यूनिट तय किया गया है। बोली/ऑफर गुरुवार, 11 मई, 2023 को बंद होगा। एंकर निवेशक की बोली/ऑफर की अवधि बोली/ऑफर खुलने की तारीख से एक कार्य दिवस पहले; यानी सोमवार, 8 मई, 2023को होगी।

ब्लैकस्टोन के एशिया पैसिफिक के चेयरमैन और रियल इस्टेट एशिया के हेड, क्रिस हेडी ने कहा: "हमें भारत के पहले खुदरा-केंद्रित रिट, नेक्सस सिलेक्ट ट्रस्ट को लॉन्च करने की खुशी है। यह भारत के प्रति ब्लैकस्टोन की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है, जहां हमने 15वर्षों से भी अधिक समय में अपनी उपस्थिति मजबूत बनाई है और इसके पहले दो रिट के लॉन्च में भाग लिया है।"

नेक्सस सेलेक्ट मॉल मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, दलीप सहगल ने कहा: "नेक्सस सिलेक्ट ट्रस्ट भारत का सबसे बड़ा मॉल प्लेटफॉर्म है और भारत के अनूठे खपत अनुकूल वातावरण का लाभ उठाने के लिए सशक्त है। हमें भारत की खुदरा यात्रा में सबसे आगे रहने की बेहद प्रसन्नता है।"

ऑफर के बुक रनिंग लीड मैनेजर्स में बोफा सिक्योरिटीज इंडिया लिमिटेड, एक्सिस कैपिटल लिमिटेड, सिटीग्रुप ग्लोबल मार्केट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, एचएसबीसी सिक्योरिटीज एंड कैपिटल मार्केट्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, आईआईएफएल सिक्योरिटीज लिमिटेड, जेएम फाइनेंशियल लिमिटेड, जे. पी. मॉर्गन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोटक महिंद्रा कैपिटल कंपनी लिमिटेड, मॉर्गन स्टेनली इंडिया कंपनी प्राइवेट लिमिटेड और एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड शामिल हैं।

शुक्रवार को जवाहर कला केन्द्र में होगा आर्गेनिक फूड फेस्टिवल का आयोजन

जयपुरवासी 5 से 7 मई तक आर्गेनिक लजीज व्यंजनों का लुत्फ उठा सकेंगे

चमकता राजस्थान

जयपुर, 4 मई। जवाहर कला केन्द्र के शिल्प ग्राम में 5 से 7 मई, 2023 तक आर्गेनिक फूड फेस्टिवल का आयोजन किया जाएगा। सहकारिता विभाग द्वारा पहली बार यह आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में करीब 50 स्टॉल्स लगाई जाएगी। जिन पर आर्गेनिक उत्पादों का प्रदर्शन एवं बिक्री की जाएगी साथ ही मौके पर ही तैयार किये गये आर्गेनिक लजीज व्यंजन का भी आनंद ले सकेंगे। महाप्रबंधक, कॉनफैड श्री राजेन्द्र सिंह ने बताया कि शुक्रवार सायं 6 बजे से आर्गेनिक फूड फेस्टिवल की शुरूआत की जायेगी। फूड फेस्टिवल में जैविक खाद्य पदार्थ, आर्गेनिक मसाले, आर्गेनिक गुलाब व आंवला के उत्पाद, जैविक सब्जियां एवं शहद, श्रीअन्न (मोटा अनाज) उत्पाद, जैविक डेयरी उत्पाद, वन उत्पाद एवं जैविक हर्बल उत्पाद विभिन्न स्टॉल्स पर बिक्री, प्रदर्शन एवं उत्पादों की रेसिपी तैयार कर उपलब्ध कराई जायेगी। मसाला मेलें में खरीददारों की उमड़ी भीड़ उन्होंने बताया कि जवाहर कला केन्द्र में 7 मई तक आयोजित हो रहे राष्ट्रीय सहकार मसाला मेलें में सातवें दिन भी खरीददारों का हुजूम उमड़ा। मेलें में अब तक करीब 1 करोड़ 20 लाख रूपये के मसालों एवं उत्पादों की बिक्री हुई है। सहकारिता के उपभोक्ता भंडारों जैसे कोटा, उदयपुर, राजसमंद, नागौर, जोधपुर, भरतपुर, अजमेर, बीकानेर, बारां, जैसलमेर के द्वारा क्षेत्र विशेष में उत्पादित हो रहे खाद्यान्न एवं मसाले उचित मूल्य पर उपलब्ध कराये जा रहे है।श्री सिंह ने बताया कि भीलवाड़ा उपभोक्ता भंडार पर 20 प्रकार के आचार उपलब्ध कराये जा रहे है। जिनमें प्रमुख रूप से केरी, नींबू का मीठा आचार, आमछुन्दा, लहसुन, केर सांगरी, केर गुन्दा, हरी मिर्च, गुन्दा, हल्दी सहित अन्य प्रकार के आचार अलग-अलग रेसिपी में उपलब्ध कराये जा रहे है। वहीं मेलें में नागौर की कसूरी मैथी, जोधपुर एवं जैसलमेर की स्टॉल्स पर केर सांगरी, भरतपुर की स्टॉल्स पर पंछी का पेठा, दालमोठ, भुसावार का आचार, हींग, उपभोक्ताओं द्वारा विशेष रूप से पसंद की जा रही है। मेलें में भरतपुर संभाग की ओर से ब्रज कार्यक्रम के तहत फूलों की होली, मयूर नृत्य का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

प्रधानमंत्री के खिलाफ राहत शिविरों में चलाए भाषण प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने राज्यपाल को लिखा पत्र

प्रधानमंत्री के खिलाफ राहत शिविरों में चलाए भाषण प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने राज्यपाल को लिखा पत्र

चमकता राजस्थान

जयपुर, 04 मई 2023। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने दौसा में पंचायत समिति परिसर में आयोजित राहत शिविर में टीवी स्क्रीन पर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ चलाये गए विडियो पर आपत्ति जताते हुए राज्यपाल को पत्र लिखकर प्रशासनिक अधिकारियों एंव कांग्रेसी जनप्रतिनिधियों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए मुख्यमंत्री को निर्देशित करने की मांग की है।

प्रदेशाध्यक्ष जोशी ने कहा कि जनता द्वारा चुने गए देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री के खिलाफ गहलोत सरकार के इशारे पर अधिकारियों द्वारा किया गया कृत्य ना केवल अनैतिक है, बल्कि लोकसेवक के दायित्वों का भी उल्लंघन है। प्रदेश में राहत कैंप के नाम से भाजपा विरोधी मुहिम चलाई जा रही है। महंगाई राहत शिविर के नाम पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में गहलोत सरकार द्वारा आमजन को गुमराह किया जा रहा है। प्रदेशभर में करीब दो सप्ताह से मंत्रालयिक कर्मचारियों की हडताल के चलते सरकारी कामकाज ठप्प है, वहीं सरकार आमजन को राहत देने की बात कह रही है। बिना कर्मचारियों की उपस्थिति के शिविरों में कामकाज कैसे संभव है।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने कहा कि महंगाई राहत शिविर गहलोत सरकार का प्रोपेगेंडा है। प्रदेश की गहलोत सरकार को जनविरोधी सरकार होने का आरोप लगाया। आगामी विधानसभा चुनाव में लाभ के लिए सरकारी पैसे का दुरूपयोग करने की बात कही। शिविरों में राहत के नाम पर सरकारी मशीनरी का बेजा इस्तेमाल किया जा रहा है। ग्रामीण जनता सुबह आठ बजे भूखी प्यासी शिविरों में आती है, लेकिन शिविर में अधिकारी और कर्मचारी नदारद मिलते हैं। वहीं शिविरों में कंप्यूटर सुविधा और बिजली तक उपलब्ध नहीं हैं।

जिला परिषद, अजमेर वार्ड 12 के उपचुनाव को लेकर सांसद भागीरथ चौधरी के सानिध्य में किया जनसंपर्क जिला भाजपा महामंत्री= वेद प्रकाश दाधीच

चमकता राजस्थान किशनपाल/ शंकर लाल शर्मा

अजमेर जिला भाजपा महामंत्री वेद प्रकाश दाधीच ने अवगत कराया कि आज जिला देहात भाजपा अध्यक्ष देवीशंकर भूतड़ा के साथ अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी ने जनसंपर्क अभियान अन्तर्गत आज मसूदा क्षेत्र के बस्सी, धोलादाता, रागपुरा, देवमाली, केलू में भाजपा प्रत्याशी थैली जी गुर्जर के पक्ष में प्रचार कर आमजन मतदाताओ से भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील की। जनसम्पर्क के दौरान देहात जिलाध्यक्ष श्री देवीशंकर जी भूतड़ा, पूर्व जिलाध्यक्ष श्री नवीन जी शर्मा, विधानसभा समन्वयक श्री वीरेन्द्र सिंह जी कानावत, रामगढ़ मण्डल अध्यक्ष श्री प्रभुलाल जी चौधरी, श्रीमती मुकेश कँवर जी सहित पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं ग्रामवासी उपस्थित रहे। जनसंपर्क अभियान के पश्चातसंसदीय क्षेत्र के नसीराबाद, डबरेला, सोयला, मोतीपुरा, सिरोंज, रारी, मोहनपुरा, खातौली, निम्बार्क तीर्थ, सिणगारा, करकेडी, दरडूण्ड, हरमाड़ा, न्यू हाऊसिंग बोर्ड, खोड़ा गणेश रोड़, सांवतसरमेंबागड़ी,इनानिया,कागट,खाचरिया, घिटाला, फामडा,सांखला, पुबानीया, रणवां,कुंवा,नेतड, नुवाद,मीढ़,वर्मा, राजोरा,राठौड़ परिवार के वैवाहिक कार्यक्रमों में उपस्थित हुआ, परिवारजनों की खुशियों में सम्मिलित हो कर शुभकामनाएं प्रेषित की।

अधिवक्ता के ऑफिस कार्यों में गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए वेब पोर्टल लॉन्चिंग कार्यक्रम!

चमकता राजस्थान

द डिस्ट्रिक्ट एडवोकेटएडवोकेट बार एसोसिएशन महासचिव गजराज सिंह राजावत ने बताया कि अधिवक्ता के ऑफिस कार्यों में गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए मैसर्स नारायणी जूरिक्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा वेब पोर्टल लॉन्चिंग का कार्यक्रम आज को द डिस्ट्रिक्ट एडवोकेट्स बार एसोसिएशन जयपुर के ऊपर हॉल में रखा गया ! जिसमें मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त उत्तर सिंह नेहरा व जिला कलेक्टर प्रकाश राजपुरोहित थे! साथ ही राजस्थान हाई कोर्ट बार एसोसिएशन जयपुर के पूर्व महासचिव श्री गिर्राज प्रसाद जी शर्मा द्वारा अधिवक्ताओं के लिए नई एलईडी से प्रेम भेंट की गई है जिसका लोकार्पण किया गया! मुख्य अतिथि गण द्वारा राजस्थान सरकार के महंगाई राहत कैंप की एक ब्रांच का उद्घाटन डिस्टिक बार कार्यालय में किया जो लगातार वकीलों के लिए चलती रहेगी! गजराज सिंह राजावत महासचिव द डिस्ट्रिक्ट एडवोकेट बार एसोसिएशन जयपुर

बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ अभियान के तहत धोद के संयोजक व सह संयोजक नियुक्त

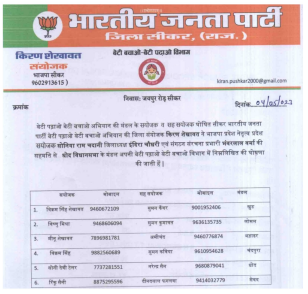

चमकता राजस्थान

सीकर भारतीय जनता पार्टी बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ अभियान की जिला संयोजक किरण शेखावत ने भाजपा प्रदेश नेतृत्व प्रदेश संयोजक सोनिया रामचंदानी भाजपा जिला अध्यक्ष इंदिरा चौधरी एवं संगठन संरचना प्रभारी भंवर लाल वर्मा की सहमति से धोद विधानसभा के मंडल अपनी बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ अभियान में संयोजक एवं सहसंयोजक की नियुक्ति की है जिला संयोजक किरण शेखावत ने बताया कि अभियान को गति देने के उद्देश्य से विक्रम सिंह शेखावत संयोजक सुमन कंवर सहसंयोजक खूड़ विष्णु मिश्रा संयोजक सुमन कुमावत सहसंयोजक लोसल मीनू शेखावत संयोजक अमीचंद सहसंयोजक भडाडर विक्रम सिंह संयोजक सुमन कविया सहसंयोजक चंदपुरा सोनी देवी ट्रेलर संयोजक नरेंद्र सेन सहसंयोजक धोद रिंकू सैनी संयोजक दीनदयाल फगलवा सहसंयोजक सेवद को नियुक्त किया गया है

प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

चमकता राजस्थान। सुनेल। (धीरज गुप्ता)।

कस्बे के विद्या भारती द्वारा संचालित आदर्श विद्या मंदिर में गुरूवार को प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैलाशचंद शर्मा कंपाउंडर थे। अध्यक्षता मनीष सोनी ने की और विशिष्ठ अतिथि पशु चिकित्सक परमानंद पाटीदार,जसवंत पाटीदार, श्रीराम सुमन, सुनील दुबे, सेमला के बलवीर ने की। प्रधानाचार्य राजकुमार शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर पूरे सत्र भर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले और वार्षिकोत्सव परीक्षा में प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थीयों को अतिथियों द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया। अतिथियों द्वारा पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थीयों को सम्बोन्धित करते हुए कहा कि हम जीवन की हर प्रतियोगिता में लगन और मेहनत से भाग लेते हुए आगे बढ़ते रहें और अपने माता-पिता व गुरूजनों का नाम रोशन करें। अभिभावकों द्वारा विद्यालय विकास के लिए कई तरह आर्थिक घोषणाएं भी की गई। परीक्षा प्रभारी रोहित कुमार सेन ने विद्यालय के वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अभिभावकों और मातृशक्ति ने भाग लिया। विद्यालय प्रभारी प्रभूलाल सेन अतिथियों का माला पहनाकर स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य जोरावर सिंह आंजना ने किया।

इको ब्रिक्स एवं पर्यावरण संरक्षण सेमिनार आयोजित किया

विशाल अकादमी ने लगाए पक्षियों के लिए परिंडे

चमकता राजस्थान

चित्तौड़गढ़। शहरों और गांवों को प्लास्टिक (पॉलिथीन) के जहर से बचाने के लिए लिए विशाल अकादमी विद्यालय ने बेकार पॉलिथीन एवं प्लास्टिक के उन्मूलन के लिए सेमिनार आयोजित किया, जिसमे "अपना संस्थान" की पदाधिकारी साधना जी ने इको ब्रिक्स बनाने की विधि बताई किस प्रकार हम दैनिक जीवन में उपयोगी प्लास्टिक और पॉलीथिन कचरे में फेकने के बजाए उसको इको ब्रिक्स का रूप देकर सौंदर्यकरण किया जा सकता तथा पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताया। सेमिनार के पश्चात विद्यालय स्टाफ एवं विधार्थियों ने पक्षियों के लिए परिंडे लगाए। विद्यालय की प्रधानाचार्या सरोज कुमावत ने सभी विद्यार्थियों को परिंडे वितरित कर अपने घरों और वृक्षों पर परिंडे लगाने के लिए प्रेरित किया।

मोतियाबिंद ऑपरेशन के बाद डीडी नेत्र संस्थान की डॉक्टर ने की आंखों की जांच

चमकता राजस्थान , किशनगंज 4 मई कस्बे में गत 27 अप्रैल को सीनियर हायर सेकेंडरी स्कूल परिसर में आयोजित हुए निशुल्क नेत्र जांच एवं मोतियाबिंद शिविर में चयन किए गए 27 नेत्र मरीजों के मोतियाबिंद ऑपरेशन के बाद गुरुवार को सभी ऑपरेशन के मरीजों की नेत्र के डॉक्टर द्वारा आंखों की जांच की गई।एसटी एससी परिसंघ के ब्लॉक अध्यक्ष मदनलाल शाक्यवाल व समाजसेवी दूरदर्शी जैन एवं संजय राठौर ने बताया कि अनुसूचित जाति जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय संगठन ब्लॉक एसटी एससी परिसंघ एवं डी डी नेत्र सेवा फाउंडेशन के तत्वधान में 27 अप्रैल को कस्बे के सीनियर स्कूल में नेत्र जांच एवं मोतियाबिंद शिविर का आयोजन किया गया था।इस शिविर में 172 मरीजों की नेत्र की जांच कर 32 मरीजों को मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए चिन्हित किया गया था,जिसमें 27 मरीजों का कोटा डीडी नेत्र चिकित्सालय में ऑपरेशन किया गया था।गुरुवार 4 मई को डीडी नेत्र सेवा फाउंडेशन की ओर से ऑपरेशन किए गए मरीजों की कोटा डी डी नेत्र संस्थान से आई नेत्र के डॉक्टर मनदीप कौर ने सभी मरीजों की आंखों की जांच कर निशुल्क दवाइयां दी गई और सभी नेत्र ऑपरेशन के आंखों के मरीजों को आंखों की सुरक्षा के लिए उपाय बताए गए।डॉ मनदीप कौर ने मरीजों को बताया कि सभी को धूप से बचाव करना,आंखों में ऊपर से पानी का छिड़काव नहीं करना,आंखों पर ज्यादा जोर नहीं देना,भारी काम नहीं करना एवं धूप में नही घूमने की सलाह दी गई।साथ ही आगामी 18 मई को पुनः आखों की जांच कराने के लिए अवगत करवाया गया।

किशनगंज के सुवांस ग्राम पंचायत में दो दिवसीय महंगाई राहत एवं प्रशासन गांव के संग शिविर क्षेत्रीय विधायक निर्मला सहरिया के आतिथ्य में संपन्न हुआ।

चमकता राजस्थान

किशनगंज तहसीलदार अभय राज सिंह ने बताया कि महंगाई राहत एवं प्रशासन गांव के संग शिविर के अंतर्गत बुधवार व गुरुवार को दो दिवसीय शिविर का गुरुवार को समापनकिया हुआ जिसमें 401 लोगों का रजिस्ट्रेशन एमआरसी किया गया, इस दो दिवसीय शिविर में लाभार्थियों की भीड़ लगी रही जिसके अंतर्गत राजस्व विभाग में नामांतरण के 30, खाता शुद्धि के 10 ससीमा ज्ञान के 23 ,नकली 150 ,जाति मूल प्रमाण पत्र 8 , चिकित्सा विभाग द्वारा 360 मरीजों को परामर्श जांच औषधि वितरण की गई और आयुर्वेदिक विभाग द्वारा भी 123 रोगियों को जांच व परामर्श औषधि वितरण की गई, पशुपालन विभाग में 115 पशुपालकों को सम्मानित किया, गया, ऊर्जा विभाग में 2 प्रकरण मकान से ऊपर से गुजर रही लाइन हठाने के दर्ज किए गए, कृषि विभाग द्वारा राज किसान सुविधा एप से किसानों को लाभान्वित किया गया ,सहकारिता विभाग में 121 किसको को अल्पकालीन फसली ऋण के बारे में जानकारी दी गई, जलदाय विभाग में एक हेड पंप की मरम्मत की गई। इस शिविर में क्षेत्रीय विधायक निर्मला सहरिया किशनगंज ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजीज नाजा ,, नवल मीणा विकास अधिकारी कार्यवाहक ,टीकम शाक्य द्वारा शिविर आए लोगों के 10 जनकल्याणकारी योजनाओं में रजिस्ट्रेशन करा कर लोगों को लाभान्वित किया गया एवं मौके पर ही मुख्यमंत्री गारंटी कार्ड दिए गए

भाजपा नेता ने गांव-गांव जाकर सुनी लोगों की समस्याएं

चमकता राजस्थान ब्यूरो चीफ दीपचंद शर्मा

कामां, पहाड़ी भाजपा नेता शकील खान ने गुरवार को विधानसभा क्षेत्र के दौरे के दौरान कस्वां कामां, शेखपुरा, गोपालगढ़, छपरा, गंगोरा का दौरा किया। दौरे के दौरान भाजपा नेता ने अपने कोसी रोड स्थित निज-निवास एवं कार्यालय पर जनसुनवाई कर लोगों की समस्याएं सुनी एवं भाजपा सरकार बनने पर हर समस्या का समाधान करने का आश्वासन दिया। भाजपा नेता को कस्वां गोपालगढ़, गांव छपरा, गंगोरा में चौपालों का आयोजन कर लोगों की मूलभूत समस्याएं जैसी पीने का शुद्ध पानी, रोड़ों को बुरी स्थिति जैसी समस्या के बारें में ग्रामीणों ने अवगत कराया एवं साथ ही ग्रामीणों द्वारा भाजपा नेता का माला-साफा पहनाकर जोरदार एवं भव्य स्वागत किया गया। भाजपा नेता ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि विधानसभा के अधिकांश गाँवो के रोड़ों की स्थिति इतनी ज्यादा खराब है कि इंसान पैदल भी नहीं निकल सकता एवं प्रत्येक गांव में पीने के शुद्ध पानी की बहुत ज्यादा गंभीर समस्या है जिसका निस्तारण भाजपा सरकार बनने पर किया जायेगा और पूरी विधानसभा के लिए हर समस्या का समाधान किया जायेगा जिसकी जनता मांग करेंगी। भाजपा नेता इसके साथ ही अपने विधानसभा के लिए लिए गए 11 संकल्पों के बारे में अवगत कराया। दौरे के दौरान भाजपा नेता के साथ सलीम जी , आसिफ जी, सुमित जी, सद्दाम जी एवं ग्रामीण साथ रहे।

गृहे गृहे गायत्री यज्ञ उपासना कार्यक्रम आज - तैयारियां पूर्ण

चमकता राजस्थान ब्यूरो चीफ दीपचंद शर्मा

भरतपुर, गायत्री परिवार की ओर से 5 मई को गृहे गृहे गायत्री यज्ञ उपासना 2023 घर घर में सुबह 8 से 12 बजे तक मनाने की तैयारियां पूर्ण हो चुकी है गायत्री परिवार के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ युगऋषि गुरूदेव पंडित श्री राम शर्मा आचार्य का जन्मोत्सव बुद्ध पूर्णिमा को आध्यामित्क दिवस के रुप में मनाया जा रहा है । गायत्री परिवार के सक्रिय सदस्य जगदीश प्रसाद अरोडा ने बताया कि गृहे गृहे गायत्री यज्ञ उपासना अभियान इस बार बडे पैमाने पर मनाया जा रहा है इसके तहत भरतपुर जिले में करीब ग्यारह हजार से अधिक घरों में यज्ञ हवन मंत्र जाप का आयोजन होगा यह कार्यक्रम सुबह 8 से 12 बजे तक चलेगा जिसमे करीब 12 लाख से अधिक मंत्रो का एक साथ जाप होगा । श्री अरोडा ने बताया कि गायत्री परिवार ट्रस्ट की ओर से घर घर पम्पलेट वितरित किए गए है जिसमें पूजा सामग्री शुद्धिकरण पवित्रीकरण आचमन तिलक कलावा पृथ्वी पूजन कलश पूजन अग्नि स्थापना आज्याहुति गायत्री मंत्रआहुति स्वष्टिकृत होम पूर्णाहुति वसोधारा महा मृत्युन्जय मंत्र आहुति आरती घुतावघ्राणम भस्मधारण प्रणाम एवं शुभकामना क्षमा प्रार्थना शांति अभिषिचनं विर्सजनम के वारे में विस्तार से उल्लेख किया गया है । परिवार के सक्रिय सदस्य जगदीश प्रसाद अरोडा ने बताया कि घर घर संपर्क करने के दौरान पूर्ण आहुति के रुप में बुद्ध पूर्णिमा को प्रत्येक घर से एक एक पौधा लगाने और रक्तदान अंगदान करने का आब्हान किया गया है ।भरतपुर किला स्थित गायत्री तपोभूमि परिसर में भी हवन यज्ञ व मंत्र जाप का कार्यक्रम भव्य होगा ।

कांग्रेस के साढे चार साल के कुशासन से आमजन त्रस्तः सीपी जोशी

कांग्रेस के साढे चार साल के कुशासन से आमजन त्रस्तः सीपी जोशी

चमकता राजस्थान

जयपुर, 04 मई 2023। भारतीय जनता पार्टी द्वारा सवाईमाधोपुर में आयोजित जनाक्रोश महासभा को भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी, नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड, प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच, सांसद सुखबीर सिंह जौनपुरिया, प्रदेश मंत्री जितेंद्र गोठवाल, श्रवण सिह बगडी सहित जिलाध्यक्ष सुशील दीक्षित ने जनआक्रोश महासभा को संबोधित किया, जिसके उपरांत जिला कलेक्टर को बिगड़ती हुए कानून व्यवस्था, पेपर लीक, कुशासन, भ्रष्टाचार को लेकर ज्ञापन सौंपा।

सभा को संबोधित करते हुए प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने कांग्रेस की पूर्व अध्यक्षा सोनिया गांधी पर आतंकियों का साथ देने का आरोप लगाते हुए कर्नाटक में उनके द्वारा दिए गए भाषण का हवाला दिया। सोनिया गांधी कर्नाटक में कहती हैं कि बजरंग दल पर प्रतिबंध लगा देंगे अगर सोनिया गांधी में दम है तो राजस्थान में बजरंग दल पर प्रतिबंध लगा कर के दिखाए उन्हे मालूम चलेगा कि हनुमानजी के भक्तों वाले बजरंग दल में कितनी ताकत है। यदि ऐसा किया तो ना सिर्फ राजस्थान वरन संपूर्ण भारतवर्ष से कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो जाएगा।

सीपी जोशी ने कहा कि कांग्रेस की गहलोत सरकार ने राजस्थान को साढे चार वर्ष में खोखला कर के रख दिया है। कांग्रेस पार्टी जयपुर बम ब्लास्ट जैसे वीभत्स और संगीन अपराध में शामिल अपराधियों को पनाह देती है, बम ब्लास्ट मामले में कांग्रेस सरकार ने आतंकवादियों की खुलकर पैरवी की है, उसी के चलते सभी आरोपी बरी हो गए। सोनिया गांधी आतंकवादियों के मरने पर आंसू बहाती है, लेकिन जयपुर बम ब्लास्ट में मारे गए हनुमान भक्तों के मरने पर भी सोनिया गांधी की आंखो में आंसू नहीं आए।

जोशी ने आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी पीएफआई जैसे आतंकी संगठनों को बढ़ावा देकर हिंदुओं की आस्था से जुड़े त्योहारो रामनवमी, हिंदू नव वर्ष पर प्रतिबंध लगाती है। इन कृत्यों से यह स्पष्ट है कि कांग्रेस हिंदू विरोधी सरकार है जो कि जय श्रीराम के नारे लगाने वाले लोगों पर मुकदमे दर्ज करवाती है।

जोशी ने अपने संबोधन में सवाई माधोपुर की धरती से संपूर्ण राजस्थान की जनता को याद दिलाते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी सत्ता में आने से पहले झूंठे वादे करती है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी मंच से 10 तक की गिनती गिनकर 10 दिन में किसानों का कर्जा माफ करने की बात कहते हैं, लेकिन साढे चार साल बीतने के बाद भी किसानों का कर्जा आज तक माफ नहीं हुआ कर्ज से परेशान किसानों ने आत्महत्या की जिसके जिम्मेदार निश्चित रूप से कांग्रेस सरकार है। गहलोत सरकार ने युवाओं के साथ वादाखिलाफी की है, सत्ता में आने से पहले कांग्रेस पार्टी ने युवाओं से बेरोजगारी भत्ता देंने का वादा किया था। कांग्रेस सरकार को 2023 के विधानसभा चुनाव में सभी कार्यकर्ता और जनता निश्चित ही उखाड़ फेंकेगी।

नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैने मेरे राजनैतिक जीवन में कभी इतना भ्रष्टाचार नहीं देखा, उन्होने सवाई माधोपुर नगर परिषद सभापति को एसीबी द्वारा रंगे हाथों पकड़ने की बात कहते हुए जेल से लौटकर पुनः कार्यभार ग्रहण करने को प्रदेश में सबसे बड़ा भ्रष्टाचार माना। महिलाओं पर हो रहे अत्याचार और दुष्कर्म की घटनाओं से प्रदेश की जनता में रोष। साढे चार साल में कांग्रेस सरकार ने वीर भूमि राजस्थान को दयनीय स्थिति में लाकर रख दिया है।